देवराज सुराणा अध्यक्ष

अभयराज नाहर मन्त्री

श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय
मेवाड़ी बाजार :: ब्यावर (राज.)

मुद्रक
श्री भँवरलाल शर्मा
गजानन्द प्रिंटिंग प्रेस
शाह मार्केट
ब्यावर (राजस्थान)

❀ भूमिका ❀

मोटरकार रेल, तीव्रगामी जेट विमान एवं वायु सदृश गति से अन्तरिक्ष मे पृथ्वी एव अन्य ग्रहों की परिक्रमा करने वाले राकेटों के इस युग में निरन्तर पदविहार करते रहने की जैन-मुनियों की परम्परा अत्यन्त विलक्षण है। अपने नियम एव व्रतों के अनुसार वे एक स्थान पर अधिक समय नहीं ठहर सकते एवं आवागमन के लिए किसी वाहन का उपयोग करना भी उनके लिए वर्जित है। सर्वदा भ्रमण करते रहने से किसी विशिष्ट स्थान एव व्यक्तियों का ममत्व-भाव अंकुरित नहीं होता जिससे उनकी आध्यात्मिक एव विराग की साधना अबाधित रहती है और उनका जीवन किन्हीं सीमाओं में बन्धा न रह कर सार्वजनिक हित एव दिशा निर्देश के लिए होता है।

आज के इस 'यन्त्र-युग' में मानव ने मशीनों को इतना अधिक अपना लिया है कि वह उसके जीवन एव अस्तित्व का एक अविभाज्य अग ही बन गई हैं। उसे पल-पल में प्रत्येक कार्य में मशीनों पर अवलम्बित रहना पडता है जिसके फल-स्वरूप वह निरन्तर पराधीन होता चला जा रहा है। वर्तमान स्थिति में स्वय मानव को ही एक चलती फिरती मशीन ही कहा जाय तो तनिक भी अत्युक्ति न होगा। सृष्टि के सहज प्राकृतिक सौन्दर्य से वह कितना दूर चला जा रहा है इसकी उसे कल्पना तक नहीं है। हमारे भारत देश में जो देवों का क्रीड़ा स्थली कहा जाता है स्वर्ग लोक सदृश अवर्णनीय अनन्त सौन्दर्य बिखरा पड़ा है, जिससे आज का यन्त्रीकृत मानव निपट अपरिचित है। एक ओर जहा विशाल गिरिशिखर, कल कल

करती सरिताएं हरे भरे वृक्ष नेत्रों को सुखदायी होते हैं दूसरी ओर वे हमें जगत के मोह ममत्व से दूर रह कर एकान्त साधना एवं विराग का सन्देश देते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों और महात्माओं ने जन समूह के कोलाहल से दूर रह कर ही विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया था जिसका पावन प्रकाश वे समय समय पर जगत में फैलाते रहे। यह परम्परा जैन मुनियों के आहार विहार में आज तक चली आ रही है और यह निस्सन्देह स्तुत्य है। निरन्तर पैदल विहार करने रहने से जैन-मुनि जन संसार से भी पूर्ण परिचित रहते हैं जहां अनन्त प्राकृतिक सौन्दर्य और शान्ति सदैव विद्यमान रहती है तथा जिसे साधारण सांसारिक व्यक्ति नहीं पा सकता।

प्रस्तुत पुस्तक पं० मुनि श्री हीरालालजी म० के यात्रा संस्मरण का चित्र उपस्थित करती है। हम लोग आवागमन के इतने साधन उपयोग करते हुए भी भारतवर्ष के कई प्रमुख नगरों से भी अपरिचित रहते हैं पर इन मुनि ने पैदल विहार करते हुए समस्त भारत वर्ष और नेपाल तक का भ्रमण किया है जिसकी कल्पना भी कठिन मालूम होती है। जो अनुभव ज्ञान आम मुनि जी ने इतने लम्बे समय में और अनेक कष्ट उठा कर प्राप्त किये वे हम सहज ही कुछ थोड़े से समय में घर बैठ ही यह पुस्तक पढ़ कर प्राप्त कर सकते हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि ज्ञान पिपासु पाठक इस पुस्तक का समुचित आदर करेंगे।

प्रकाशक इस उपयोगी पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

राजस्थान त्रिपुर गेट
जयपुर

—विज्ञानचन्द्र भारिल्ल
(साहित्यरत्न बी० कॉम० सी०ए०)

❀ विषय सूची ❀

१.

बंगाल

卐

रविन्द्रनाथ ने जिस प्रदेश की प्रशस्ति करते हुए कहा— "सोनार बागला देश" वह सचमुच सोने का ही देश है। जहा के लोग तीक्ष्ण बुद्धि, प्रतिभाशान और श्रमनिष्ठ हैं, वह प्रदेश भला सोने का प्रदेश क्यों न कहलाए? सुभाष जैसे वीर देश भक्त, जगदीश वसु जैसे वैज्ञानिक, श्री अरविन्द जैसे योगी, शरचन्द्र, बंकिमचन्द्र और रविन्द्रनाथ जैसे साहित्यकार, नन्दबाबू जैसे कलाकार और चैतन्य महाप्रभु जैसे ऐतिहासिक पुरुषों को जो धरती पैदा कर सकती है, वह धरती सोना उगलने वाली धरती कहलाए, तो क्या आश्चर्य? इसी बंगाल प्रदेश में वि० सम्वत् २०१२ ईस्वी सन् १९५५ का चातुर्मास व्यतीत करके हमने महसूस किया कि बंगाल सचमुच सोने का बंगाल है।

कलकत्ता के पोलक स्ट्रीट में बना हुआ भव्य स्थानक कलकत्ते की जैन समाज के गौरव का प्रतीक है। यद्यपि एक युग था, जब बंगाल प्रदेश में जैन धर्म सर्वाधिक प्रचलित धर्म था पर मध्य युग में बंगाल से जैन धर्म का करीब करीब लोप ही हो गया। अब कल-

कत्ता अथवा अन्य नगरों में राजस्थान गुजरात सौराष्ट्र आदि प्रान्तों के जैन धर्मानुयायी बहुत बड़ी संख्या में व्यापार करते हैं और बहुत लोग तो यहां पर ही बस गये हैं।

सन् १९५४ का चातुर्मास कलकत्ता में बिताकर राजस्थान के लिए हमने प्रस्थान किया। भीनासर में होने वाले बृहद् साधु सम्मेलन में शामिल होना था। अतः सत्वर गति से हम चल पड़े। करीब बारह सौ मील का लम्बा रास्ता पार करना था। बंगाल बिहार उत्तर प्रदेश और राजस्थान की धरती को लांघकर बीकानेर के मरुस्थल तक पैदल चलकर पहुँचना कोई आसान बात नहीं। *यान्त्रिक पंथ सम्य धरा* के अनुसार पद यात्रा करना आज के युग में जबकि रेल, मोटर और हवाई जहाज के आविष्कार ने पैदल चलने की परम्परा को ही समाप्त कर दिया है बहुत कठिन हो गया है। किन्तु जैन मुनियों ने तो अपना अखण्ड-व्रत पाद-विहार को माना है। पाद-विहार नितान्त उपयोगी और आवश्यक है इस बात को आज विनोबा और उनके सर्वोदयी साथियों ने भी स्वीकार कर लिया है तथा विनोबा ने कहा भी है कि जैन मुनियों से पद यात्रा का सबक सीखना चाहिए।

न केवल जैन साधु बल्कि जैन साध्वियां भी कठिन से कठिन मार्गों को पद यात्रा द्वारा ही पूरा करती हैं। फिर साधु-साध्वियों के कठिन नियमों का पालन भी साथ ही साथ करना पड़ता है, इसलिए कहीं भोजन मिला कहीं नहीं मिला। रहने का स्थान भी कभी कभी बड़ी कठिनाई से मिलता है। कहीं मान, कहीं अपमान सबको सहते हुए साधुओं को चलना पड़ता है।

कलकत्ता महानगरी के श्रावक-समुदाय की भाव-भक्ति निरन्तर याद रहेगी। व्यापार में व्यस्त इस नगरी के श्रावकों में धर्म-ध्यान और

सेवा भाव के लिए जो अपरिमित उत्साह दिखाया, वह वर्णनातीत है।

भवानीपुर में जैन-स्थानक का अभाव था। इसलिए वहा पर लोगों ने मुनियों के उपदेश से प्रभावित होकर ३ लाख रुपये खर्च करके हंसराज लक्ष्मीचन्द कामाणी 'भव्य जैन भवन का निर्माण कराया। और मारवाड़ी स्थानकवासी जैन समाज ने महावीर जैन-हाई स्कूल की बिल्डिंग ५ लाख रुपये लगाकर तैयार करवाई।

वर्धमान और आसन सोल का मार्ग पकड़ कर हम चल पड़े। रास्ता हरा, भरा, धान की खेती से लहलहाता हुआ था। परिश्रमी किसान सवेरे से शाम तक खेत में अटूट श्रम से काम करते हैं। इन किसानों के बल पर ही सारे देश का अर्थ शास्त्र निर्भर करता है। यदि ये किसान खेतों में अन्न का उत्पादन न करें तो देश की हालत कैसी हो जाय, यह सहज कल्पना की जा सकती है। बंगाल में ज्यादातर चावल की ही खेती होती है। बंगालवासी बहु संख्या मे मत्स्याहारी होते हैं। "माछी भात" ही इनका प्रमुख खाद्य है। यहां के गावों में यह आम रिवाज है कि हर घर के सामने मछली पालने के लिए एक तालाब होता है। बेटी का बाप शादी करने से पहले यह देखता है कि सामने वाले के घर पर तालाब है या नहीं। बहुत से लोग मत्स्याहार को मांसाहार नहीं समझते। वे मासाहार से उसी तरह घृणा करते हैं, जिस तरह एक जैन या वैष्णव। पर मत्स्याहार में वे पाप नहीं मानते। ऐसे ही संस्कार बन गये हैं।

इस बगाल में, जिसकी यात्रा करते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं, विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों की भूमि है।जैसे शांति-निकेतन वेलूर मठ, सारगाछी, नवद्वीप धाम आदि। इन स्थानों में मानव के सांस्कृतिक विकास की प्रेरणाए मिलती है। विद्या, कला, भक्ति, सेवा और

इसी तरह के अन्य आरम्भाओं से संयुक्त जीवन का दर्शन हमें इन रचनाओं में मिलता है।

इसी तरह कुछ स्थान आधुनिक निर्माण और भौतिक विकास की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। जैसे चितरंजन का रेलवे कारखाना दुर्गापुर में दामोदर नदी का बांध आदि।

कलकत्ता से १७ मील पर श्री रामपुर में सेठ जयचन्दलालजी रामपुरिया का कपड़े का मील है जहां बाहिर मण्डपाल में एक हजार स्त्री पुरुषों ने कलकत्ता से आकर लाभ लिया, उनको प्रीति भोज सेठ ने दिया। कलकत्ता से वर्धमान ७१ मील है और वर्धमान से आसनसोल करीब ६४ मील। विभिन्न गांवों में रुकते हुए, जनता को धर्म संदेश देते हुए और आध्यात्मिक जीवन की सतत साधना करते हुए हमने बंगाल प्रदेश की यात्रा समाप्त की और बिहार में प्रवेश किया।

●●●●

२.

बिहार

卐

युग-प्रवर्तक भगवान महावीर और बुद्ध की तपोभूमि, बिहार सारे देश में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। जिस प्रदेश का चप्पा चप्पा इतिहास की रंगीन कथाओं से भरपूर है और जिस धरती का कण-कण महापुरुषों की पावन-चरण-रज से पवित्र है, उस बिहार प्रदेश की अलौकिकता का क्या वर्णन किया जाय।

जहां जैनशासन २४ तीर्थङ्करों में से २२ तीर्थङ्कर केवल एक ही स्थान से निर्वाण प्राप्त हुए, ऐसा सौभाग्यशाली सम्मेदशिखर पर्वत इसी बिहार में है। जहां, भगवान महावीर ने जन्म, उपदेश और निर्वाण का स्थान चुना, वह पवित्र वैशाली, राजगृह तथा पावा-पुरी भी इसी बिहार में है। जहां महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया, वह बोध गया भी इसी बिहार में है, जहां सम्राट अशोक जैसे महान सम्राट हुए, बौद्धधर्म का ज्ञानान्वेषण किया और सारे संसार को बुद्ध के उपदेशों का बोध दिया, वह पटना और नालंदा भी इसी बिहार में है। जहां कल-कल करती स्वच्छ सलिल धारा वाहिनी गंगा नदी बहती है, वह भू भाग भी इसी बिहार में है। जहां गांधीजी

ने किसान सत्याग्रह के द्वारा ऐतिहासिक आन्दोलन खड़ा किया वह चंपारण भी इसी बिहार में है जहाँ विद्यापति जैसे शृंगार-रस के कवि हुए, वह मिथिला भी इस बिहार का हिस्सा है और सन्त विनोबा को १९ लाख एकड़ भूमि का दान दिया वे दानी किसान भी इसी बिहार में हैं। और भी न जाने क्या क्या है इस बिहार में।

ऐसे सौभाग्यशाली प्रदेश में हमने प्रवेश किया। झरिया धनबाद और आसपास कोलियरी क्षेत्र में जैनधर्मानुयायियों की बहुत बड़ी संख्या है। कोयले के इस क्षेत्र में ये लोग कोयले से सोने का निर्माण करते हैं, ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं होगी इस क्षेत्र में साधुओं का आगमन नहीं के बराबर होता है अतः यहाँ के लोगों में भाव भक्ति बहुत है।

१ दिन झरिया रहकर हमने आगे प्रस्थान किया। जी० टी० रोड के राजमार्ग से हम चल रहे थे। सड़क बहुत अच्छी है। रास्ते में गाँव भी खूब मिलते हैं। बंगाल और बिहार दोनों ही प्रान्तों में गरीबी अत्यधिक है। वैसे तो सारा हिन्दुस्तान ही एक गरीब मुल्क है, पर कुछ अछूत कहलाने वाली जातियाँ तथा किसान वर्ग तो बहुत ही गरीब हैं। जिनके पास न जमीन है, न व्यापार है न उत्पादन का कोई अन्य साधन है न रहने का पर्याप्त मकान है उनका जीवन कैसे व्यतीत होता होगा इसकी कल्पना करते ही रोम रोम कंपित हो उठते हैं। इन देहाती आदिवासी, असभ्य लोगों को पूरा काम भी नहीं मिलता। काम मिलता है, उन दिनों में भी १ या २ सेर अनाज मजदूरी के रूप में मिलता है। इसमें वे खुद खावें या अपने बूढ़े-माँ-बाप को खिलावें या अपने बच्चों को खिलावें या दवा दारू करें या वस्त्र करें? ऐसी हालत में फंसे हुए इस देश का निर्माण कैसे करना है?

रास्ता घने जंगलों का है, बगोदर बरकठ्ठा बरही, चौपारन आदि गावों से हम गुजरे। ये सभी गाव घने जंगलों में बसे हुए हैं। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की चोटियों पर सुन्दर व सुहावने वृक्ष हैं। खूब जंगल है। निर्जन सुनसान झाड़ियों में से सांय सांय की आवाज आती है। कहीं जल स्रोत है, कहीं छोटी छोटी नदिया हैं, इस तरह प्राकृतिक सौन्दर्य चारों ओर मुक्त रूप से बिखरा हुआ है।

औरंगाबाद के पहले तक जंगल समाप्त हो जाते हैं। आगे डालमिया नगर होते हुए हमें उत्तर प्रदेश की सीमाओं में प्रविष्ट होना है। डालमिया नगर साहू शांतिप्रसादजी जैन का बहुत विशाल उद्योग प्रतिष्ठान है। साहूजी इस समय हिन्दुस्तान के गण्यमान्य उद्योगपतियों में से हैं, पर उनका जीवन अत्यन्त सात्विक, सरल और उदार है। उनके हृदय में जैनधर्म के प्रति अगाध आस्था है और वे जैन धर्म के प्रचार कार्य में खुले हृदय से आर्थिक और नैतिक योगदान देते हैं।

डालमिया नगर जैसे औद्योगिक प्रतिष्ठान आज की औद्योगिक क्रांति के युग में बहुत महत्व रखते हैं। क्योंकि आज समस्त संसार औद्योगीकरण की ओर बढता जा रहा है। केवल कृषि पर निर्भर रहने वाला देश ससार की तीव्र वैज्ञानिक गति के साथ कदम नहीं मिला सकता। अधिकाधिक उत्पादन के बिना गरीबी दूर नहीं हो सकती, इसलिए कपड़ा, लोहा, कागज, प्लास्टिक, विभिन्न धातुएँ तथा अन्य वैज्ञानिक उपकरणों के उत्पादन पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। हालाकि हिन्दुस्तान में कुछ ऐसे अर्थ शास्त्री हैं, जो

औद्योगिकरण के खिलाफ हैं पर उनकी संख्या अत्यंत नगण्य है। साम्यवाद समाजवाद तथा पूंजीवाद तीनों औद्योगिक क्रांति के माध्यम से ही अपनी अपनी मंजिल तक पहुँचना चाहते हैं। ऐसा कुछ हुआ वर्तमान में अनुभव में आ रहा है।

इस प्रकार बिहार प्रान्त की हमारी यात्रा पूरी हुई। वैसे अब हम कलकत्ता गये थे तभी अच्छी तरह से बिहार प्रान्त में विचरण किया था। पर अभी क्योंकि हमें भीनासर सम्मेलन में शामिल होना है एक हम सीधे रास्ते से और तेजी से हम राजस्थान की ओर बढ़ते जा रहे हैं। रास्ते में अधिक रुकते भी नहीं हैं और चक्कर का रास्ता भी नहीं लेते हैं।

• • • •

३.

उत्तर प्रदेश

卐

हर प्रान्त की अपनी अपनी ऐतिहासिक परम्परा होती है और उसी विशिष्ट गौरव के आधार पर नया इतिहास बनता है। बगाल एवं बिहार की भाँति ही उत्तर प्रदेश का अपना वैशिष्ट्य है। जैसे बिहार ने भगवान महावीर और बुद्ध को पैदा करने का श्रेय लिया, वैसे ही श्रीकृष्ण और श्री राम की जन्म भूमि गोकुल, मथुरा एव अयोध्या उत्तर प्रदेश में होने के कारण इन दोनों महापुरुषों को जन्म देने का श्रेय इस प्रदेश को है। अत यह मानना होगा कि सारी भारत भूमि एक है और किसी प्रदेश के महापुरुष सारे भारत के इससे भी बढ़कर सारे विश्व के थे। किन्तु अधिक निकटता की उपलक्षणा से तत तत प्रदेश के वैशिष्ट्य की गाथा गाई जाती है।

हम बनारस आये। यह शहर वाराणसी अथवा काशी के नाम से बहुत प्राचीन काल से संस्कृत विद्वानों की राजधानी रहा है। काशी में १२ वर्ष तक पढकर आये हुए किसी भी पंडित की धाक समाज पर आसानी से जम सकती थी। सत तुलसीदास की तपो भूमि यही बनारस है, जहा उन्होंने हिन्दुस्तान के सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रथ

रामचरितमानस की रचना की। सत्यवादी महाराज हरिश्चन्द्र की नगरी भी यही बनारस है जहां उन्होंने सत्य की रक्षा के लिए अपना सुख वैभव राज्य सब कुछ ठुकरा दिया। महात्मा बुद्ध की प्रथमोपदेश भूमि भी यही है। यहां सारनाथ में रहने वाले अपने शिष्यों के सामने बुद्ध ने धर्म-चक्र प्रवर्तन किया। और वाराणसी का सबसे ऊंचा गौरव यह है कि इसने भगवान पार्श्वनाथ की पावन-स्थली होने का श्रेय प्राप्त किया। हिन्दु विश्वविद्यालय और संस्कृत विश्व विद्यालय के कारण काशी आज भी पूर्व युग की भांति ही विद्या शिक्षा संस्कृति और कला की राजधानी है इसमें संदेह नहीं।

झरिया से बनारस २९३ मील चल कर और बनारस से ८८ मील चलकर हम इलाहाबाद आये हैं। पं० मोतीलाल नेहरू और प० जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय जैसे महान व्यक्तियों को देन देने वाला इलाहाबाद भी किससे कम है। बनारस यदि संस्कृत का गढ़ है तो इलाहाबाद हिन्दी का। महाकवि निराला सुमित्रानंदन पंत महादेवी वर्मा हरिवंशराय बच्चन' जैसे चोटी के हिन्दी कवि इलाहाबाद में ही रहते हैं। गंगा यमुना और सरस्वती का त्रिवेणी संगम इसी इलाहाबाद में है जहां लाखों नर नारी प्रतिवर्ष आकर स्नान करते हैं। यद्यपि बाह्य स्नान से आत्म-शुद्धि असंभव है फिर भी इन नदियों के तट पर आने के निमित्त से भारत-यात्रा तो हो ही जाती है।

इलाहाबाद से ११३ मील चल कर हम कानपुर पहुंचे। कानपुर में स्थानकवासी समाज के काफी घर हैं। सारा संघ बहुत भक्तिमान तथा श्रद्धावान है वि० सं २ १ के चातुर्मास में जिन्होंने मुनि श्री के उपदेश से प्रभावित होकर एकमंजी जैन भवन उपाश्रय के लिये निर्मित करवाया। यहां मुनिवर श्री प्रेमचन्दजी महाराज से

मिलाप हुआ। साधुओं के साथ इस तरह के मिलन नवीन प्रेरणा देने वाले होते हैं। कानपुर एक बड़ा औद्योगिक शहर है। चमड़े का, ऊन का, कपड़े का काफी बड़ा उद्योग यहां चलता है। जे० के० उद्योग प्रतिष्ठान, जो कि भारत के चोटी के उद्योग प्रतिष्ठानों में से एक है, का प्रधान केन्द्र भी कानपुर में ही है। कानपुर का एयर सेना केन्द्र भी अपने ढंग का अकेला ही है। यहां पर हवाई जहाजों की मरम्मत, निर्माण और प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

आजादी के आंदोलन के समय हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के पावन उद्देश्य से अपना बलिदान देने वाले कर्मठ देशसेवी और पत्रकार श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के कानपुर पहुँच कर बहुत संतोष हुआ। हमारा व प्रेमचंदजी मुनि का साथ-साथ विहार गांधी नगर हुआ। यहां लाला बुद्धसेनजी ने ७०० स्त्री पुरुषों को नास्ता करवाया।

कानपुर से १७२ मील चलकर हम मुगल-कालीन राजधानी आगरा आये। आगरा शहर तो बहुत संकरी गलियों का, गंदा और पुराने ढंग का ही है, पर ताजमहल ने आगरा को विश्व प्रसिद्ध कर दिया है। वैसे यहाँ का लाल किला और जुमा मस्जिद भी सुन्दर है और २५ मील पर फतेहपुरसीकरी भी इतिहास के विद्यार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है, पर ताजमहल की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। इसे विश्व के ७ आश्चर्यों में से एक माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि के दो कारण हैं, एक तो कलात्मक शिल्प और दूसरे में उसके निर्माण के पीछे प्रणय की कोमल भावना। किसी प्रेमी बादशाह ने अपने प्रणय पात्र के लिए ऐसी भव्य इमारत का निर्माण अब तक नहीं कराया। यमुना के किनारे दूध से धुले सफेद पत्थर की यह कृति शरद्पूर्णिमा के दिन तो सचमुच अद्भुत लगती होगी। ताजमहल देखने आने वालों की संख्या कभी कम नहीं होती।

आगरा मानपाड़ा में मुनिवर श्री श्यामलालजी महाराज से मिलाप हुआ और लोहा मंडी में मंत्री मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी म० से मिलाप हुआ।

उत्तर प्रदेश नगरों का प्रदेश है। जितने बड़े-बड़े नगर इस प्रान्त में हैं, उतने दूसरे प्रान्तों में शायद ही हों। आबादी की दृष्टि से भी संभवतः यही प्रदेश सबसे बड़ा है।

आगरा हमारे उत्तरप्रदेश प्रवास का अंतिम मुख्य शहर था। हम उधर लखनऊ की ओर न जा सके तथा इधर मथुरा वृन्दावन की ओर भी नहीं जा सके। समय भागा जा रहा है और भीनासर सम्मेलन की तारीखें निकट आ रही हैं। इसलिए श्रीकृष्ण की क्रीड़ा भूमि गोकुल मथुरा वृन्दावन सबको छोड़कर हम अब यहाँ से सीधे राजस्थान की ओर बढ़ रहे हैं।

•

४.

राजस्थान

卐

राजस्थान वीर भूमि है। इस प्रदेश के इतिहास का पन्ना-पन्ना वीरता से रगा हुआ है। जहा अन्यत्र साहित्य में भक्तिरस, शृङ्गार रस आदि का प्राधान्य है वहा राजस्थान के साहित्य में वीर रस ही प्रमुख है।

महाराणा प्रताप ने तो वीरता के चरमोत्कर्ष का नमूना दिखा दिया। जगलों में एकाकी भूखे भटकना तो उन्हें स्वीकार था, पर गुलामी और परतंत्रता की बेड़ियों में बंधना उन्होंने कदापि स्वीकार नहीं किया। आजादी के साथ घास की रोटी खाना उन्हें मजूर था, पर गुलाम होकर खीर-पूडी या मलाई खाने की बात को उन्होंने ठुकरा दिया। इस प्रकार आजादी के लिए सुख वैभव पर ठोकर मारकर जिस व्यक्ति ने अपने आपको बलिदान की वेदी पर चढ़ा दिया, उसके राजस्थान में प्रवेश करते समय सारा इतिहास सामने खड़ा हो जाता है।

जहा राजस्थान वीरों की भूमि है, वहा वह मीरा जैसी भक्त को पैदा करने का श्रेय भी धारण किए हुए है। हिन्दुस्तान की नारी

जाति का माथा गर्व से ऊंचा कर देने वाली मीरां बाई के गीतों ने राजस्थान को ही नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान को रस-सिक्त कर दिया है। मीरां के सामने विष का प्याला रखकर भगवद् भक्ति या राज्य सुख में से एक को चुन लेने का जब सवाल आया तो मीरां ने जीवन का मोह नहीं किया और न राज्य की आकांक्षा की बल्कि भगवद् भक्ति के मार्ग को अपनाकर विष का प्याला स्वीकार कर लिया।

राजस्थान में जैन-धर्म का जो विस्तार है, वह भी इस प्रदेश के लिए गौरव की बात है। आज हिन्दुस्तान में यदि जैन धर्म को सुरक्षित रखने का श्रेय किसी प्रदेश को है तो वह गुजरात और राजस्थान को ही है। इसलिए राजस्थान का महत्व किसी भी दृष्टि से कम नहीं है।

राजस्थान का हमारा पहला मुख्य पड़ाव भरतपुर में था। [illegible]तपुर एक सुन्दर नगरी है, जहां का राज्य पहले 'जाट' जाति के [illegible] में था। 'जाट मुख्य रूप से कृषि-कर्म करने वाले होते हैं। [illegible]पंजाब में और राजस्थान में जाट जाति का काफी प्रमुख [illegible] जाट ही चौधरी या पटेल भी कहलाते हैं। भरतपुर के महल [illegible] सुन्दर तथा ऐतिहासिक महत्त्व के हैं।

भरतपुर की एक विशाल सार्वजनिक सभा में मैंने लोगों को [illegible]त्मिक जीवन के आदर्श स्वीकार करने की प्रेरणा देते हुए कहा "आज सारे संसार की दौड़ भौतिक उन्नति की तरफ है। पर [illegible] भौतिक उन्नति से मनुष्य के मन में अतृप्ति असन्तोष और [illegible]समाधान ही जागृत होते हैं। मानव को यदि वास्तविक शान्ति [illegible]र सन्तोष चाहिए, तो आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा लेनी चाहिए। [illegible] अमेरिका जैसे भौतिक दृष्टि से सम्पन्न देश भी आज अशान्त और रक्त-युद्ध की आशंका से कांप रहे हैं।

भरतपुर से हम लोग जयपुर आए। यहा स्थिवर श्री ताराचन्दजी म०, मन्त्री श्री पुखराजजी म० चौड़े रास्ते के उपाश्रय में विराज रहे थे उनके दर्शन किये। जयपुर राजस्थान की राजधानी है और भारत के सुन्दरतम नगरों में से एक है। चौड़ी चौड़ी सड़कें, एक सरीखे मकान, जगह जगह बगीचे, इस प्रकार काफी सुन्दर शहर है यह, जयपुर। फिर अब तो राजधानी बन जाने के कारण खूब बढ भी रहा है। आज के जयपुर से १० वर्ष पहले के जयपुर की यदि तुलना की जाय, तो रात दिन का अन्तर दीख पड़ेगा।

जयपुर में दर्शनीय स्थान भी बहुत हैं। रामनिवास का बाग, म्युजिम, हवा महल, आमेर, जन्तर-मन्तर, गलता आदि स्थानों के कारण जयपुर भी एक पर्यटन-स्थल बन गया है।

सेठ अचलसिंह एम० पी० के नेतृत्व में दिल्ली से स्थानकवासी कान्फ्रेंस का एक शिष्ट मण्डल जयपुर में आया। शिष्ट मण्डल में कान्फ्रेंस के अनेक नेता और कार्यकर्ता थे। इनके आने का उद्देश्य था, जयपुर के प्रमुख श्रावक जवेरी विनयचन्द भाई को कान्फ्रेंस का अध्यक्ष बनाना। व्याख्यान में ही अध्यक्ष के चुनाव की कार्यवाही हुई।

हम लोगों ने जयपुर से नागौर की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में विभिन्न गावों में धर्मोपदेश करते हुए आम जनता को शराब, मास, तम्बाकू आदि व्यसनों से दूर रहने की प्रतिज्ञाए दिलाई। १६० मील का लम्बा विहार करके हम लोग नागौर पहुँचे। अब भीनासर ज्यादा दूर नहीं है। कहा कलकत्ता और कहा नागौर ? पर "हिम्मते मरदा मदद दे खुदा" वाली कहावत के अनुसार जब किसी भी काम के लिए कदम उठा लिया जाता है, तो वह पूरा होता

ही है। लोग कहते थे कि "महाराज, समय थोड़ा है रास्ता लम्बा है आपकी उम्र भी वृद्ध है।" पर हमने कहा कि "इन सब कारणों के बावजूद भीनासर-सम्मेलन का काम महत्त्वपूर्ण भी तो है। सामाजिक संगठन की दृष्टि से इस काम की सफलता सारे इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायगी। अतः किसी भी तरह थोड़ा कष्ट उठाकर भी हमें पहुँचना ही है।" आखिर अब हमारा यह स्वप्न पूरा होने को आया है।

नागौर से गोगेलाव मोड़ा मरुधर कवि श्री अमरचन्दजी के साथ रासीसर, देशनोक, उदरामसर आदि छोटे छोटे क्षेत्रों में होते हुए हम लोग बीकानेर आये। बीकानेर स्वामी प्रदेश की रियासती राज्य के समय राजधानी थी। इसके प्रान्त में अधिकतर तेरापंथियों की संख्या है। पर बीकानेर तथा भीनासर में स्थानकवासी आम्नाय के काफी घर हैं। इधर पूज्य जवाहिरलालजी महाराज ने श्रावक समुदाय में धर्म के प्रति गहरी निष्ठा जगाई थी। इन श्रावकों की विशेषता यह है कि ये कोरे श्रद्धावान श्रावक ही नहीं हैं बल्कि इनमें से बहुत से अधिक ज्ञानी भी हैं।

बीकानेर से हम उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म. आदि अनेक प्रतिष्ठित मुनियों के साथ भीनासर आ गये। साधु सम्मेलन तथा श्रावक-सम्मेलन का अभूतपूर्व दृश्य था। दूर दूर से आये हुए साधुओं के साथ परिचय मिलन चर्चा आदि में खूब आनन्द आया। जो कुछ सम्मेलन के निर्णय तथा परिणाम सामने आये वह सारे समाज के सामने रख ही दिया गया है। बिखरे हुए स्थानकवासी समाज को एक सूत्र में बांधने का ऐसा काम सचमुच युग की मांग के अनुसार हुआ। आज एकता के सूत्र में बन्धने का जमाना है। बिखरने का नहीं। अतः साधु स

क्रम

उठाया है, वह अपूर्व बुद्धिमता का परिचायक है। बिना इस तरह के संगठन के आने वाले युग में हम जनता को सही मार्ग दर्शन नहीं दे सकेंगे। "संघे शक्ति कलीयुगे" के अनुसार कलियुग में संघठन ही तीव्र शक्ति है।

श्रावक-समाज तो हजारों की संख्या में उमड़ पड़ा। ऐसी कल्पना भी नहीं थी कि समारोह का स्वरूप इतना शानदार होगा। गृह मन्त्री गोविन्दवल्लभ पन्त और इसके अलावा अनेक नेताओं ने उपस्थित होकर इस समारोह की शोभा बढाई। भीनासर सम्मेलन इतिहास की अद्भुत घटना बन गई। लोगों ने समारोह देखकर दांतों तले अंगुली दबा ली। स्थानकवासी समाज इतना व्यापक विशाल और सुदृढ है इसका भान इस सम्मेलन में हो गया।

भीनासर के साथ सा[illegible] यहां श्री

जैन स[illegible] [illegible]ना का

[illegible]वर्षीय

[illegible]वासी

बहुत मजबूत है। चातुर्मास बाद मेवा नगर (नाकोड़ा) जसोल गए सिवाना भाद्राजून जालोर तखतगढ़ होते हुए सादड़ी आये। वहाँ लौंकाशाह गुरुकुल अच्छे ढंग से चल रहा है। श्रावक संघ का अतीव आग्रह रहा कि आगामी चातुर्मास आप यहीं पर करें।

घाणेरा व सादड़ी से राणकपुर होते हुए उदयपुर आये। उदयपुर भव्य पहाड़ियों के बीच बसा हुआ, प्राकृतिक दृष्टि से अत्यंत रमणीय है। झीलों के बीच बने हुए राजमहल अपनी दिव्य शोभा के लिए सारे देश में प्रख्यात हैं। उदयपुर पहले मेवाड़ की राजधानी थी। अनेक तरह की सांस्कृतिक, शैक्षणिक और कलात्मक संस्थाओं के कारण उदयपुर ने काफी नाम कमाया है। माणिक्यलाल वर्मा मोहनलाल सुखाड़िया अमृतलाल, मीमांसी जैसे व्यक्ति उदयपुर की राजनैतिक देन हैं जो आज राजस्थान के व केन्द्र के राज्य संचालन में अपना योगदान दे रहे हैं। मेवाड़ी लोग धनी और मारवाड़ के लोगों की तरह धनी तो नहीं हैं पर बुद्धि परिश्रम आदि में वे किसी से पीछे नहीं हैं।

उदयपुर से चित्तौड़। यहीं पर है वह विजय स्तंभ जिसे देख कर कवि कह उठा— "गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़या है।" वह जौहर की भूमि जहाँ ७०० राजपूत रानियों ने अपनी शील-रक्षा के लिए अग्नि को आत्मार्पण कर दिया। चित्तौड़ का किला सचमुच इतिहास की जीवित तस्वीर है। यहीं प मुनि श्री विशुद्धचन्द्रजी म उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० मन्त्री मुनि श्री सहस्रमलजी म० आदि १४ मुनियों का स्नेह सम्मेलन भी चतुर्थ जैन गुरुकुल में हुआ। इसमें सादड़ी सोजत देशनोक, भीनासर आदि सम्मेलन के निर्णयों को समझाया गया। मंत्री मुनि श्री के सिवाय सभी मुनिराजों ने रतलाम की ओर प्रस्थान किया।

५.

मध्य प्रदेश

卐

राजस्थान की घाटियां लांघते हुए हम मालव देश आए। मालव देश ही है वह जहां कालिदास की कविता का झरना बहता था और राजा विक्रमादित्य के न्याय की तुला सदा संतुलन पर रहती थी।

यह क्षेत्र पहले मालवा था, फिर मध्य भारत हुआ और अब मध्यप्रदेश बन गया है। इस प्रकार प्रशासकीय नामांकन में परिवर्तन होता रहा।

जैन दिवाकर पूज्यवर श्री चौथमलजी महाराज ने जिस प्रकार मेवाड़ को अपने परम पवित्र उपदेशों से आकंठ तृप्त किया, वैसे ही इस मालव देश पर भी उनकी निरन्तर कृपा-दृष्टि बनी रही। उनके ओजस्वी प्रवचन सुनने के लिए मालव जनता उमड़ पड़ती थी। उनका व्याख्यान घन घटा की भांति होता था जो बड़ी प्रखरता के साथ आता और असंतोष से परितप्त जन मानस में संतोष की निर्मल बारिस कर जाता।

हमने रतलाम में आकर देखा कि आज भी आम जनता जैनदिवाकर महाराज को भूली नहीं है और उनके व्याख्यान आज भी जनता के कर्ण-कुहरों में गूंज रहे हैं।

श्री जैन दिवाकर ज्ञानालय और उपाध्याय श्री प्यारचंदजी जैन सिद्धान्तशाला के नाम से २ प्रमुख संस्थाएं जैन धर्म के शिक्षण और सांस्कृतिक विकास में योग दे रही हैं।

रतलाम में आम जनता को संबोधित करते हुए मैंने कहा कि "महाराज चले गए हैं पर वे हमारे लिए कर्तव्य का निर्देश कर गए हैं। यदि हमारे मन में उनके प्रति वास्तविक श्रद्धा प्रेम और भक्ति है तो हमें उनके बताये हुए मार्ग पर चलकर जीवन को आध्यात्मिक बनाना है। यदि आप लोग दिन भर पाप कार्य में मस्त रहें लेन-देन दुकानदारी में धर्म-अधर्म का विवेक न रखें और केवल महाराज श्री को स्मरण करते रहें तो उनसे कुछ भी होने वाला नहीं है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज क्रांति की जरूरत है। अन्यथा भौतिकवाद का विस्तार इतनी तीव्रता से हो रहा है कि आध्यात्मिक मूल्य भूमिका पड़ते जा रहे हैं। अतः यह आवश्यक है कि महाराज श्री के आध्यात्मिक उपदेशों का गहराई से मनन किया जाय।"

रतलाम से उज्जैन आए। उज्जैन में कालिदास की स्मृतिस्वरूप एक विशाल विद्या और कला-संस्थान बनने की योजना चल रही है। जो कुछ कहानी है उसके अनुसार ऐसा कहा जाता है कि कालिदास पहले तो एक मूर्ख गंवार था। पर उसने पुरुषार्थ और प्रयत्न से ऐसी विद्या हासिल की जिससे वह संसार का श्रेष्ठतम कवि बन गया। यह पुरुषार्थ की विजय का ही परिणाम है।

उज्जैन से देवास और देवास से इन्दौर। इन्दौर भारत का का एक सम्पन्नशाली शहर है। यहां जैन समाज के सभी संप्रदायों की

काफी बड़ी आबादी है। जैन समाज तो अधिकांशत व्यापारी है। व्यापारी वर्ग में ही वर्तमान में जैन धर्म सीमित हो गया है। इस तरह का सीमा बधन उचित नहीं है। जैन धर्म को नित्य व्यापक बनना चाहिए। उसके लिए क्या प्रयत्न किये जायें इस पर सभी जैन विद्वानों को सोचना चाहिए और तदनुसार प्रचार की व्यवस्थित योजना बनानी चाहिए, ताकि जैन धर्म जन धर्म बन सके और आम जनता इसके हार्द को समझ सके।

इन्दौर के पास कस्तूरबा ग्राम भी एक दर्शनीय आदर्श सस्था है। कस्तूरबा गाधी के नाम पर इस देश में एक निधि इकट्ठी हुई और यह तय हुआ कि इस धन का उपयोग महिलाओं के शिक्षण, विकास और गावों की सेवा के लिए महिलाओं को तैयार करने में खर्च किया जाय। उस कस्तूरबा निधि का प्रमुख केन्द्र यह कस्तूरबा ग्राम है, जहा ग्रामसेविका बनाने के लिए बहनों को हर तरह से शिक्षित किया जाता है। सेवा का यह एक आदर्श सस्थान है।

आज नारी समाज को पुरुष समाज ने घर की चार दीवारी में बन्द कर रखा है। जिस देश में झासी की रानी लक्ष्मी बाई हो सकती है, सीता हो सकती है, मीरां हो सकती है उस देश के नारी समाज को घू घट मे बन्द कर दिया जाय, यह सर्वथा असामंजस्यपूर्ण लगता है। स्त्री-शक्ति के प्रगट होने का अब समय आ गया है। क्योंकि आज ससार को करुणा तथा स्नेह की आवश्यकता है। पुरुष वर्ग ने अणुबमों का आविष्कार करके दुनिया को क्रूरता के विषचक्र में फसा दिया है। अब शाति स्नेह और वात्सल्य का वातावरण मातृत्व-शक्ति धारिणी नारी से ही मिलेगा, ऐसी आशा की जा सकती है। अत अब स्त्रियों को बधन में रखना और अशिक्षित रखना अपने आप दूर हो जाएगा।

इस तरह मध्य प्रदेश की लघु-यात्रा पूरी करके अब हमें महाराष्ट्र की ओर आगे बढ़ना है। जैन साधुओं के लिए देश भ्रमण एक मिशन के रूप में होता है। हमारी चाह एक प्रकार से अनूठी ही है कि देश के कोने कोने में जाकर हम धर्मोपदेश करें और जो जैन श्रावकों का समुदाय देश भर में फैला हुआ है उसकी सार-संभाल लें। उन्हें धर्म-मार्ग की याद दिलाएँ। अब आगे महाराष्ट्र, आंध्र कर्नाटक तमिलनाडु बम्बई आदि क्षेत्रों में विचरण की भावना मन में है। देखें कहाँ तक यह भावना सफल होती है।

••••

६.

महाराष्ट्र

卐

महाराष्ट्र की सीमाए बहुत दूर दूर तक फैली हैं। यह एक विशाल-व्यापक प्रदेश है। बम्बई महानगरी, महाराष्ट्र की राजधानी है। हिन्दुस्तान में बम्बई का वही महत्व है, जो महत्व शरीर में हृदय का होता है। बम्बई हिन्दुस्तान का हृदय है। जहां, व्यापार, उद्योग कारखाने, इत्यादि बहुत बड़े पैमाने पर बिखरे हों, ऐसे प्रथम श्रेणी के शहर भारत में दो ही हैं—कलकत्ता और बम्बई।

बम्बई के बाद महाराष्ट्र का दूसरा मुख्य नगर है—पूना। पूना बहुत प्राचीन समय से शिक्षा, संस्कृति, कला एव विद्या का केन्द्र रहा है। पूना ने आजादी के आन्दोलन में भी बहुत महत्त्व का हाथ बटाया है। एतिहासिक दृष्टि से भी पूना एक दर्शनीय नगर है और हजारों पर्यटकों को वह प्रति वर्ष अपनी ओर खींचता है। पूना के निकट ही भारत प्रसिद्ध निसर्गोपचार आश्रम, उरली कांचन है, जिसकी स्थापना महात्मा गाधी ने की थी। मनुष्य के रोग प्राकृतिक साधनों से दूर हो सकते हैं, इसलिए दवा, इन्जेक्शन आदि का उपयोग करना निरर्थक है। ऐसे प्रयोगों के द्वारा इस आश्रम में साबित किया जाता है।

इस तरह मध्य प्रदेश की लघु-यात्रा पूरी करके अब हमें महाराष्ट्र की ओर आगे बढ़ना है। जैन साधुओं के लिए देश भ्रमण एक मिशन के रूप में होता है। हमारी यह एक प्रकार से अनूठी ही है कि देश के कोने कोने में जाकर हम धर्मोपदेश करें और जो जैन श्रावकों का समुदाय देश भर में फैला हुआ है उसकी सार-संभाल लें। उन्हें धर्म-मार्ग की राह दिखाएँ। अब आगे महाराष्ट्र, आंध्र कर्नाटक तमिलनाडु बम्बई आदि क्षेत्रों में विचरण की भावना मन में है। देखें कहाँ तक यह भावना सफल होती है।

••••

भुसावल का क्षेत्र केलों का क्षेत्र है, और नागपुर सन्तरों का क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में खूब बड़े बड़े बगीचे केलों और सन्तरों की खेती से भरे दीख पड़ते हैं।

भुसावल के पास ही जलगांव है। यह भी एक अच्छा क्षेत्र है यहां के लोग भी बहुत श्रद्धावान एव भक्तिवान हैं। जलगांव के लोगों को प्रबोध देते हुए हमने कहा कि "मनुष्य और तो किसी काम के लिए प्रमाद अथवा आलस्य नहीं करता। पर धर्म कार्य को वह सदैव भविष्य के लिए टाल देता है। बचपन में वह खेलकूद मे मस्त रहता है और सोचता है कि धर्म कार्य तो फिर भी कर लेंगे। यौवन में वह भोगासक्त होकर धर्म कार्य को बुढ़ापे के लिए सुरक्षित छोड़ देता है। पर जब बुढापा आता है तो अशक्त हो जाता है, पुरुषार्थ हीन हो जाता है और धर्म कार्य न कर सकने के कारण पछताता रहता है। अत भगवान ने कहा है कि—

> जरा जाव म पीडेई वाही जाव न वड्ढई ।
> जाविंदिया न हायन्ति, ताव धम्मे समायरे ॥
>
> दशवैकालिक अ० ८ गाथा ३६

अर्थात्–जब तक बुढ़ापा आकर घेर नले, व्याधि आकर त्रस्त न करने लगे, इन्द्रियां जब तक क्षीण होकर जवाब न देदें, तब तक धर्माचरण कर लेना चाहिए। अत हे मनुष्य धर्म कार्य के लिए कभी भी आलस्य और प्रमाद मत करो। 'समय गोयमया पमायए।' क्षण भर के लिए भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। प्रमाद ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।"

जलगांव से आगे अजन्ता होते हुए जालना आए। जालना भी एक अच्छा केन्द्र है। यहां महावीर जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई?

इसके अलावा भी अहमदनगर आदि अनेक बड़े बड़े शहर महाराष्ट्र में हैं। इस प्रान्त की धरती जहाँ ज्ञानेश्वर तुकाराम आदि सन्तों ने पावन की है, वहाँ शिवाजी तिलक गोखले आदि देश भक्तों ने भी इस भूमि पर अपने बलिदान की कहानी लिखाई है।

इस युग के महान सन्त आचार्य विनोबा तो महाराष्ट्र की देन हैं ही महात्मा गांधी ने भी वर्धा में ही रहकर आजादी के आन्दोलन का संचालन किया था। इस प्रकार महाराष्ट्र की गौरव गाथाएं इतिहास में भरी हैं।

हम इन्दौर से जलगांव होकर भुसावल आये। भुसावल में जैन धर्मानुयायियों की काफी संख्या है। भुसावल की भांति ही महाराष्ट्र के अन्य अनेक नगरों में प्रवासी राजस्थानी जैन बहुत बड़ी संख्या में हैं जो विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में लगे हुए हैं।

भुसावल में व्याख्यान देते हुए हमने कहा कि "ये संसार के सारे धन्धे इसी तरह चलते रहेंगे। मनुष्य को इन धन्धों से कभी फुरसत नहीं मिलने वाली है। पर इन धन्धों में ही जो जिस ओर आसक्त हो जाता है, वह कभी अपना आत्मोद्धार करने में सफल नहीं हो सकता। पर जो शुद्ध मानव कमल की भांति कीचड़ में रहते हुए भी उससे सदा निर्लिप्त रहता है और अपने आत्म सुधार के लिए सचेष्ट रहता है, वह निर्वाण प्राप्त करने में सफल हो जाता है। सबसे अधिक मूल्य ज्ञान या भावना का है। भावना के बाद श्रद्धा का स्थान आता है और श्रद्धा के बाद चारित्र का यानी कर्म का स्थान है। कहा भी है— सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्ष मार्गः" इसलिए प्रत्येक मनुष्य को इन तीन रत्नों की सार सम्भाल पूर्ण रूपेण करनी चाहिए।

भुसावल का क्षेत्र केलों का क्षेत्र है, और नागपुर सन्तरों का क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में खूब बड़े बड़े बगीचे केलों और सन्तरों की खेती से भरे दीख पड़ते हैं।

भुसावल के पास ही जलगांव है। यह भी एक अच्छा क्षेत्र है यहां के लोग भी बहुत श्रद्धावान एव भक्तिवान हैं। जलगाव के लोगों को प्रबोध देते हुए हमने कहा कि "मनुष्य और तो किसी काम के लिए प्रमाद अथवा आलस्य नहीं करता। पर धर्म कार्य को वह सदैव भविष्य के लिए टाल देता है। बचपन में वह खेलकूद में मस्त रहता है और सोचता है कि धर्म कार्य तो फिर भी कर लेंगे। यौवन में वह भोगासक्त होकर धर्म कार्य को बुढापे के लिए सुरक्षित छोड़ देता है। पर जब बुढापा आता है तो अशक्त हो जाता है, पुरुषार्थ हीन हो जाता है और धर्म कार्य न कर सकने के कारण पछताता रहता है। अत भगवान ने कहा है कि—

जरा जाव न पीडेई वाही जाव न वड्ढई ।
जाविंदिया न हायन्ति, ताव धम्मे समायरे ॥
दशवैकालिक अ० ८ गाथा ३६

अर्थात्-जब तक बुढ़ापा आकर घेर न ले, व्याधि आकर त्रस्त न करने लगे, इन्द्रियां जब तक क्षीण होकर जवाब न दे दें, तब तक धर्माचरण कर लेना चाहिए। अत हे मनुष्य धर्म कार्य के लिए कभी भी आलस्य और प्रमाद मत करो। 'समय गोयमया पमायए।' क्षण भर के लिए भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। प्रमाद ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।"

जलगांव से आगे अजन्ता होते हुए जालना आए। जालना भी एक अच्छा केन्द्र है। यहां महावीर जयन्ती बडे समारोह के साथ मनाई गई?

मार्ग स्वयं गति को प्रेरित करता है। ज्यों ज्यों कदम आगे बढ़ते हैं त्यों-त्यों मार्ग भी बनता जाता है। इस प्रकार गति और मार्ग का अन्योन्याश्रित संबंध है। महाराष्ट्र की भूमि पर पद विहार करते हुए हमें जो गति की प्रेरणा मिल रही है वह मार्ग की अनुकूलता से ही मिल रही है। कभी-कभी मार्ग में जो कष्ट आते हैं वे भी अनुकूलता के प्रतीक बन कर आते हैं। प्रतिकूलताएँ, संघर्ष कष्ट, इत्यादि सब कुछ जब यात्री को अनुकूल प्रतिभासित होने लगता है तभी तो यात्रा आनंददायी एवं सुखद बनती है।

महाराष्ट्र की सीमाएँ इधर मध्यप्रदेश से जुड़ी हैं तो उधर आंध्र और कर्नाटक से संलग्न है। मध्य प्रदेश तो भारत के मध्य में है ही, महाराष्ट्र का भी बहुत सा हिस्सा खासतौर से नागपुर का क्षेत्र हिन्दुस्तान के बिलकुल बीच में है। इसलिए महाराष्ट्र का महत्व बहुत बढ़ गया है।

महाराष्ट्र अपनी प्राचीन कला के लिए सारे संसार में धीरे-धीरे प्रसिद्ध होता जा रहा है। अजन्ता और एलोरा की गुफाओं ने जहां जैन बौद्ध और शैव परम्परा की उत्कृष्ट कला-सृष्टि ने अपना चमत्कार दिखाया है, संसार भर के सौन्दर्य पिपासु कला मर्मज्ञ शिल्प शास्त्री और इतिहास जिज्ञासु पर्यटकों को आकर्षित किया है। जिस प्रकार कालिदास के काव्यों में साहित्यिक स्तर रचना के माध्यम से शृङ्गार रस का अवतरण हुआ है, वैसे ही अजन्ता की गुफाओं के भित्ति चित्रों में भी शृङ्गार रस खूब खुलकर प्रगट हुआ है। यह सब देखकर कभी मन में यह विचार उठता है कि क्या सभी कल्पनाओं को इस प्रकार चित्रित करने का अधिकार कलाकार को दिया जाय? क्योंकि कलाकार जैसा रसग्राही मानस आम जन समाज का तो नहीं होता। तब कहीं इस कला के दुरुपयोग की सम्भावना तो नहीं?

जालना से परभणी होकर हम नांदेड आये। नांदेड़ में भक्ति और शक्ति की साधना का सह-अनुष्ठान करने वाले गुरु गोविन्दसिंह का मकबरा भी अपना ऐतिहासिक वैशिष्ट्य रखता है। हमने जैन उपाश्रय में विश्राम किया। स्कूल में भी कुछ समय बिताया।

महाराष्ट्र में ठहरने के लिए मुख्य रूप से हनुमान, राम अथवा इसी तरह के मन्दिरों मे स्थान मिल जाता है। पहले के जमाने में मन्दिर का उपयोग इसी दृष्टि से खास तौर पर किया जाता था। मन्दिर यानि गाँव का सार्वजनिक स्थान, जहां सब लोग मिल सकें, एक साथ बैठ कर बात चीत कर सकें, ग्राम की योजना बना सकें। बाहर से आये हुए अतिथि या साधु को ठहरा सकें आदि।

इस तरह हमारी महाराष्ट्र यात्रा पूरी हुई।

• • •

मार्ग स्वयं गति को प्रेरित करता है। ज्यों ज्यों कदम आगे बढ़ते हैं, त्यों-त्यों मार्ग भी बनता जाता है। इस प्रकार गति और मार्ग का अन्योन्याश्रित संबंध है। महाराष्ट्र की भूमि पर पद विहार करते हुए हमें जो गति की प्रेरणा मिल रही है वह मार्ग की अनुकूलता से ही मिल रही है। कभी-कभी मार्ग में जो कष्ट आते हैं वे भी अनुकूलता के प्रतीक बन कर आते हैं। प्रतिकूलतायें, संघर्ष कष्ट, इत्यादि सब कुछ जब यात्री को अनुकूल प्रतिभासित होने लगता है तभी तो यात्रा आनंददायी एवं सुखद बनती है।

महाराष्ट्र की सीमायें इधर मध्यप्रदेश से जुड़ी हैं तो, उधर आंध्र और कर्नाटक से संलग्न हैं। मध्य प्रदेश तो भारत के मध्य में है ही महाराष्ट्र का भी बहुत सा हिस्सा खासतौर से नागपुर का क्षेत्र हिन्दुस्तान के बिलकुल बीच में है। इसलिए महाराष्ट्र का महत्व बहुत बढ़ गया है।

महाराष्ट्र अपनी प्राचीन कला के लिए सारे संसार में धीरे-धीरे प्रसिद्ध होता जा रहा है। अजन्ता और एलोरा की गुफाओं में जहां जैन बौद्ध और शैव परम्परा की उत्कृष्ट कला-सृष्टि ने अपना चमत्कार दिखाया है, संसार भर के सौन्दर्य पिपासु कला मर्मज्ञ शिल्प शास्त्री और इतिहास जिज्ञासु पर्यटकों को आकर्षित किया है। जिस प्रकार कालिदास के काव्यों में साहित्यिक स्तर रचना के माध्यम से शृङ्गार रस का अवतरण हुआ है, वैसे ही अजन्ता की गुफाओं के भित्ति चित्रों में भी शृङ्गार रस खुल खुलकर प्रगट हुआ है। यह सब देखकर कभी मन में यह विचार उठता है कि क्या सभी कल्पनाओं को इस प्रकार चित्रित करने का अधिकार कलाकार को दिया जाय? क्योंकि कलाकार जैसा रसग्राही मानस आम जन समाज का तो नहीं होता। तब कहीं इस कला के दुरुपयोग की संभावना तो नहीं?

जालना से परभणी होकर हम नांदेड आये। नांदेड में भक्ति और शक्ति की साधना का सह-अनुष्ठान करने वाले गुरु गोविन्दसिंह का मकबरा भी अपना ऐतिहासिक वैशिष्ट्य रखता है। हमने जैन उपाश्रय में विश्राम किया। स्कूल में भी कुछ समय बिताया।

महाराष्ट्र में ठहरने के लिए मुख्य रूप से हनुमान, राम अथवा इसी तरह के मन्दिरों मे स्थान मिल जाता है। पहले के जमाने में मन्दिर का उपयोग इसी दृष्टि से खास तौर पर किया जाता था। मन्दिर यानि गाँव का सार्वजनिक स्थान, जहा सब लोग मिल सकें, एक साथ बैठ कर बात चीत कर सकें, ग्राम की योजना बना सकें। बाहर से आये हुए अतिथि या साधु को ठहरा सकें आदि।

इस तरह हमारी महाराष्ट्र यात्रा पूरी हुई।

• • •

७

आंध्र प्रदेश

卐

आंध्र प्रदेश से दक्षिण भारत का प्रारंभ होजाता है। केरल मद्रास स्टेट कर्नाटक और आंध्र ये चार प्रान्त ही मुख्य रूप से दक्षिण भारत के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन चारों प्रान्तों की भाषाएं भी बहुत समृद्ध और विकसित हैं। इन भाषाओं में बहुत विशाल साहित्य लिखा गया है। आंध्र की भाषा तेलुगु है। तेलुगु भाषा में स्वामी-त्यागराज ने गीत-साहित्य लिखा है, जो आंध्र के जन जन के मुख में लोक गीतों की भांति बसा है।

आंध्र प्रदेश के संत पोतन' बहुत प्रसिद्ध भक्त हुए हैं। जिन्हों ने भागवत का निर्माण करके इस देश को एक बहुमूल्य आध्यात्मिक देन दी है।

आंध्र प्रदेश की सबसे बड़ी विशेषता तिरुपति में बालाजी का मंदिर है जहां लाखों भक्त भक्तिरस में सराबोर होकर आते हैं। हालांकि मूर्ति पूजा किसी भी दृष्टि से चैतन्य मानव के लिये आदर्श नहीं बन सकती। चेतना स्वरूप मानव जड़ मूर्ति के सामने समर्पित हो जाय, यह बहुत युक्ति युक्त भी नहीं है। पर यदि हम इस सैद्धां तिक पक्ष को छोड़कर भी विचार करें तो व्यावहारिक दृष्टि से आज

मंदिर परिग्रह, झगड़ा और पाप के अड्डे बन गये हैं। पंडे पुजारियों ने तो अपने आपको भगवान के घर का ठेकेदार और पहरेदार ही समझ लिया है। मंदिर पर किसकी सत्ता रहे, इसके लिए झगड़े होते हैं, मुकदमे चलते हैं और मारामारी तक हो जाती है। इस आडम्बर और परिग्रह की पोषक मंदिर-परम्परा से लाभ के बजाय नुकसान ही ज्यादा हुआ है।

गोदावरी नदी की स्वच्छ सलिल धारा में आनंद उठाने वाली आंध्र प्रदेश की जनता अपने श्रम से इस प्रदेश का निर्माण कर रही है। जैसे उत्तर में गंगा और यमुना का महत्त्व है, वैसे ही दक्षिण में कृष्णा, गोदावरी और कावेरी का महत्त्व है।

भद्राचलम् और इसी तरह के अन्य अनेक स्थान यहां हैं, जहां आंध्र प्रदेश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना मूर्तिमान हो उठी है।

विशाखा पट्टनम् भी आंध्र का एक प्रसिद्ध स्थान है जहां जल पोतों का निर्माण करने वाला भारत में अपने ढंग का अद्वितीय कारखाना है। हालांकि अब हवाई यात्रा के आविष्कार के बाद अधिकतर लोग जल-पोत से लंबी यात्रा करके समय नष्ट करना पसंद नहीं करते, फिर भी जल-पोतों की आवश्यकता दिनों दिन बढ़ती ही जारही है। इसका मुख्य कारण है अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की वृद्धि। सामान की सस्ती और अधिक ढुलाई के लिये जलपोतों की गहरी आवश्यकता होती है। इसी तरह जल-सेना के लिए भी इन पोतों की निहायत जरूरत पड़ती है। ऐसा राजपुरुष मानते हैं।

बेजवाड़ा भी आंध्र का एक प्रमुख शहर है, जहां से दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के लिए प्रमुख रूप से रेल्वे लाइनें निकलती हैं।

इस तो यात्रा में सीधे आंध्र की राजधानी हैदराबाद ही आये। सिकंदराबाद और हैदराबाद तो मिले जुले हुए ही हैं। यह निज़ाम स्टेट था। हैदराबाद का म्युज़ियम सारे देश में प्रसिद्ध है। निज़ाम के शानदार महलों के कारण चौड़ी और साफ सड़कों के कारण तथा खूबसूरत बाग-बगीचों के कारण हैदराबाद बहुत सुन्दर शहरों की गिनती में आ गया है।

जब देश आज़ाद हुआ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बटवारे के रूप में अंग्रेज अपनी कार गुज़ारी छोड़ गए थे। उन्होंने सभी राजाओं को भी स्वतंत्र रहने या हिन्दुस्तान में मिलने का निर्णय करने के लिए मुक्त रखा था। इसी सिलसिले में हैदराबाद के निज़ाम ने आनाकानी शुरू की। हालांकि देश की अन्य सभी रियासतों ने भारतीय गणतंत्र को स्वीकार कर लिया था। पर हैदराबाद स्टेट की गर्दन ज़रा टेढ़ी थी। सरदार पटेल की राजनैतिक कुशलता ने उस टेढ़ी गरदन को भी सीधा कर दिया और यह स्टेट भी हिन्दुस्तान में मिल गया।

हैदराबाद सिकंदराबाद बोलारम आदि क्षेत्रों में जैन श्रावकों की संख्या काफी है। यहाँ आना बहुत लाभदायक रहा और हैदराबाद में ११ दिन का विश्व शांति हित अखंड शांति जाप ५८ साधुओं ने किया। माननीय मेयर किशनलालजी की अध्यक्षता में आधुनिक विश्व शांति की महत्ता पर प्रवचन हुआ। इसमें हजारों जनता ने भाग लिया मिश्री की प्रभावना की गई। ता २१-४-५८ को हैदराबाद के राज्यपाल श्री भीमसेन सच्चर से राज्य भवन में मुलाकात हुई। सच्चरजी के साथ जैन धर्म अहिंसा आदि विषयों पर धर्म चर्चा हुई और उन्हीं के हाथ से वस्तु व ग्रंथ लिया। सिकन्दराबाद चातुर्मास काल में १५ अगस्त १९५८ स्वतंत्रता दिवस पर जाहिर प्रवचन स्वतंत्रता

और हमारा कर्त्तव्य, पर हुआ बालक बालिकाओं के प्रोग्राम श्रेष्ठ रहे। ता ३१ ८-५८ को ताताचार्य एडवोकेट की अध्यक्षता में भारत की संस्कृति व सभ्यता पर भाषण हुआ। एस एस जैन विद्यार्थी संघ की ओर से ७-९-५८ को भारतीय समस्या और कर्मयोगी कृष्ण का जन्म का दीवान बहादुर राजा श्रीकृष्णजी मालानी की अध्यक्षता में मोदा धर्मशाला में व्याख्यान हुआ।

जैन प्रगति समाज की ओर से ता० २१-९-५८ को क्षमापना सम्मेलन सर्व प्रथम मनाया गया। क्षमापना पर सर्व जैन समाज के मुनियों का प्रवचन हुआ। यह दृश्य दर्शनीय रहा।

ता २-१० ५८ गांधी जयंती समारोह में श्री गोपालराव एडवोकेट एम. एल ए की अध्यक्षता में मुनिश्री के प्रवचन हुए।

ता० ५-१० ५८ को जगमोहनदास दलाल की प्रेरणा से जीरा में मानवधर्म पर व्याख्यान हुआ।

ता २८-१० ५८ बुलारम् में नव दिवसीय शांति जाप की समाप्ति पर विद्यालंकार विनायकराय एम. पी की अध्यक्षता में विश्व शांति हित उपदेश हुआ। हजारों जनता ने लाभ लिया, यहां ग्राम में बच्चों के निमित्त से बहुत अशांति हो गई थी, १४४ धारा में शहर रहा हुआ था। शांति जाप के प्रताप से शहर में सर्वत्र शांति का साम्राज्य स्थापन हुआ। हजारों गरीबों को भोजन दिया गया। जैन पुस्तकालय व वाचनालय एवं महावीर जैन युवक मंडल कायम हुआ। सेठ बचनमलजी गुलाबचन्दजी सुराना की तरफ से हीरक सहस्त्र दोहरावली प्रगट की गई। मिश्रीमलजी बोहरा की धर्मपत्नि चम्पा बाई ने दश वक्त आयंबिल ओली की उसी के उपलक्ष में प्रीतिभोज

लिया। और हजारों गरीबों को भोजन दिया गया। किसी रोज सिकन्दराबाद में हमने उपदेश देते हुए कहा कि—

"आप लोग यहां पर धन कमाने के लिये आये हैं। पर धन की कमाई में इतने मस्त न हो जायें कि धर्म की कमाई का भाव ही भूल जायें। धन और धर्म दोनों मिलते-जुलते शब्द हैं। पर धन जहां बंधन का कारण है, वहां धर्म मुक्ति का कारण है। धन इहलोक में काम देता है और धर्म इहलोक तथा परलोक दोनों में काम देता है। इसलिये धर्म के महत्त्व को समझें और हम अपने जीवन में उसी प्रकार स्थान दें जिस प्रकार भोजन को व्यापार को और अन्य शारीरिक क्रियाओं को आवश्यक स्थान दिया है। जो धर्म को गौण समझता है, वह स्वयं भी गौण हो जाता है।"

सानंद सिकन्दराबाद चातुर्मास पूर्ण कर ता. २८-११-५८ को बेगम बाजार समायत धर्म सभा में मालुचिन्दजी म० के साथ यहां पर रामचन्द्र वीर ने गोरक्षा के लिये अनशन कर रक्खा था यहां अहिंसा और गोरक्षा पर सार्वजनिक प्रवचन हुआ। एक प्रस्ताव पास करके आन्ध्र प्रदेश की विधान सभा में भेज दिया गया। सुदर्शन बाजार में सेठ संपतराजजी कोमती ने ९ वष में अपनी तरफ से उपाश्रय बनाने का कहा। इसी बाजार में सेठ इन्द्रमलजी बरड़िया की कोठी पर जैन संघ की मिटींग ता० ८-११-५१ को हुई जिसमें आन्ध्र प्रदेश के जैन संघ की स्थापना हुई।

रामकोरगांव में भव्य विदाय समारोह मनाया गया उसमें म० श्री ने सबको धर्म स्नेह हमेशा बने रहे वैसे नियम करवाये।

हैदराबाद से १६० मील का विहार कर रायचूर ता० २८-१२-५८ को पहुंचे। ता. ४-१-५९ को भगवान पार्श्वनाथ भगवान की जयंती बड़े समारोह के साथ चतुर्विध संघ में मनाई गई। जिसा

कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर मजिस्टेट आदि राज कर्मचारियों की उपस्थिति सराहनीय रही। सेठ सोहनराजजी भडारी ने ६५ पहर का पौषध किया। स्कूल व गौशाला व दवाखाना जैन सघ की ओर से चल रहे हैं। श्रावक लोग बडे श्रद्धालु है। शांति सप्ताह भी यहां हुए।

आन्ध्र प्रदेश से हमें कर्नाटक प्रदेश बैंगलोर की ओर आगे बढ़ना है।

●●●●

८

कर्नाटक

卐

युग मथुरा चामेली गुजरात गुर्जर आदि क्षेत्रों से होते हुए इस कर्नाटक प्रान्त में आये हैं। इस प्रान्त की भाषा कन्नड़ है। कन्नड़ भाषा में प्रचुर जैन-साहित्य है। किसी युग में जैन धर्म इस प्रान्त का प्रमुख धर्म था ऐसा कहा जा सकता है। श्रवण बेल गोला कर्नाटक ही नहीं बल्कि दक्षिण के जैनों की प्रभु सत्ता का प्रतीक है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में आचार्य भद्रबाहु दक्षिण आये। वे इस युग के अन्तिम श्रुत केवली थे। उनका आखिरी समय दक्षिण में ही बीता ऐसा इतिहासकारों का मन्तव्य है। जैन धर्म की दार्शनिक विचार-धारा को विकसित करने में दक्षिणी विद्वानों ने खूब मनोयोग पूर्वक सहायता की। भद्रबाहु के ही एक भक्त राजा ने श्रवण बेलगोला के पहाड़ पर ५८ फीट ऊंची बाहुबलि की भव्य मूर्ति का निर्माण किया। यह अद्भुत मूर्ति विश्व का एक महान आश्चर्य मानी जाती है। दक्षिण के चारों प्रान्तों की भाषा और परम्परा भिन्न होते हुए भी जैनों के रहन सहन संस्कृति और विचारों में काफी एकता थी। कर्नाटक प्रान्त विविध संस्कृतियों का संगम-स्थल रहा है। यहां मेलकोटा में रामानुजाचार्य आकर रहे। वैष्णव सम्प्रदाय में रामानुजाचार्य का सम्मानित स्थान है। इसी तरह शंकराचार्य भी इस प्रान्त में आए

और शृ गेरी मठ की स्थापना की। पुरन्दरदास के भजनों से जिस प्रकार कर्नाटक की भूमि रस-विभोर है, उसी प्रकार अक्का महादेवी भी कर्नाटक की मीरा ही है। कर्नाटक के भक्तों की गिनती करने बैठें तो एक लम्बी फेहरिश्त ही हो जायगी।

कला की दृष्टि से तो पूरा दक्षिण ही प्रख्यात है। कर्नाटक में बेलूर, श्रीरंग पट्टनम् आदि के मन्दिर कला के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं।

इस प्रान्त में आकर विद्यारण्य का नाम नहीं भुलाया जा सकता। विजयानगरम् यहा का एक बहुत प्राचीन साम्राज्य है। पर इस साम्राज्य का इतिहास वीरता से अधिक विद्या का इतिहास है। इस साम्राज्य के सस्थापक श्री विद्यारण्य वेदों के उद्भट विद्वान थे। "यथा नामस्तथा गुण" के अनुसार वे सचमुच 'विद्यारण्य' ही थे। उन्होंने चारों वेदों के भाष्य लिखकर इस प्रान्त की जनता में अपना नाम अमर कर दिया।

कर्नाटक में सस्कृत विद्या का प्रचार बहुत है। सस्कृत विद्या की यह विशेषता है कि वह पूरे देश में समान रूप से सर्वत्र पढी जाती है। हालाकि यह किसी भी प्रान्त की मातृ-भाषा नहीं है, पर इस भाषा ने जितना प्रचार पाया है, उतना इस देश में अन्य किसी भाषा ने नहीं पाया है। हिन्दुस्तान का उत्कृष्टतम आध्यात्मिक, काव्यात्मक, सास्कृतिक और सामाजिक साहित्य इसी भाषा में मिलता है। मध्य युग में जब मुगल-साम्राज्य और इ गलिश-साम्राज्य इस देश पर छाया तब सस्कृत जन-भाषा के रूप में न रह सकी, पर साहित्यिक और आध्यात्मिक रुचि लोगों में पूरे देश में यह भाषा व्याप्त है।

कर्नाटक की राजधानी बैंगलोर है, जहाँ जैन-श्रावकों की संख्या १० हजार से भी ज्यादा है। यहाँ अलग अलग मार्गों में अलग अलग स्थानक हैं और संघ का अच्छा संगठन है। बैंगलोर में व्यापार का बहुत बड़ा हिस्सा जैनों के हाथ में ही है। यहाँ एक विशाल मन्दिर भी है। स्थानकवासी समाज और मूर्ति पूजक समाज के घर अधिक संख्या में हैं। दिगम्बर समाज का मन्दिर व काफी घर हैं और थोड़े तेरा पन्थी भी हैं।

बैंगलोर हिन्दुस्तान के सुन्दरतम शहरों में स एक है। यह 'सिटी ऑफ गार्डेन्स' यानी उपवनों की नगरी कहलाती है। गरमी में ज्यादा गरम नहीं बरसात में ज्यादा बारिश नहीं सरदी में ज्यादा ठण्ड नहीं। सदैव सम-शीतोष्ण और अनुकूल वातावरण ही रहता है।

बैंगलोर का लाल बाग तथा कब्बन पार्क बहुत प्रसिद्ध है। विधान सौध भी भारत की अपने ढंग की अद्वितीय दर्शनीय इमारत है जिस पर ९ करोड़ से अधिक रुपये व्यय हुए हैं। बहुत से लोगों का तो यह भी कहना है कि जिस देश में करोड़ों व्यक्तियों को पूरा खाना भी नसीब नहीं होता, उस गरीब देश की जनता का इतना रुपया शान-शौकत पर क्यों खर्च किया जाय?

बैंगलोर में तथा आस पास के उपनगरों में धर्म-प्रचार के कारण काफी जागृति आई। ता० १-४-६६ को भगवान ऋषभदेव की जयन्ति मेयर श्री एम० नारायण सेठी की अध्यक्षता में सूबा बाग नं० ३ विक्टोरिया रोड अशोक नगर में मनाई गई। ता० १०-४-६६ को सर्पिगरोड मोरबरी बाजार में कई घरानों से आपस में कई वर्षों से मन मुटाव चल रहा था वह मुनि श्री के सद् प्रयत्न से नीचे लिखी शर्तों पर मिट गया।

ता० १३-४-५६ चैत्र शुक्ला ५ सोमवार सम्वत २०१६

श्रमण संघीय प० रत्न मुनि श्री हीरालालजी महाराज आदि ठाणा ६ के सम्मुख मोरछली बाजार में कुछ अर्से से मन मुटाव हो रहा है उसे मिटाने के लिये कुछ भाईयों ने अर्ज की। जिससे महाराज श्री ने मोरछली बाजार वालों में सम्पूर्ण शान्ति व एकयता हो इस-लिये महाराज श्री ने व्याख्यान में एक होने के लिये कहा।

(१) पहिले जो लिखावट मन मुटाव होने से लिखी गई वह दोनों तरफ से अमल में भविष्य में न लाई जाय।

(२) दोनों की साथ में प्रेम पूर्वक क्षमापना महाराज श्री के सन्मुख हो।

(३) भविष्य मे सब के यहा बुलावा हाति पाति बराबर हो।

(४) पहिले के जो झगड़े व लिखावट हो वह आज से समाप्त की जाय और भविष्य में उसकी कोई चर्चा न करें।

(५) दोनों ओर से तत्काल आदान प्रदान हो।

हिन्दुस्तान एयर क्राफ्ट फैक्ट्री में कर्नाटक राज्य के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री निजलिंगप्पा की अध्यक्षता में एक विशाल सार्व-जनिक सभा ता० १६-४-५६ को हुई। जिसमें हजारों लोगों ने व्याख्यान श्रवण करने का लाभ लिया। ता० २०-४-५९ को मिलाक्र पल्ली में इसी तरह मल्लेश्वरम् में कर्नाटक राज्य के कार्यकारी राज्यपाल श्री मंगलदास पकवासा की अध्यक्षता में एक आम सभा हुई। तथा अतिथी के रूप में श्रम मन्त्री श्रीमान् टी० सुब्रमण्य भी पधारे। मल्लेश्वरम् में ही एक दूसरी सभा में कर्नाटक राज्य के मुख्य मन्त्री

श्री बी० बी० जत्ती भी आये। इस सभा में महासतीजी श्री सायर कंवरजी ने कन्नड़ भाषा में बहुत ओजस्वी भाषण दिया। राज्यपाल और मुख्य मन्त्री दोनों ने ही वार्तालाप करके तथा जैन धर्म की विस्तृत जानकारी प्राप्त करके अत्यन्त सन्तोष प्रगट किया और भग वान महावीर को श्रद्धाञ्जली अर्पित की। इसी रोज मैसूर श्री संघ की विनती से मैसूर पधारने की स्वीकृति दी गई।

श्री रामपुर की राजकीय पाठशाला में "विश्वशान्ति" के सम्बन्ध में विचार करने के लिए एक गोष्ठी बुलाई गई। इस गोष्ठी में अनेक विद्वानों तथा विचारकों ने भाग लिया। कारपोरेशन के मेयर श्री श्रीनारायण कर्नाटक धर्मेम्बली के अध्यक्ष एम एम सीमा गांधी श्रीमती सुशीला एम एम० ए० आदि के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

इस सभा में विचार विमर्श के बाद सभी लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि "आज बड़े राष्ट्रों ने मिलकर शीत युद्ध का वातावरण बना रखा है। यह शीत युद्ध कभी भी वास्तविक युद्ध के रूप में परि वर्तन हो सकता है। अतः भगवान महावीर ने जो अहिंसा, प्रेम और अविरोध का सिद्धान्त प्रतिपादित किया है उसका विश्व भर में प्रचार करना चाहिए और विश्व जन मत की ओर से बड़े राष्ट्रों के सामने यह मांग रखी जानी चाहिए कि वे आम जनता के भाग्य के साथ अपने निहित स्वार्थों के लिए खिलवाड़ न करें।

हम लोगों ने बैंगलोर की सेन्ट्रल जेल में भी अपराधियों के सामने धर्मोपदेश किया और अनेक अपराधियों को यह प्रतिज्ञा दिलाई कि सजा समाप्त होने पर वे फिर अपराध न करें।

बैंगलोर से श्रवण बेलगोला और श्रीरंगपट्टनम् होते हुए हम लोग मैसूर आए। मैसूर का राज्य बहुत प्राचीन है और यहा के राजा दशहरा पर्व जिस प्रकार मनाते हैं, वह पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर का वृंदावन उपवन भी सारे देश मे प्रख्यात है। इतनी अच्छी व्यवस्था और इतना विशाल उपवन हिन्दुस्तान में शायद ही दूसरा हो। इसे देखने के लिए दूर दूर के लोग आते हैं। मैसूर में और भी अनेक पर्यटन स्थल हैं। आम जनता में व छह हजार विद्यार्थियों में प्रवचन, सदाचार प्राप्त हो इस विषय पर हुए। सेठ माणकचन्दजी छल्लाणी ने धर्म प्रचार कराने में बड़ी मेहनत की। मैसूर से वापस बैंगलोर और बैंगलोर से मद्रास जाने का कार्यक्रम है।

बैंगलोर में हमने दो चातुर्मास किये। इन दोनों चातुर्मासों में विशेष उपकार हुआ। बैंगलोर सिटी में सेठ कुंदनमलजी पुखराजजी लूंकड़ ने हमारी प्रेरणा से २१ हजार रुपये का दान करके जैन स्थानक में अभिवृद्धि की। इसी तरह सेठ मिश्रीलालजी पारसमलजी कातरेला ने ११ हजार का दान स्थानक के लिए किया। और पुराने स्थानक के नव निर्माण के लिए उपरोक्त दोनों सज्जनों ने करीब ३० हजार रुपये और लगाए। अलसूर में सेठ जवरीमलजी मेहता ने रु ६० हजार के करीब लगाकर भव्य जैन भवन का निर्माण किया। फरजन टाउन में जैन स्थानक के लिए एक बहुत बड़ी जमीन खरीदी गई।

दोनों चातुर्मासों के बाद संघ की ओर से दिये गए अभिनंदन पत्र यहा दिये जारहे हैं।

ओम् अर्हंनमः

प्रातः स्मरणीय श्री मज्जैनाचार्य स्वर्गीय पूज्य श्री सूर्यचन्द्रजी म. के गुरुभ्राता स्व० प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० के सुशिष्य श्रमण संघीय जैनागम तत्वविशारद पं० मुनि० श्री हीरालालजी म० के करकमलों में—

।। अभिनन्दन-पत्र ।।

गुरुवर्य ! आपको अनेकशः धन्यवाद है कि आपने उग्रविहार करते हुए पं० मुनि श्री लाभचंदजी म० मुनी श्री दीपचन्दजी म० मुनि श्री मगनलालजी म० तथा तपस्वी मुनि श्री बसन्तीलालजी म० के साथ बैंगलोर नगर को पावन किया और मोरवरी व सपीग्सरोड श्रावक संघ की विनती को स्वीकार कर चातुर्मास के लिए पधारे।

वास्तव में देखा जाय तो जैन मुनियों का मार्ग बड़ा ही कंटका कीर्ण है। विहारकाल में सर्दी गर्मी भूख प्यास आदि अनेक भीषण परिषहों को सहनशीलता की मूर्ति बनकर सहन करना आप जैसे वीरों का ही कार्य है। अपर पुरुष इन परिषहों को सहन करने में असमर्थ ही होते हैं। आप वीरों ने इन परिषहों को फूलों के सदृश मानकर सहन किये हैं। अतएव आपको कोटिशः धन्यवाद है।

इस चातुर्मास काल में आपके यहाँ विराजने से बैंगलोर जैन समाज पर अत्यंत उपकार हुआ है। मोरवरी तथा सपीग्सरोड वाले श्रावकों को तो सेवा करने का यह प्रथम शुभावसर ही प्राप्त हुआ था। आपके चातुर्मास करने से यहाँ के श्रावक संघ के हृदय में अकथनीय धर्म जागृति हुई। आपके धर्मोपदेश से प्रेरित होकर जो सपीग्सरोड स्थित बंगला ११०००) हजार रुपये में धर्म प्रवृत्ति करने के लिये लिया गया है यहाँ आप श्री के सफल चातुर्मास की अमर यादगार

दिलाता रहेगा। हम सबका हृदय इस महान कमी की पूर्ति में गद्गद् हो रहा है।

आप श्री के प्रवचन बड़े ही ओजस्वी सारगर्भित एव सोये हुए हृदय में जागृति पैदा करने वाले होते हैं। आपकी जादूभरी वाणी को सुन सुन कर कई भाई श्रद्धालु श्रावक बने हैं। आपकी वर्चस्व शक्ति अद्भुत रंग लाने वाली है। आपके बिना प्रेरणा दिए ही उपदेश मात्र से यहा के भाई बहनों में बडी बडी तपस्याएं एव प्रत्याख्यान हुए हैं।

आप जैसे विरले ही महान सन्तों में इस प्रकार की वाकपटुता पाई जाती है। टूटे हुए हृदयों मे असीम प्रेम पैदा करा देना आपको खूब आता है। यदि हम आपको लोकप्रिय धर्मनेता से भी सम्बोधित करें तब भी अतियुक्ति न होगी। आप वास्तव में सद्धर्म प्रचारक सन्त हैं।

आपकी हँसमुख मुद्रा से सदैव फूल बरसते रहते हैं। आपके सौम्य दीदार की अलौकिक छटा प्रशसनीय है। दर्शन करने वाले भव्य प्राणियों को मुखारविन्द अतीव आनन्द का छद्रेव कराता है। प्रत्येक नर नारी दर्शन लाभ कर अपने जीवन को धन्य धन्य मानते हैं।

आप श्री के गुणों का वर्णन करना हमारे लिये सूर्य के सामने दीपक दिखाने के सदृश है। गुरुदेव! हमारे पास वह शाब्दिक चमत्कार नहीं जिससे हम आपके अनेक गुणों का बखान कर सकें। तदपि भक्ति से प्रेरित होकर जो यत्किंचित गुण पुष्प आप श्री के चरणों में समर्पित किये हैं, उन्हें, आप बहुलता में मानकर स्वीकार करें।

हृदय सम्राट ! आपको विदाई देते हुए हम श्रावकों के हृदय दुःख से व्यथित हो रहे हैं। परन्तु संयोग के पश्चात् वियोग भी अवश्यम्भावी है। अतएव न चाहते हुए भी हम आपको विदाई दे रहे हैं। हमारी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि सतत्व पिपासुओं को पुनः दर्शन लाभ कराकर अपने अपूर्व प्रेम का परिचय देते रहिए। इस चातुर्मासकाल में हमारी तरफ से जो भी अविनय आशातना हुई हो उसे हृदय में स्थान नहीं देते हुए क्षमा करेंगे ऐसी आशा करते हैं।

अन्त में शासनदेव से करजोड़ प्रार्थना है कि गुरुदेव चिरकाल पर्यंत ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए जैनधर्म का अधिक से अधिक प्रचार कर सकें ऐसी शक्ति प्रदान करें।

हम हैं आपके आज्ञाकारी

चातुर्मास सं० २०१६ — श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
स्थान: मोरचरी सपीन्सरोड — मोरचरी, सपीन्स रोड
बैंगलोर १ — बैंगलोर १

—ॐ अर्हं नमः—

प्रातः स्मरणीय परमादरणीय श्री मज्जैनाऽऽचार्य स्वर्गीय पूज्य श्री खूबचन्दजी म० सा० के गुरु भ्राता स्व० पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म० सा० के सुशिष्य समस्त सपीय जैनागम तत्त्व विशारद मधुर व्याख्यानी पंडित मुनि श्री हीरालालजी महाराज साहब के चरण कमलों में सादर समर्पित—

१. अभिनन्दन पत्र ॥

गुरुवर्य ! हमारा यह अहोभाग्य रहा है कि आप श्री मद्रास का चातुर्मास समाप्त कर सुदूर दक्षिण में जैनधर्म का प्रचार करते

हुए एक बार फिर हमारी विनंती को मान देकर बेंगलोर शहर में चातुर्मासार्थ पधारे।

आपने अपनी सरल एवं रोचक भाषा में अनेक हेतु दृष्टान्तों के साथ जैनागम के गहन तत्वों को श्रोताओं के सम्मुख रखकर भलीभांति समझाने का प्रयास किया, शत-शत प्रणाम है आपकी इस विद्वत्तापूर्ण मधुरवाणी को।

आपके ओजस्वी व्याख्यानों से प्रेरित होकर धर्मध्यान, शांति-सप्ताह एव बडी २ तपस्याओं की आराधना हुई, श्रीमती धापुबाई (धर्मपत्नी श्रीमान् जसराजजी सा० गोलेछा) ने इक्कावन उपवास की अद्वितीय तपस्या कर समाज की शोभा में चार चाद लगा दिये। यह सभी आपही का प्रताप है, आप धन्य हैं।

आपके सुशिष्य पडित मुनि श्री लाभचन्दजी म० सा० ने एकान्तर की तपस्या की आराधना के साथ ही साथ छुटकर तपस्या करके अपनी आत्मा को निर्मल बनाई है और साथ में "श्रावक व्रत अभियान" का भी प्रचार प्रारम्भ रखा जिसके फल स्वरूप यहा लगभग ५०० श्रावक श्राविकाओं ने बारह व्रत अंगीकार किये। गुजराती बन्धुओं ने बारह व्रतों की विशेष उपयोगिता समझकर करीब दो हजार पुस्तकें गुजराती में प्रकाशित करवाने का निश्चय किया है, अनेक धर्म प्रेमियों को इससे लाभ होने की सभावना है। हम आपका आभार मानते हुए यह आशा करते हैं कि आपका यह अभियान निरतर चालू रहेगा।

पुज्यवर! आपने जब भारत के पूर्वी भाग—कलकत्ता आदि का प्रवास किया था तब मुनिराजों की सुविधाहेतु "बङ्ग-विहार" नामक मार्ग प्रदर्शिका प्रकाशित करवाई थी उसी प्रकार आप श्री के सौजन्य

से "दक्षिण विहार" नामक पुस्तिका प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की है और शीघ्र ही समाज की सेवा में प्रस्तुत की जावगी दक्षिण में विचरण करने वाले संत मुनिराजों के लिए यह एक वरदान का काम करेगी आपके इस सौजन्य के लिए अनेकश: धन्यवाद हमारी ओर से समर्पित है।

हे क्षमासागर दयानिधे! आपके सुशिष्य सेवाभावी मुनि श्री दीपचन्दजी म सा० ने भी श्राविकाओं एवं बच्चों को विशेष कहा-नियों एवं चौपाई द्वारा धार्मिक सुसंस्कार देने की बड़ी कृपा की है इसे भी हम भूल न सकेंगे।

इस चातुर्मास की अवधि में हमसे जान अनजान में किसी प्रकार से आपका अविनय हुआ हो आपके हृदय को किसी प्रकार की व्यथा पहुँची हो तो हम नत मस्तक हो अत्यन्त विनम्रता सेव हार्दिक क्षमा मांगते हैं। आप क्षमाशील हो हमें क्षमा [illegible] और इस शहर को पुन पावन करने की कृपा करें

अन्त में श्री जिनेश्वर से यह विनम्र प्रार्थना हम करते, आप चिरायु होकर देश के कोने २ में जैन धर्म का प्रचार कर पूज्य जिन शासन की शोभा बढ़ाते रहें।

विदाई का समय है हृदय गद्गद् हो रहा है अधिक क्या वर्णन करें। इन अल्प शब्दों को ही फूल की जगह पखुरी के रूप में आपके चरण कमलों में सविनय समर्पित कर संतोष का अनुभव करते हैं।

चातुर्मास वि २ १८ — आपके विनयावनत
बेंगलोर सिटी — श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बेंगलोर

९.

तामिलनाड

卐

मद्रास, जिसकी राजधानी है, वह है सुन्दर, सुषमा मय प्रदेश—तामिलनाड। कांचीपुरम् जैसे तीर्थों, और मदुराई जैसे विशाल मन्दिरों वाले शहरों से जो प्रसिद्ध है, उसी तामिलनाड की राजधानी मद्रास के लिए हम बैंगलोर से चले। रास्ते में कोलार की सोने की खानें निहारते हुए विशाल समुद्र तट पर बसे हुए, मद्रास शहर में [illegible] लोग पहुँचे। मद्रास का समुद्र तट सचमुच प्रसिद्धि के काबिल है। इतना विशाल समुद्र तट कि जिसके किनारे लाखों आदमी [illegible] सकते हैं। समुद्र की उर्मियां जितनी क्षणभंगुर हैं, उतना ही [illegible] मनुष्य का जीवन भी क्षणभंगुर है। पर पागल मनुष्य इसकी चिन्ता जरा नहीं करता और पाप में आसक्त रहता है। समुद्र जितना गंभीर और विशाल है, उतना ही गंभीर और विशाल मनुष्य को बनना चाहिए। तभी जीवन सफल हो सकता है।

मद्रास में जैनों की संख्या बहुत बड़ी है। स्थानक वासी जैनसंघ के प्रमुख सेठ मोहनलालजी चौरडिया, उप प्रमुख सेठ सूरजमल भाई मंत्री सेठ मागीचन्दजी भंडारी, उपमंत्री भंवरलालजी गोठी हैं। अनेक स्थानों पर उपाश्रय बने हुए हैं। संघ व्यवस्था बहुत अच्छी है। सेठ अगरचन्द मानमल कालेज, अमोलकचन्द गेलड़ा हाई स्कूल आदि

अनेक संस्थाएँ जैन संघ की देखरेख में अच्छे ढंग से चल रही हैं। लोगों में श्रद्धा भक्ति भी बहुत है।

त्यागराय नगर के जैन बोर्डिंग में राजाजी राजगोपालाचारी की अध्यक्षता में 'जैनधर्म की अहिंसा' के संबंध में एक सभा हुई। इसमें मैंने बताया कि जिस युग में चारों ओर हिंसा बर्बरता और वैर भाव का वातावरण व्याप्त हुआ था उस युग में भगवान महावीर का जन्म हुआ और उन्होंने दुनिया को अहिंसा के मार्ग पर चलने का आवाहन किया। यदि उस समय भगवान महावीर न आये होते तो न जाने इस देश की क्या दशा होती। भगवान ने कहा है कि हे जीव तुम जिसे मारना चाहते हो वह तुम्हीं हो। दूसरे को मारने वाला अपनी ही हिंसा करता है। अपने ही आत्म गुणों का विघातक बनता है। इस दुनियां में कोई भी प्राणी मरना नहीं चाहता है किसी को मारने का किसी को कष्ट देने का संताप या परिताप देने का तुम्हें क्या अधिकार है? यह भगवान महावीर का उपदेश था। इस उपदेश ने जनता पर जादू का असर किया और वातावरण में चामत्कारिक परिवर्तन आया।

राजाजी ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि "अहिंसा, अंधकार को दूर करने के लिए एक दीपक के सदृश है। अहिंसा विश्व शांति का मूल मंत्र है। भारतीय दर्शनों में जैन दर्शन की महत्ता अहिंसा के कारण ही है। अहिंसा मनुष्य की निर्बलता की द्योतक नहीं बल्कि वह तो मानवीयता की प्रतीक है। जैन धर्म ने न केवल मनुष्यों तक बल्कि पशुओं और अविकसित प्राणियों तक अहिंसा का विस्तार किया है। दक्षिण में पशुबलि के बंद कराने का श्रेय जैन धर्म की इसी व्यापक और प्राचीन अहिंसा परम्परा को ही है।

इस प्रकार यह एक सफल आयोजन रहा। जिसमें जैन धर्म और अहिंसा पर सुन्दर प्रकाश डाला गया किन्तु हम जैनों को सोच लेना चाहिए कि अब केवल व्याख्यानों से काम चलने का नहीं है। सगठित होकर काम करने की जरूरत है।

इस प्रकार हमारी दक्षिण की यात्रा पूरी हुई। अब वापस बम्बई होते हुए उत्तर और पश्चिम की तरफ जाना है। हैदराबाद के आगे दक्षिण भारत की यात्रा में मुनिश्री लाभचन्दजी महाराज, मुनिश्री दीपचन्दजी म, मुनिश्री मन्नालालजी म, मुनिश्री बसतीलालजी म, मुनिश्री गणेशीलालजी म साथ रहे। इस प्रकार साथी मुनियों के सहयोग के कारण यात्रा में बहुत आनन्द रहा। दक्षिण प्रदेश-विहार के लायक है और बहुत अच्छा प्रदेश है। इसलिए अन्य मुनियों को भी इस ओर आने की हिम्मत करनी चाहिए।

• • •

१०

मद्रास से बेंगलोर

卐

मद्रास में सन् १९६० का चातुर्मास सानन्द संपन्न किया। अनेक प्रकार की त्याग-तपस्या की प्रवृत्तियां हुईं। अनेक विशिष्ट विचारों समाज सेवकों और लोक नेताओं से संपर्क हुआ तथा उन्हें जैन धर्म का परिचय दिया।

मद्रास के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं स्थापत्य शासन मंत्री श्री ईश्वरदास भक्तम से बातचीत के दौरान में आध्यात्मिक विकास के बारे में चर्चा हुई। उन्होंने भी यह महसूस किया कि जबतक मानव-जीवन में अध्यात्मवाद की प्रतिष्ठा नहीं होगी तब तक किसी भी प्रकार से सामाजिक उन्नति भी संभव नहीं। अध्यात्मवाद की बुनियाद पर सामाजिक जीवन का महल मजबूती से खड़ा रह सकता है।

इसी प्रकार मद्रास राज्य के प्रमुख नेता और धार्मिक वृत्ति के मुख्य मंत्री श्री कामराज नाडार से भी गंभीर चर्चाएं हुईं। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि आज हिंसा और द्वेष से संत्रस्त मानव जगत को भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा की नितान्त

आवश्यकता है। बिना अहिंसा के अब दुनिया की समस्याएं और किसी मार्ग से हल नहीं हो सकती। मुख्य मंत्री ने जैन-साधुओं के कठिन आचार व्रतों की भूरि भूरि प्रशंसा की।

पैरम्बूर मे उपाश्रय का काम बहुत दिन से अर्थाभाव के कारण अधूरा पड़ा था। हमारे उपदेश से प्रभावित होकर संघ ने उसे शीघ्र पूरा करने का निर्णय किया और व्याख्यान के अवसर पर ही ४५८०) रुपये का चन्दा हो गया। ६ भाइयों ने यह प्रतिज्ञा की कि १२०००) रुपये एकत्रित न होने तक वे पैरों में जूते नहीं पहनेंगे। अब इससे भी अधिक रुपये लगाकर वहा उपाश्रय का निर्माण करा दिया गया है।

तुगली छत्रम से ही पूरे मद्रास शहर को जल वितरित किया जाता है। यहा पर पानी का बहुत सुन्दर तालाब है। यहां पर श्री उपाश्रय के निर्माण के लिए तैयारी की गई।

तामरम् में नये उपाश्रय का निर्माण हुआ था, उसका उद्घाटन सपन्न हुआ। सेठ मोहनलालजी चौरड़िया की अध्यक्षता में सेठ मागीचन्दजी भंडारी ने उद्घाटन-विधि सपन्न की। उपाश्रय मे हॉल के निर्माण का भी निश्चय किया गया। नगर पालिका की तरफ से अनेक तिथीयों के दिन कत्ल खाना बंद रखने का निश्चय किया।

महाबली पुरम् में समुद्र के किनारे पर बना हुआ अति सुन्दर कलात्मक मंदिर है। पत्थर में भी कलाकार किस तरह प्राण भर सकता है, इसका नमूना यह मंदिर है। भारत में दक्षिणी प्रान्त शिल्प और स्थापत्य कला की दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं।

मधुरान्तकम् की संस्कृत पाठशाला का स्मरण अभी तक विद्यमान है। यहा पर संस्कृत का अध्ययन करने वाले ब्राह्मण

विद्यार्थियों के लिये सब प्रबंध निःशुल्क किया गया है। यहाँ जैनों के १५ घर हैं पर इनमें एकता का सर्वथा अभाव था। तीन दलों में सब लोग बंटे हुए थे। इसलिए सबको उपदेश देकर समझाया गया और एकता स्थापित की गई। १० हजार रुपये का चन्दा उपाश्रय के निर्माण के लिए हुआ। यह निश्चय किया गया कि एक साल के अन्दर उपाश्रय का मकान हो जाना चाहिए। तिण्डीवनम् में जैन स्थानक के लिये बारह हजार का चन्दा हुआ और उपाश्रय के लिये मकान ले लिया गया। पुस्तकालय यहाँ अच्छे ढंग से है।

पांडिचेरी हिन्दुस्तान का एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ की प्रसिद्धि के २ कारण हैं—एक तो श्री अरविन्द का साधना स्थल अरविन्द आश्रम और दूसरे में पांडिचेरी पहले फ्रांसीसी उपनिवेश था और वह शांतिपूर्वक वापस स्वतन्त्र किया गया। श्री अरविन्द आश्रम भारत का एक आदर्श आश्रम है। यहाँ की व्यवस्था बहुत अच्छी है और साधकों का जीवन भी अपने ढंग से बहुत भावमय है। पांडिचेरी में भक्ति भावना खूब हुई। लोगों ने व्याख्यान श्रवण तथा धर्म चर्चा का खूब लाभ लिया। अहिंसा और जैन धर्म के संबंध में गवर्नमेन्ट हाई स्कूल में सार्वजनिक प्रवचन हुए। लोगों ने मुक्त हस्त से प्रभावना भी बांटी। रमेश भाई मेहता पिता के कहे अनुसार अपनी दुकान पर प्रवचन करवाया। अतिथि सत्कार भी किया। ५ अट्ठाइयाँ हुईं।

विल्लीपुरम् तो ब्रह्मचर्य पुरम् बन गया। यहाँ पर ५ महानुभावों ने दम्पति सहित ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। उनके साहस और भावना की सबने भूरि-भूरि प्रशंसा की। ब्रह्मचर्य सब से बड़ी तपस्या है और जीवन-शोधन का अमोघ उपाय है। विल्लीपुरम् में अनेक गांवों के भाई बहिन दर्शनार्थ आये। यहाँ पर वैरा दुकन्चनम् का कार्यक्रम मनमलजी बुगड़ के यहाँ

विशाल पडाल में सम्पन्न हुआ। श्रावक समाज मे त्याग, तपस्या दयाव्रत आदि के अनेक अनुष्ठान हुए।

तिरुवक्केयिलूर में जाहिर प्रवचन किया। महावीर जयन्ती का भव्य आयोजन हुआ। भगवान महावार की उच्च जीवन-साधना पर प्रकाश डाला गया। जैन धर्म क्या है, जैन-साधुओं के व्रत क्या हैं, इन सब प्रासगिक विषयों का जानकारी भा दी गई। आम जनता बहुत हर्षित हुई।

तिरुवन्नामलै में सव धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। सभी धर्मों ने बुनियादी रूप स इसी बात पर जोर दिया है कि मानव को सत् कर्तव्यों पर चलना चाहिए। अहिंसा, सत्य, प्रेम, करुणा आदि को सभी धर्मों ने एक स्वर से स्वीकार किया है। फिर आपस में धर्म के नाम पर किस बात का झगड़ा?

इस सर्व धर्म सम्मेलन में स्थानीय जनता ने बहुत बड़ी संख्या मे भाग लिया। अनेक वकीलों, शिक्षकों, डाक्टरों, सरकारी अधि-कारियों आदि ने भी भाग लिया। अनेक स्थानीय विद्वानों के तमिल में भाषण भी हुए।

इसी तरह का सर्व धर्म सम्मेलन वेलूर में भी हुआ। वेलूर में अक्षय तृतीया का समारोह बहुत शानदार ढग से मनाया गया। जुलूस भी अपने ढ़ग का दर्शनीय था। यहां बाहर के करीब २५ स्थानों के व्यक्ति एकत्रि हुए जिनकी तादाद हजार बारह सौ तक पहुँच गई। अनेक लोगों ने त्याग-तपस्या व ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकार किया।

कोलार वह स्थान है जहाँ जमीन से सोना निकलता है। ये सोने की खाने बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर जैनों के ६ घर हैं। हमने ३ व्याख्यान यहाँ पर दिये।

सिगल पालिया में सेठ मिश्रीलालजी छाजेड़ा के प्रेम बाग में ठहरे। छाजेड़ाजी की ओर से सबको प्रीति भोज दिया गया। बैंगलोर से सैकड़ों की तादाद में स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ आये। यहाँ से १॥ मील दूर एक बहुत बड़ी सुन्दर गोशाला है। इसमें १५० एकड़ जमीन और ११२ पशु हैं।

बैंगलोर का ही एक प्रमुख उपनगर मल्लसूर है। सेठ जवरीलालजी मूथा के बनाये हुए उपाश्रय का उद्घाटन हुआ। इसी उपाश्रय में हम ठहरे। शूले में भी उपाश्रय में ठहरे और सेठ जगनमलजी मूथा के बगीचे में ४ व्याख्यान दिये। इसी बगीचे में सुमति ज्ञानालय भी है।

यहाँ से कुक्के टाउन पद्मी सिविंगस रोड तथा गांधी नगर होते हुए चिकपेठ आये। चातुर्मास का काल चिकपेठ के इसी उपाश्रय में व्यतीत करना है। चारों ओर स्वागत एवं हर्षोल्लास का वातावरण छागया।

श्री नारायणजी गोलेछा की धर्म पत्नी श्रीमती भापूबाई ने ५१ दिन की तपस्या का पवित्र अनुष्ठान किया। सारे संघ ने उनको इस तप के लिए अभिनन्दन पत्र व दुशाला मैसूर श्री निजलिंगप्पा के हाथों से भेंट किया एवं भव्य जुलूस निकाल कर उनको बधाइयाँ दी। और भी तपस्याएँ, धार्मिक पोषध, उपवास हजारों की तादाद में शांति पूर्वक सम्पन्न हुए। हजारों गरीबों को भोजन दिया गया। स्व० जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म० की ८८ वीं जन्म जयंति कार्तिक शुक्ला १३ को मनाई गई। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को

जयन्ती के दिन निम्न काव्यांजलि सुनाई गई—

हीरक मुनि के श्री चरणों में काव्यांजली

धरती हँसती है अम्बर भी, अभिनव गीत सुनाता है।
हीरक मुनि के श्री चरणों में, कवि शुभ अर्घ चढ़ाता है॥
अर्घ शान्ति का प्रेम, दया विश्वास, मनुजता, श्रद्धा का।
सत्य, अहिंसा, आत्म धर्म का, सर्वोदय, तप निष्ठा का॥
खण्ड खण्ड हो रहे जगत को, मुनि श्री एक बनाते हैं।
इसीलिये तो क्षितिज झूमता, दिगपति शंख बजाते हैं॥
अटल अहिंसा के व्रतधारी, करुणा घन तप-पूरित हैं।
कविता नहीं हृदय की अजली, सादर आज समर्पित है॥ १॥
एक सुई की नोक बराबर, भूमि बन्धु को दे न सके।
वे कौरव थे, इतिहासों मे नाम स्वय का कर न सके॥
युद्धों से ही सभी समस्या, हल होती थी द्वापर में।
जब कि स्वयं भगवान कृष्ण का, अनुशासन था घर घर में॥
किन्तु आज श्री हीरक मुनिजी, शान्ति मार्ग बतलाते हैं।
दया-धर्म और सत्य अहिंसा, का सन्देश सुनाते हैं॥
नरता का निर्माल्य अपरिमित जनगण मन को अर्पित है।
कविता नहीं हृदय की अजली, मुनि चरणों में वन्दित है॥ २॥
शस्य श्यामला भारतमाता, भूल गई अपने दुखड़े।
हिंसक भूल गये हिंसा को, जीव दया के रत्न जड़े॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, गगनधरा पाताल सभी।
हीरक मुनि के वचनामृत से, कण कण रहता मुखर अभी॥
सन्त शिरोमणि शान्ति-मूर्ति, मुनि हीरालाल सुहाते हैं।
हीरक-प्रवचन की इस-निधि, का मंगल कोष लुटाते हैं॥
सत्य, अहिंसा, शान्ति, दया ही, महा-सन्त का अमृत है।
कविता नहीं हृदय की अजली, सन्त चरण में अर्पित है॥ ३॥

वीर लोंकाशाह जयंती का आयोजन भी सदा स्मरणीय रहेगा। पूरे समाज ने कारोबार धंधा उद्योग बंद रखकर प्रातः स्मरणीय वीर लोंकाशाह को श्रद्धांजलि सिनेमा हॉल में अर्पित की। २०० स्त्री पुरुषों ने मुनिश्री धामचन्द्रजी म० से बारह व्रत स्वीकार किये।

इस प्रकार अनेक उत्सवों आध्यात्मिक समारोहों और नित्य प्रवचनों के साथ बेंगलोर का चातुर्मास संपन्न हुआ। बंबई (कोट) वर्धमान श्रावक संघ के अनेक गण्यमान्य सज्जन बंबई की विनति लेकर आये उसे स्वीकार करके अब बेंगलोर के उपनगरों में होते हुए बंबई के लिए प्रस्थान किया।

● ● ●

यात्रा संस्मरण

卐

कलकत्ता से ७६ मील वर्द्धमान

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
५	भवानीपुर,	श्री हंसराज लक्ष्मीचन्द कामाणी जैन भवन, ३ रायस्ट्रीट कलकता २०	१००
३	पोलोक,	स्ट्रीट न० २७ गुजराती उपाश्रय २०१२ का चौमासा,	सैंकड़ों
४	लिलुआ,	सेठ हजारीमलजी हीरालालजी रामपुरिया का बगीचा,	१०
९	श्रीरामपुर,	सेठ जयचन्दलालजी रामपुरिया का कपड़े का मील,	१०
४	सेव डाफुलि,	सेठ रायरिद्धपालजी अग्रवाल	अग्रवाल
८	चन्द्रनगर	सेठ रामेश्वरलाल वशीधर का आनन्द भवन,	अग्रवाल
९	मगरा,	मंगल चण्डी का मण्डप व कमला राईस मील	५
९	पाडुआ,	मुकुल सिनेमा गोगोलाव वालों का	

झरिया से २५१ मील बनारस

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	करकेन्द	नवीन भाई	१
६	कतरास	नया उपाश्रय	३०
८	चिरुई	स्कूल	×
२	तोप चाची	स्कूल	
८॥	निमियाघाट	सेठ की कोठी	२
३	ईसरी	श्वे० धर्मशाला	१५
११	हसला	स्कूल के सामने वट वृक्ष	×
३	बगोदर	ठाकुर बाड़ी	
१०॥	गोरहर	मोहम्मद सटी खान का भण्डार	
५	बरकठा	नागेन्द्रनाथसिंह सर्किल इन्सपेक्टर	
६	सफरेज	गुमाश्ता मदन मोहनरे	
१०	बरही	डाक बंगला	
४	सिगरावा	सरावगी सेठ सुन्दरलालजी बडजात्या	१
५	चौपारन	जैन धर्मशाला	१०
६	भगुआ	डाक घर	×
६।	धाराचट्टी	स्कूल	
५	डोभी	महन्त त्रिभुवनदासजी का आश्रम	
७	शेरघाटी	थाना	
५	बरही खान मुर्ग	स्कूल	
७॥	रानपुर	बद्रीदास शाह	१
६॥	बनिया मदनपुर	शिवप्रसाद हूनिया	×
१३	औरंगाबाद	धर्मशाला	
७	मोहनपुर	धनधारीसिंह बनारसीसिंह की दुकान	

इलाहाबाद से १२३ मील कानपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	सलम सराय	महारानी के मकान	३
७	पूरा मुमो	काजी होद बरामदा	
१०	मुरतगज	धर्मशाला	
१०	अन्दावा	बाबुलाल दुकानदार के यहां	
११	अजूहा	स्कूल	
६	कटोसन पड़ाव	आटे की चक्की	
५	खागा	सेठ रामदासजी का आईल मील	
८	थरियाव थाना	काजीहोद के पास कमरे में	
८	थिलन्दा	धर्मशाला	
५	फतहपुर	खत्री लक्ष्मी प्रसाद का सिनेमा में	
१०	मलवा	जुनियर स्कुल के बरामदे में	
५॥	गोपालगञ्ज	स्कूल	
६॥	गोधरौली ओंग	स्कूल	
९॥	तिवारीपुरा	स्कूल	
१२॥	चकेरी ऐरो ड्राम	लाला दुर्गादास के मकान पर	४
५	कानपुर	श्री रुक्मणी भवन उपाश्रय छप्पर मुहाल	६०

कानपुर से १८४ मील आगरा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
२॥	गांधीनगर	लाला बुद्धसेन के मकान पर	१५
५	कल्याणपुर	लाला कुन्दनलालजी मित्तल की बगीची	
५	मन्धना	धर्मशाला	
५	चोबेपुर	,,	
६	शिवराजपुर	ग्राम के मध्य चौराहे पर	
५	पूरा	प्राथमिक पाठशाला	
७॥	बिल्होर	हाई स्कूल में मास्टर का निवास	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन	
			×	
६॥	मरोल	माध्यमिक स्कूल		
३॥	सराय मीरा कन्नौज स्टेशन	स्कूल का बरामदा		
४॥	जलालपुर पनवारा	मनिलाल मास्टर का बगीचा		
५॥	गुरसहाय गंज	रामचन्द्रजी का मन्दिर	दि	१
५॥	सराय प्रयाग	माध्यमिक विद्यालय		
१०	छिबरामऊ	धर्मशाला		
५	प्रेमपुर	स्कूल		
८	बेवर	धर्मशाला		
६	परतापुर	स्कूल		
६॥	कल्लुपुरा	पन्सारियों के बरामदे में	दि	१०
५॥	मैनपुरी	रामबाग	×	
८॥	बेवराई	भूपसिंह ठाकुर के मकान पर	दि०	११
३॥	घिरोर	जैन दिगम्बर मन्दिर	दि०	१०
६	आलमाबाद	जैन दिगम्बर मन्दिर	दि०	२०
८	शिकोहाबाद	सोनी की धर्मशाला	×	
७	मक्खनपुर	ग्राम पंचायत का मकान	दि	१००
६	फिरोजाबाद	धर्मशाला	×	
१२	एक ग्राम	धर्मशाला		
६	लोहर चौकी	धर्मशाला	५५	
११	आगरा	मानपाडा स्थानक	५०	
३॥	लोहा मण्डी	जैन स्थानक		

आगरा से ३२ मील भरतपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
८	कंगुठी	नेमचन्दजी के मकान पर	२
८	अछनेरा	बम्बई वालों की धर्मशाला	१

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	चटसना चौकी	स्कूल	×
१०	भरतपुर	जैन स्थानक	२०

भरतपुर से ११०॥ मील जयपुर

६	वसुआ	जैन यादवलालजी पलीवाल के मकान पर	५
६	ढहरा चौकी	नन्दवई मोड पर धर्मशाला	×
६॥	नसवारा	वैष्णव मन्दिर	
६	आमोली	स्कूल	
१०॥	महुवा	जैन धर्मशाला	११
६	पीपल खेडा	स्कूल	
११	मानपुरा	धर्मशाला	
६॥	सिकन्दरा	तिवारा, वादीकुई से आई सड़क यहाँ भी वनी है।	
१६	दौसा	सेठ सोहनलालजी के मील पर ठहरे	४
३	जीरोता	जीर्ण मन्दिर	
१२।	मोहनपुरा	डाक बंगला	
६	काणोतो	धर्मशाला	
६	जयपुर	लाल भवन चौड़ा रास्ता	२००

जयपुर से रेल्वे रास्ते १५६॥ मील नागोर

३	जयपुर स्टेशन	पुगलियों की जैन धर्म शाला	२
६	कनकपुरा	तिवारा	१
६	धनकिया	कबाटर	
१२	आसलपुर जोवनेर स्टेशन	धर्मशाला	
६	हरिनोदा	धर्मशाला	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	प्याऊ	प्याऊ	
६	कुचेरा	उपाश्रय	१००
४	प्याऊ	प्याऊ	
५	[illegible]	उपाश्रय	१५
६	रूण	भेरूजी के स्थान पर	३०
६	नोखा	उपाश्रय	४०
६	हर सोलाव	उपाश्रय	४५
६	[illegible]	उपाश्रय	२५
४	पारसर	मंदिर पर ठहरे	३
४	गोपालगढ़	श्री जैन रत्न विद्यालय	४०
६	हीरा देसर	मंदिर पर ठहरे।	४
५	भिराणी	मंदिर पर ठहरे	२
६	सेवकी	मंदिर पर ठहरे	३
६	दईकड़ो	[illegible] के मकान पर	१
६	जाड़िया	मंदिर पर ठहरे	२
६	बनाथा	स्टेशन	
६	जोधपुर	सिंहपोल	११०

जोधपुर से ६८ मील बालोतरा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	महामंदिर	जैन उपाश्रय	४०
६	सरदारपुरा	कांकरिया बिल्डिंग	५०
४	बासनी स्टेशन	नीम के पेड़ के नीचे	
६	सालावास	मोहरे में ठहरे	४०
[illegible]	[illegible]	जैन धर्मशाला	१६

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	सतलाना	महेश्वरी के मकान पर	८ महेश्वरी
७	माचुन्डा	उपाश्रय	५
५	दुदाडा	पचायती नोहरा	१२५
८	अजीत	खिमराज हसाजी की धर्मशाला	४०
२	भलरो को बाडो	एक भाई के मकान पर	१५
२	कोटडी	जैन स्थानक	१५
६	सेवाली	सेठ रतनमलजी चुन्नीलालजी के मकान पर	१
५	खडप	जैन स्थानक	६०
५	राखी	सेठ आईदानजी लूकड़ के मकान पर	२०
६	करमावास	जैन उपाश्रय	८०
३	समदडी	जैन उपाश्रय	१६०
६	जेठुन्तरी	एक भाई के मकान पर	८
३	पारलु	वाघरमलजी के मकान पर	२०
५॥	जांतया	सावन्तसिंहजी ठाकुर के मकान पर	
६॥	वालोतरा	अन्याव का उपाश्रय २०१३ चौमासा	५००

वालोतरा से १२२ मील घाणेराव सादड़ी

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	मेवानगर नाकोड़ा	जैन धर्मशाला	
४	जसोल	तपागच्छ का उपाश्रय	ते १००१ स्था
६	आसोतरा	दुलीचन्दजी के मकान पर	१५
६	कुसीप	एक भाई के मकान पर	५
४	गढसिवाना	हुँडिया का उपाश्रय	१५०
८	मोकलसर	उपाश्रय	४०
६	वालवाड़ा	जैन धर्मशाला	५०

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	, घर जैन
६	फुलेरा जंक्शन	धर्मशाला	+
५	सांभर	श्वे० जैन मन्दिर	१०
५	गुढ़ा	धर्मशाला	
१	कुचामन स्टेशन	धर्मशाला	दि० १४
५	मीठड़ी	मोहरे में ठहरे	
४	मारवाड़पुरा स्टेशन	धर्मशाला	१
७	कुचामन सिटी	रियां वाले सेठ तेजमलजी मुणोत का मकान में ० ७ दि० अनेक	
११	रसीदपुरा	धर्मशाला	+
१४	डिडवाना	मेसरी भवन	३ मा० १ ० ते
७	कोलिया	स्थानक	२ ते
७	किराप	ठाकुर मन्दिर	
७	कटोती	रामदेवजी का मन्दिर	
६	मारूड	मेसरियों की बगीची	श्वे ३०० मेसरी
॥	खरनाल	जैन स्थानक	११
०	रोल	स्थानक	
२	नागोर	उपाश्रय	६५०

नागोर से ७२ मील बीकानेर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	गोगेलाव	जैन उपाश्रय	३०
७॥	अलाय	पंचायती मोहरा	४०
७॥	बीरो	स्टेशन पर क्वाटर	
८	नोखामण्डी	जैन उपाश्रय	४०
४	नोखा	पंचायती मोहरा	२०
६	पारवो	धर्मशाला	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	रामीसर	एक भाई के मकान पर	७
५	देशनोक	जैन उपाश्रय	२२५
६	प्याऊ	प्याऊ	
५	उदेरामसर	स्कूल	५०
७	बीकानेर	सेठिया का मकान	२००

बीकानेर से १७१ मील जोधपुर

३	भिनासर	सेठ मूलचन्दजी हीरालालजी लूणिया के उपाश्रय में	२००
३	उदेरामसर	एक भाई के मकान पर	५०
६	सुजासर	प्याऊ	
३	प्याऊ	प्याऊ	
९	देशनोक	जवाहिर मण्डल	२२५
४	रामीसर	केसरीमलजी चौरड़िया के मकान पर	७
५	भाभतसर	प्याऊ	
७	नोखा	सरकारी नोहरा	२०
२	नोखा मण्डी	उपाश्रय	४०
४	धवाटर	क्वाटर	
६	वडाखेडा	चम्पालालजी बॉंठिया के मकान पर	४
६	डाणी	पेड़ के नीचे	×
६	गोगोलाव	जैन उपाश्रय	५०
६	नागोर	लोढ़ाजी का उपाश्रय	१५०
४	काटेक्शन	मन्दिर	
९	मुंडेरा	महेश्वरी के मकान पर	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	प्याऊ	प्याऊ	
६	कुचेरा	उपाश्रय	१००
४	प्याऊ	प्याऊ	
५	खजवाना	उपाश्रय	१५
६	रूण	भेरुजी के स्थान पर	३०
६	नोखा	उपाश्रय	४०
६	हरसोलाव	उपाश्रय	४५
६	खजवाणी	उपाश्रय	२५
४	मारसर	मंदिर पर ठहरे	२
४	गोपालगढ़	श्री जैन रत्न विद्यालय	४०
६	हीरादेसर	मंदिर पर ठहरे	४
५	भिराणी	मंदिर पर ठहरे	२
६	सेवकी	मंदिर पर ठहरे	३
६	दईकड़ो	चपालालजी डाटिया के मकान पर	१
६	बाकिया	मंदिर पर ठहरे	२
३	बनाड़	स्टेशन	
८	जोधपुर	सिंहपोल	११००

जोधपुर से ६८ मील बालोतरा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३	महामंदिर	जैन उपाश्रय	४०
३	सरदारपुरा	कार्यकर्ता बिल्डिंग	३०
४	बासनी स्टेशन	नीम के पेड़ के नीचे	
६	सालावास	मोहरे में ठहरे	४०
८	लूणी	जैन धर्मशाला	१६

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	सतलाना	महेश्वरी के मकान पर	८ महेश्वरी
७	भाचुन्डा	उपाश्रय	५
५	दुदाडा	पचायती नोहरा	१२५
८	अजीत	खिमराज हसाजी की धर्मशाला	४०
२	भलरो को वाडो	एक भाई के मकान पर	१५
२	कोटडी	जैन स्थानक	१५
६	सेवाली	सेठरतनमलजी चुन्नीलालजी के मकान पर	१
५	खडप	जैन स्थानक	१०
५	राखी	सेठ आईदानजी लूकड़ के मकान पर	२०
६	करमावास	जैन उपाश्रय	८०
३	समदड़ी	जैन उपाश्रय	१६०
६	जेठुन्तरी	एक भाई के मकान पर	८
३	पारलु	वाघरमलजी के मकान पर	२०
५॥	जातिया	सावन्तसिहजी ठाकुर के मकान पर	
६॥	वालोतरा	अन्याव का उपाश्रय २०१३ चौमासा	५००

वालोतरा से १२२ मील घाणेराव सादड़ी

६	मेवानगर नाकोड़ा	जैन धर्मशाला	
४	जसोल	तपागच्छ का उपाश्रय	ते १०० १ स्था
६	आसोतरा	दुलीचन्दजी के मकान पर	१५
६	कुसीप	एक भाई के मकान पर	५
४	गढसिवाना	हुँडिया का उपाश्रय	१५०
८	मोकलसर	उपाश्रय	४०
६	वालवाड़ा	जैन धर्मशाला	५०

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	बिसनगढ़	जैन धर्मशाला	१००
८	आकोरगढ़	उपाश्रय	२०० श्वे
८	गोधन	एक भाई के मकान पर	२५ श्वे
५	आहोर	जैन धर्मशाला	७५ श्वे
१०	उम्मेदपुरा	जैन धर्मशाला	१० श्वे
६	तखतगढ़	जैन धर्मशाला	२० श्वे
६	बलाणा	जैन धर्मशाला	४० श्वे
८	सांडेराव	जैन धर्मशाला	५०
७	फालना	श्वे जैन धर्मशाला	९ स्था
१२	मुंडारा	उपाश्रय	२००
५	सादड़ी	लोंकाशाह गुरुकुल	१०

सादड़ी से ६५ मील उदयपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
०	राणकपुर	जैन धर्मशाला
८	मघा	जैन धर्मशाला
६	सायरा	उपाश्रय में ठहरे
६	कम्बोल	जैन मंदिर
१	पदराडा	मधुलालजी के मकान पर
७	तिपाल	एक भाई की दुकान पर
३	बराकेराम	एक भाई के मकान पर
६	गोगुन्दा	श्वे जैन धर्मशाला
६	मालवीगुडा	इच्छादेवी का मंदिर
८	भूर	रामलालजी कोठरी
५	विद्याभवन	विद्याभवन
२	उदयपुर	पौषधशाला

उदयपुर से ७६॥ मील चितोड़गढ़

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१	आयड	सेठ केशुलालजी ताकडिया के मकान पर	
५॥	देवारी	एक भाई के मकान पर	
५	डबोली	जीतमलजी सिंघवी के मकान पर	
५	वरोक	एक भाई के मकान पर	
५	भटेवर	मंदिर पर ठहरे	
६	मेनार	स्कूल पर ठहरे	
३	वानो	मंदिर पर ठहरे	
१०	मंगलवाड	पचायती नोहरे की दुकाने	
६॥	भादसोड़ा	पचायती नोहरे में ठहरे	
१२	नाहरगढ	एक भाई की दुकान पर	
१०॥	सेंती	सेठ फतेलालजी मडकत्या के मकान पर	
४	चितोड़गढ	श्री जैन चतुर्थ वृद्धाश्रम	

चितोड़गढ़ से १८६ मील बड़ी सादड़ी होकर रतलाम

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१॥	तलेटी	उपाश्रय
६	घरघावली	गणेशनलजी गाग की दुकान पर
३	गरूंड	जैन मंदिर
८	मागरोल	पटवारी जी की दुकान पर
६	निम्बाहेड़ा	उपाश्रय
८	मल्ला	वैष्णव मंदिर
३	विसोता	उपाश्रय
६॥	निकुम	उपाश्रय
६	पिलाणो	रावजी के चौतरे पर

रतलाम से १२० मील उज्जैन देवास से इन्दौर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१	स्टेशन	बांसवाड़ा वालों का मकान
६	बागरोद	अस्पताल
५	रुनखेड़ा	एक भाई का बरामदा
७	थडोदा	मन्दिर पर
५	खाचरोद	उपाश्रय
४	बुडावन	मन्दिर पर
६	नागदा	धर्मशाला उपाश्रय
४	रूपेटा	जैन मन्दिर
४	भोर खेड़ा	एक भाई के मकान पर
३	मुंडला	एक भाई के मकान पर
५	महिदपुर	उपाश्रय
४॥	महु	एक के मकान पर
७	कालुहेडा	एक भाई के मकान पर
४	पान बिहार	सरकारी केन्द्र
८	भैरूगढ़	जैन मन्दिर
२	नयापुरा उज्जैन	उपाश्रय
१॥	नमक मण्डी	उपाश्रय
२	फ्रीगंज	सेठ पाचुलालजी का बंगला
५॥	चन्देसरा	एक भाई के मकान पर
५॥	नरवर	मन्दिर पर
३	पान खन्वा	स्कूल
९	देवास	उपाश्रय
७	क्षिप्रा	अहिल्या सराय

खाचरोद से ५७ मील जावरा मन्दसौर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	बरखेड़ा	प्राथमिक पाठशाला
४	घडावदा	उपाश्रय
५	डरवेडयो	राजपूत के मकान पर
५	जावरा	उपाश्रय
६	रीछा चाँदा	स्कूल
८	कचनारा	उपाश्रय
३	नगरी	उपाश्रय
६	धुधड़का	पन्नालालजी के दरी खाने में
३	फतेहगढ़	राम मन्दिर
५	खलचीपुरा	उपाश्रय
३	जनकूपुरा	उपाश्रय
१	शहर मन्दसौर	महावीर भवन
१	खानपुरा	कस्तुरचन्द उपाश्रय

मन्दसौर से १०१ मील प्रतापगढ सैलाना रतलाम

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	खूणी	वैष्णव म न्दर
७	डावड़ा	राम मन्दिर
७	प्रतापगढ़	उपाश्रय
६	वेरोद	शान्तिलाल नरसिंघपुरा के मकान,प
६	अरणोद	उपाश्रय
७	भावगढ	उपाश्रय
४	करजु	पचायती नोहरा
३	नन्दावता	जैन मन्दिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	नागदा	उपाश्रय
८॥	अत्तारद	राम मन्दिर
६॥	धार	बनिया बाड़ी का उपाश्रय
५	पिपल खेड़ा	आनन्द अनाथालय
३	गुनावद	राम मन्दिर
७	घाटा बिल्लोद	एक ब्राह्मण के घर
६॥	बेटमा	सेठ बसन्तीलालजी के मकान पर
८	कलारिया	उपाश्रय
६	राज मोहल्ला	धर्मदास मित्र मण्डल
१	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से १८४ मील जलगांव

५	कस्तुरबा ग्राम	स्कूल
८	सिमरोल	धर्मशाला
६	बाई	जमना बाई का मकान
८	बलवाड़ा	धर्मशाला
५	उमरिया चौकी	पुन्नाजी ब्राह्मण का मकान
५	बडवाह	जैन धर्मशाला उपाश्रय
३	मोरटक्का	दिगम्बर जैन धर्मशाला
४	सनावद	गोपी कृष्ण बाहुती धर्मशाला
७	धनगाँव	लक्ष्मीनारायण का मंदिर
५	रोशिया	एक भाई के मकान पर
७	भोजाखेड़ी	मंदिर पर ठहरे
३	छेगाव-मखन	सेठ छज्जुराम के मकान पर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	सांवदा	श्वे० जैन मंदिर
६	कुलहार	स्कूल का बरामदा
३	मंगाला	स्कूल
६	बोरगांव	सेठ मोतीलालजी मांगीलालजी के मकान पर
६॥	देडला	जैन धर्मशाला
५॥	आसीरगढ़	जैन धर्मशाला
७॥	निम्बोला	धर्मशाला
४॥	बुरहानपुर	सामान गोदाम में स्टेशन के निकट
२	बुरहानपुर शहर	एक भाई के घर
७	शाहपुर	स्कूल
७	इच्छापुर	हनुमानजी का मंदिर
११	एदलाबाद	जैन उपाश्रय
४	हरताला	उपाश्रय
७	वरणगांव	देवकी भवन
६	भुसावल	सेठ स्वरूपचन्दजी जैन के मकान पर ठहरे
६	साकेगांव	ग्राम पंचायत का मकान
७	नसिराबाद	पंचायती नोहरा
६	जलगांव	सागर भवन

जलगांव से १०१ मील जालना

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	कसुंबे	स्कूल
६	नीरी	राम मंदिर
१०	पहूर	पन्नीबाई के मकान पर
६	वाकोद	स्कूल
३॥	फर्दापुर	मील में ठहरे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
३॥	लेणी अजन्ता	गलीच रूम
७	अजठा	राम मन्दिर
७॥	गोलेगाव	जीन प्रेस मे ठहरे
११॥	सिल्लोड़	स्कूल के बरामदे में

यहां से औरंगाबाद का रास्ता जाता है

८	भोकरदन	बालाजी का मदिर
८॥	केदार खेड़ा	हनुमानजी का मदिर
३॥	चापाई पडाव	झाड़ के नीचे
८	पागरी	मदिर पर ठहरे
४	पिपलगाँव	मल्हाररावजी की चक्की
६	जालना	उपाश्रय

जालना से रेल्वे रास्ते ३०६ मील हैदराबाद

५	सारवाडी	हनुमान मदिर
७	वडी	हनुमान मदिर
८	राजणी	बालाजी का मदिर
१॥	चोकी	झाड के नीचे
७	परतुड	कच्छी के जीन में
२	रायपुर	हनुमान मदिर
६	सातोना	समाधि स्कूल
६	सेलु	रामवाड़ा
६	पिपलगाँव की चोकी	झाड के नीचे
४	कोला	हनुमान मदिर
६	पेढ़गांव स्टेशन	नीम के झाड़ के नीचे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८	परभणी	उपाश्रय माईल मील
७	पींगली	केसरीमलजी रतनलालजी सोनी के मकान
४	मिरखेल	स्टेशन का बरामदा
८	पूरणा	उपाश्रय गुजराती का मकान
६	चुडावा	स्टेशन का बरामदा
११	नांदेड	उपाश्रय
२	चोकी	चोकी पर
७	मुदखेड	हनुमान मंदिर
६	सुगाव	स्टेशन पर
१०	गोरठ	साईनाथ का मंदिर
२	उमरी	बिनोदीराम बालचन्द के कॉटन मील पर
१०	करखेली	स्टेशन पर
८	धर्माबाद	हनुमान मंदिर
६	बासर	स्टेशन पर
६	नवीपेठ	राम मंदिर
६	निजामाबाद	गोपालदासजी का दाल का कारखाना पर
८	डिचपल्ली	जकनी का कारखाना पर
७	गजाराम	बंकटराव के मकान पर
४	सिरनापल्ली	स्टेशन
६	उपलवाई	स्टेशन
७	कामारेड्डी	जैन स्कूल
७	बेगमपल्ली	कुमरी के घर पर
४	बीकनूर	स्कूल
६	रामायमपेठ	गरमी में ठहरे
६	मारसीगी	धर्मशाला आम के पेड़ के नीचे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
११	मासाई पेठ	हनुमान मदिर
४	तुपरान	गरणी के वरामदे में
५	मनोहराबाद	एक भाई के यहां
४	कालाकिल	हनुमान मंदिर
६	मेरचल	क्लय में
६	बोलारम्	उपाश्रय
३	तिरमलगिरी	सरकारी पोलीस बगला
४	सिकन्दराबाद	उपाश्रय
४	काचिगुडा	गाधी पूनमचन्दजी की जैन धर्मशाला
२	हैदराबाद	उविरपुरा उपाश्रय
३	समशेरगज	राजस्थानी पुस्तकालय
२	चारकमान	पुनमचन्दजी गाधी के मकान पर
७	बेगमपेठ	पुनमचन्दजी की कोठी
३	कारखाना	मोतीलालजी कोठारी का मकान पर
४	पिकट	हनुमान मंदिर
३	सिकन्दराबाद	उपाश्रय में चातुर्मास किया २०१५ का

सिकन्दराबाद से १४५ मील रायचूर

२॥	बेगमपेठ	सेठ पुनमचन्दजी गाधी की कोठी
६॥	बेगम बाजार	रामद्वारा
२	सुलतान बाजार	गुजराती स्कूल
२	चार कमान	उर्द बाजार. अग्रवाल भवन.
१	उबीरपुर	उपाश्रय
२	समशेरगंज	राजस्थानी पुस्तकालय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८	कोमगो	आइल मील
६	पेद्दतुम्ड	मंदिर
५	हनुमान मंदिर	मंदिर दर्शनीय स्थान
७	आदोनी	श्वे. धर्मशाला
६	नानापुर	मंदिर
११	आलुर	हिन्दी प्रेमी तालुका स्कूल
६	नानकल	मंदिर
४॥	मीपगिरी	मंदिर
६॥	गुटकल	गन्डकोट वाले के मकान पर
५	कोनकोनला	शिव मंदिर
६	वज्राकुर	हाई स्कूल
४	रागलपाडु	समाधि पर
८	उरल कोन्डा	जीन प्रेस पर
३	तुम्हुर	स्कूल
६	चल्लापल्लि	धर्मशाला
५	कुरनापुर	नीम के झाड़ के नीचे
३	कुडेल	स्कूल
६	रामनपल्लि	मंदिर. स्टेशन पर नीम के नीचे
५	अनंतपुर	एक भाई के मकान पर
५॥	रातोड़	पंचायती बोर्ड का आफिस
६॥	मरूर	डाक बंगला
३	नानिलीपल्लि	सरकारी मकान
६॥	हयामाञिपल्लि	स्कूल
२॥	सरँपल्लि	स्टेशन पर
६	गुट्टुर	महादेव का मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
४।	हनुमान मंदिर	मंदिर
४	वेंकटु का	पहाड़ी रास्ता पर
६	सोमेदे पल्लि	मंदिर
६॥	तालाब की पाल	झाड़ के नीचे
६॥	हिन्दुपुर	डाक बंगले पर
४।	बसंतपल्लि	मंदिर
१२	गोरी बिदनूर	डाक बंगला
८	होर्सेमाबि	डाक बंगला
५	एकगाम	नीम पिपल के झाड़ के नीचे
११	दोड बालापुर	एक भाई के नये मकान पर
३॥	मारसंदरा	डाक्टरजी के यहां
६	यलाहंक	धर्मशाला
४	हुब्बाल	खेती बाड़ी वाला स्कूल
४	मलेश्वर	सेठ गुलाबचन्दजी के मकान पर
४	चिकपेठ	उपाश्रय

बैंगलोर के बाजारों में ४४ मील का विहार

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
२	शूला बाजार	उपाश्रय
६	मल्लपुर	उपाश्रय
३॥	बिमानपुर	जैन मंदिर
६	लाली बुरज	उपाश्रय
॥	गोरेमरी	उपाश्रय
२	गन्धरूप	स्कूल
६	बिसाल पल्लि	उपाश्रय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	चन्नेनहल्लि	स्कूल
१॥	पांडुपुरा	राम मंदिर
७॥	चिनकुरली	स्कूल
१२	कृष्णराजपेठ	कैम्प
८	ककेरी	मंदिर
६	श्रवण बेलगोला	धर्मशाला
६	ककेरी	स्कूल
५	कृष्ण राजपेठ	मंडी मंदिर
४	तुम्बहल्लि	स्कूल
८	चिनकुरली	डाक बंगला
८	पाण्डुपुरा स्टेशन	टी बी. बंगला
४	श्रीरंगपट्टनम्	टी बी बंगला
७	सिविजन कालेज	कालेज
२	मैसूर	व्यापारी जैन धर्मशाला

मैसूर से कनकपुरा होकर ९६ मील बैंगलोर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१२	बुदानूर	पी डी बंगला
११	पाण्डुपुरा	मंदिर
५॥	बेलगाहल्लि	मंदिर
५॥	हुनकेरे	कारखाना के बरामदे में
५	मद्दूर	मंदिर
५॥	निडगट्टा	स्कूल
८॥	चिन्नपट्टन	मंदिर
७	रामनगर	कैम्प

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	मलया हल्लि	स्कूल
४	विरदी	स्कूल
७	डाक बंगला	बंगला
५	कगेरी	छत्रम
६	साम्राजपेठ	पारसमलजी के मकान पर
५	शूलें	साकमा का मकान
१॥	बंगला	सेठ कुंदन मलजी लूंकड़ का
३॥	मेरचरी	शिवाजी छत्रम २०१६ चौमासा किया

बेंगलोर के बाजारों का विहार २८मील

२	शूले बाजार	उपाश्रय
६	यशवंतपुर	मोहनलालजी छाजेड़ का मकान
३	मलेश्वर	गुलाबचन्दजी का मकान
१	नागाप्पा ब्लाक	मंदिर
२	गांधीनगर	बणकर छात्रालय
२	मामडीरोड़	नई बिल्डिंग
२	चिकपेठ	उपाश्रय
२	ब्लाक पल्लि	उपाश्रय
१॥	मार्केट पालिया	स्कूल
१॥	कालीतुर्क	उपाश्रय
१॥	अलसुर	बोरदिया के मकान पर
५	सिगायन पालिया	प्रेमबाग

बेंगलोर से २६२॥ मील मद्रास

५	व्हाईट फील्ड	बंगले
७	हास कोटा	राम मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८	आरकोणम्	कन्हैयालालजी गादिया के मकान पर
६	पेरल्लुर	स्कूल
९	थिरकाचीपरम	मेथो श्री नायक वेल के मकान पर
१।।	छोटी काजीवरम	चंपालालजी मुचती के मकान पर
४।।	अयम पेठ	हाई स्कूल
४	वालाजाबाद	अमोलकचन्दजी आछा के मकान पर
५	तिनेरी	स्कूल
६	सुगाछत्रम्	संयोगम मुदलियार के मकान पर
६	श्री पेरमतूर	अग्रवाल छत्रम्
६	श्री रामपालियम	राम मन्दिर
५	तिरुवल्लूर स्टेशन	छत्रम्
८	मिवल्लूर	उपाश्रय
५	मेवा पेट	स्टेशन का मुसाफिर खाना
७	पट्टाभिराम	रंगलालजी भंडारी का मकान
६	तिरमसी	केवलचन्दजी सुराना का मकान
३	बड़ी पुन्नमल्ली	छत्रम
१	छोटी पुन्नमल्ली	गोविन्द स्वामी के मकान
४।।	मदुराई वार्डल	मिट्ठालाल बाफना का मकान
४	अमजी गेढा	जुगराजजी दुगड का मकान
१।।	बापालाल भाई	सूरजमल भाई का बगला
२	साहूकार पेट, मद्रास	उपाश्रय

मद्रास के बाजारों का ६१ मील विहार

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८	पुरिपपाकम	देवराज का नया मकान
८	अयनावरम	सोहनलाल कामद का मकान

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
		मंदिर
७॥	मुकबाल	स्कूल
२	वावरीबेरा	बंगला
५॥	नरसीपुरा	स्कूल
३॥	कनाड़ी	छत्रम्
७	कोलार	छत्रम्
११	बागर पेठ	उपाश्रय
८	रावटराम पेठ	उपाश्रय
१॥	धम्बरराम पेठ	उपाश्रय
१॥	रावटराम पेठ	डाक बंगला
५	बैत मंगलम्	पुलिस चौकी
५	सुन्दर पालयम्	डाक बंगला
६	धीकोल	डाक बंगला
६	मावकनेर	मोहनलालजी के मकान पर
६	पेरना पेठ	स्कूल
६	मोरासवाड़ी	स्कूल
५	गुडियातम	एक भाई के मकान पर
६	पसीकुडा	छत्रम्
६	विरिंचीपुरम	उपाश्रय
८	वेल्लुर	स्कूल
८	पुटुवाक	पंची आश्रम
७	भरकाड	कैंबर गुमियम
९	रानी पेठ	स्कूल
४	मामूर	सरकारी मकान पर
५॥	पेरम्बापुरम	छत्रम्
५॥	पोलिंगए	पंचायती बोर्ड
६	पारांची	

मद्रास से १७६ मील पांडीचेरी विहार

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
४	मेलापुर	उपाश्रय
२	नकशा बाजार	उपाश्रय
२	महा बलम	श्वे० स्था० जैन बोर्डिंग
८	परम्बूर	उपाश्रय
८	तु गलाछत्रम्	बागाजी का मकान
२	केसर बाड़ी	उपाश्रय
६	अयनावरम्	एक भाई का मकान
६	महाबलम्	श्वे० स्था० जैन बोर्डिंग
२	शैदापेठ	उपाश्रय
२	मलन्दूर	विजयराजजी मूथा का मकान
४॥	पल्लावरम्	चौसुलालजी का मकान
४॥	ताम्बरम	नया उपाश्रय
७	गुड़वाचेरी	नया मकान
७	सिंग पेरूमाल कोइल छत्रम	
६	चगलपेठ	कुन्दनमलजी का मकान
४	विमेली	स्कूल
४	तिरकलीकुन्दम	छत्रम्
१०	महाबली पुरम्	"
१०	तिरकली कुन्दम्	"
७	पल्लीवरम्	स्कूल
७	करुणगुडी	मन्दिर
२	मधुरान्तकम	श्री अहोबिल मठ कला शाला
६	सोत पाकम्	स्कूल
६	अचरापाकम्	एक भाई की दुकान

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८॥	कमत मवाड़ी	स्कूल
८	आरनी	एक भाई के मकान पर
८॥	मोसूर	स्कूल
६॥	आरकाट	गाधी आश्रम
७।	पुरस्नाक	स्कूल
८।	वेल्लूर	उपाश्रय
६	वीरचोपुरम्	छत्रम्
६	पलिकुण्डा	एक भाई के मकान पर
६॥	गुढियातम	स्कूल
१०॥	पेरनापेठ	सोहनलालजी के मकान पर
५॥	कोतूर	स्कूल
६॥	आसूर	नये छत्रम् में
११॥	पेरनापेठ	सोहनलालजी काकरिया
६	नायक नेर	डाक बंगला
९॥	वीकोटा	डाक बंगला
६	सुन्दरपालयम्	स्कूल
५	वेद मंगलम्	डाक बंगला
५	रावर्टशन पेठ	उपाश्रय
२	अन्डरसन पेठ	स्कूल
२	रावर्टशन पेठ	उपाश्रय
८	वगार पेठ	छत्रम्
११	कोलार	छत्रम्
६	नरसापुर	टाउन हॉल
६	युग माल	मन्दिर स्कूल
७॥	होस कोटा	साई मन्दिर

वगलोर से १४६॥ मील दामन गेरे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
३	जालहल्ली	भारत मीटल इन्डस्ट्रीज
६	नल्लमगल	हनुमान मन्दिर
५	वेगुर	स्कूल
२	कुरणाहल्ली	स्कूल
५	दाउस पेठ	डाक बंगला
६	हीर हल्ली	पचायती बोर्ड के मकान पर
७	तुमकूर	श्वे० मन्दिर के पीछे उपाश्रय
७	कोरा	स्कूल
८	सीवा	स्कूल
८	शीरा	कुटामा छत्रम
७	तावर केरे	मन्दिर
५	जोगनहल्ली	स्कूल
८	आदि वल्ले	मन्दिर
४	हिरियूर	जैन धर्म शाला
१२	आई मगला	पचायती बोर्ड का मकान
१३	चित्र दुर्ग	उपाश्रय
११	बीजापुर	पंचायती बोर्ड का मकान
८॥	ब्रह्मसागर	सरकारी नये मकान
१०	आनगुड़	पंचायती बोर्ड का मकान
१०	दावन गेरे	शिव मंदिर के पास लिगायत गुडी

मैसुर से २१३॥ मील दामन गेरे

५	सीदलीगपुर	+
६	श्री रगपटनम्	ब्राह्मण

मील	ग्राम	घर
६	चनगिरी	४ जैन घर
७	हसनगट्टा	×
५	शान्तिसागर	२ जैन घर
७	डोडिगट्टा	लिंगायत
२	कावेगे	ब्राह्मण
८	उकड़ा	×
४	हादड़ी	×
४	दामनगेरे	८५ घर जैन

दामनगिरी से २२० मील कोल्हापुर

६	हरिहर	डाक्टर का मकान
७	चलगेरे	स्कूल
७	राणीबिंदनूर	जैन धर्मशाला
८	ककोला	स्कूल
५	मोटीबिंदनूर	बस स्टेन्ड
७	हवेरी	एसोसियेशन
८	कुणीहल्ली	स्कूल
६	बकापुर	पचायती बोर्ड
६	मिगाव	विट्ठल मन्दिर
४	गुटगुडी	हनुमान मन्दिर
८	जिगलूर	शिव मन्दिर
११	आदरगु ची	स्कूल
६	हुबली	कच्छी ओसवाल का उपाश्रय
४	भाईरीदे धर कोप	मन्दिर
८॥	धारवाड़	श्री श्वे० धर्मशाला

मील	ग्राम	घर
६	चनगिरी	४ जैन घर
७	हुमनगट्टा	×
४	शान्तिसागर	२ जैन घर
७	डोढिगट्टा	लिंगायत
२	कावेरी	ब्राह्मण
८	उकड़ा	×
६	हादड़ी	×
४	दावनगेरे	८५ घर जैन

दावनगिरी से २२० मील कोल्हापुर

६	हरिहर	डाक्टर का मकान
७	चलगेरे	स्कूल
७	राणीबिदनूर	जैन धर्मशाला
८	ककोला	स्कूल
५	मोटीबिदनूर	बस स्टेन्ड
७	हवेरी	एसोसियेशन
८	कुणोहली	स्कूल
६	बंकापुर	पंचायती बोर्ड
६	सिगांव	विट्ठल मन्दिर
४	गुदगुडी	हनुमान मन्दिर
८	शिगनूर	शिव मन्दिर
११	आदरगुची	स्कूल
६	हुबली	कच्छी ओसवाल का उपाश्रय
४	माहरीदे वर कोप	मन्दिर
८॥	धारवाड़	श्री श्वे० धर्मशाला

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१०	जेसिंगपुर	उपाश्रय	१५ स्था० ८ ते०
३	अकली	सडक के किनारे	दिगम्बर भाई के यहा
६	मीरज	कच्छी धर्मशाला	अनेक घर
६	सागली	उपाश्रय	४० स्था०
२॥	माधव नगर	उपाश्रय	१५ स्था०
३	कमलापुर	श्वे० मन्दिर	१ जैन
८	ताम गाव	दुगड़ के मकान पर	१५ स्था०
४	निमणी	स्कूल	०
१०	पलूस	सेठ माधवरावजी ब्राह्मण के यहां	
७	ताकारी	गुजराती भाई	६ गु० जैन
३	भवानीपुर	गुजराती भाई	५ जैन घर
४	शेणोली	पाण्डुरंग मन्दिर	४ गुजराती घर है
१	शेणोली स्टेशन	स्कूल	१ गुजराती है
६	कराड स्टेशन	एक चाली में	८ कच्छी जैन है
३	कराड	हाजी अहमद हॉल	१० स्था०
१०॥	उम्रज	गु० चाणस्याशाला	५ गु० मा० है
		सड़क के पास तेल की मशीन	
६	अतीत	मन्दिर	१ गुजराती है
३	नागठाणे	हाई स्कूल	०
१०	सातारा	पेट्रोल पम्प	२ गु० है
१	सातारा	उपाश्रय	१५ जैन का है
१	सातारा	पैट्रोल पम्प	२ गु० का है
६	वडूथ	आईल मिल	१ गु० का है
६	शीवथर	स्कूल	२ गु० के है
२॥	देउर	एक भाई के घर	१० गु० के है
३	वाठर	रमणीकलाल शाह	२ गु० के है

पनवेल से ३० मील बम्बई

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१	शांति सदन	रतनचन्दजी का बंगला
३	तलुजा	एक भाई का मकान
४	बंगला	सेठ कस्तुर भाई लालभाई
७	मुंब्रा	मोरारजी का ऊपर का बंगला
४	थाना	उपाश्रय
५	भाडुप	उपाश्रय
५	घाटकोपर	उपाश्रय

बम्बई के बाजारों में ठहरने की जगह

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	विर्लेपारला	उपाश्रय
२	खार	उपाश्रय
४	माटु गां	उपाश्रय
१	शीव	उपाश्रय
३	दादर	उपाश्रय
३	चींचपोकली	उपाश्रय
३	कादावाडी	उपाश्रय
२	कोट	उपाश्रय
	कांदावल्ली	उपाश्रय
	बोरीवल्ली	उपाश्रय
	मलाड	उपाश्रय
	अंधेरी	उपाश्रय

पत्ता –

१ मगनलालजी शाह एण्ड कंपनी मु. जय सिंगपुर जिला. कोल्हापुर
एस. रेल्वे

२ सेठ कस्तूरीरामजी इन्द्रचन्दजी बरडिया
मु. जयसिंगपुर जिला-कोल्हापुर

३ सेठ नरोत्तमदासजी नेमीचन्द शाह ठी. वखार भाग मु. सांगली

४ रमणीकलालजी हरजीवनदासजी शाह C/o बाम्बे स्टोर्स
की मेनरोड मु. सांगली

५ सेठ रतीलालजी विठ्ठलदासजी गांधी
मु. माधवनगर जिला कोल्हापुर

६ शान्तुमलजी भनराजजी बोथरा ठी. गुरुवार पेठ
मु. तासगांव जिला-सांगली

७ सेठ कस्तूरीदासजी माईचन्दजी पेट्रोल पंप ठी पोईनाका मु. सातारा

८ मेसर्स मोहनदासजी हस्तीमलजी मुथा बैंकर्स मरचेन्ट
भवानी पेठ मु. सातारा

९ सेठ नेमीचन्दजी नरसिंहदासजी गुगलिया ठी. भवानी पेठ मु. सातारा

१० शाह केशिंगभाईजी नागरदासजी जैन मु. कोरेगांव जिला-सातारा

११ सेठ मानकचन्दजी बस्तराजजी पुनमिया ११३० रविवार पेठ
मु. पूना २

१२ सेठ मिश्रीमलजी सोभागमलजी बोरा मु. खिडकी जिला-पूना

१३ सेठ सुन्दरमलजी कुशराजजी गुगलिया मु. चिंचवड जिला-पूना

१४ सेठ मुलतानमलजी गोपीदासजी सचेती मु. चिंचवड जिला-पूना

१५ सेठ जसराजजी लालचन्दजी बलदोटा पेरणेफाटा जिला पूना

१६ सेठ माणिकचन्दजी रतनमलजी नाहटा मु. वडगांव जिला पूना

१७ सेठ चांदमलजी माणकचन्दजी मु. कामशेत जिला–पूना

१८ सेठ शांतिलालजी हंसराजजी गुगलिया मु. लोणावळा जिला-पूना

१९ सेठ रतनचन्दजी भीकमदासजी कोठारी
मु. पनवेल जिला कुलाबा

मुनि विहार....

तपस्वी मुनि श्री लाभचन्दजी म

लीलुआ

ता० ३-१२-५५ :

आज हम लोग ७ मुनि* चातुर्मास समाप्त करके कलकत्ता से विहार कर रहे हैं। मुनियों को चातुर्मास का समय किसी एक ही शहर में व्यतीत करना पड़ता है। प्राय. जैन मुनि राजस्थान मध्यप्रदेश, पजाब, गुजरात, सौराष्ट्र आदि ऐसे प्रान्तों में ही विचरण करते हैं, जहा धर्मानुयायियों की सख्या काफी है। उन प्रान्तों को छोड़कर कलकत्ता तथा इसी तरह के अन्य सुदूर प्रान्तों में साधु साध्वियों का आगमन पहले तो करीब करीब नहीं ही था। अब भी बहुत कम है। परन्तु हम ७ मुनियों ने इतना लम्बा रास्ता पार करके यहा आने का साहस किया। यहाँ सन् १९५३ का चातुर्मास बहुत सफलतापूर्वक सपन्न हुआ। ऐसा अनुभव होता है कि यदि हम जैन मुनि कुछ व्यापक दृष्टि से काम करें, तो यह बगाल, बिहार, उड़ीसा, आदि का क्षेत्र हमारे लिए बहुत सुन्दर कार्य-क्षेत्र सिद्ध होगा।

आज प्रात काल कलकत्ता से जब हम रवाना हुए, तो हमें विदा करने के लिए हजारों व्यक्ति एकत्रित हो गये थे। यह स्वाभाविक भी था। कलकत्ता भारत की व्यापारिक राजधानी है। इसलिए भिन्न-भिन्न प्रान्तों से हजारों की सख्या में जैन धर्मानुयायी लोग यहा

---

* १ मुनि श्री प्रतापमलजी, २ मुनि श्री हीरालालजी ३. मुनि श्री दीपचन्दजी, ४. मुनि श्री बसन्तलालजी, ५ मुनि श्री राजेन्द्र मुनिजी ६. रमेशमुनिजी, ७ स्वय लेखक।

व्यापार के निमित्त आये हुए हैं। खास तौर से गुजरात तथा राजस्थान के जैन-भाई बहुत बड़ी संख्या में यहां हैं। सभी ने मुनियों को भरे हुए मन से विदा किया।

कलकत्ता शहर से चलकर हम लोग चार माइल पर स्थित कलकत्ता के ही उपनगर लीलुआ में आकर रामपुरिया गार्डन में रुके हैं। चारों ओर कलकत्ता का मानव-समाज घिरा है। सब की आंखों में वियोग का यदि दर्द है तो पुनरागमन की आशा भी है।

बर्दवान

ता० ११ १२ ५५ :

हम बंगाल की शस्य-श्यामल भूमि को पार करते हुए निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। कभी ८ मील कभी ९ मील। कभी इससे भी ज्यादा। किसी भी प्रदेश या स्थान का पूरा अध्ययन करना हो तो पाद-विहार से ज्यादा अच्छा और कोई माध्यम नहीं हो सकता। छोटे-छोटे गांवों में जाना, नदी नाले पर्वत पहाड़ सबको पार करते हुए ग्राम-जीवन का दर्शन करना पद-यात्रा में ही संभव है। हम देखते हैं कि किस प्रकार किसान सवेरे से शाम तक कड़ी मेहनत करके देश के लिए अन्न पैदा करते हैं पर वे स्वयं गरीब तथा असहाय के असहाय बने रहते हैं। उनके पास हरे-भरे मन-मोहक खेत हैं, पर उनके बाल-बच्चों का भविष्य तो सूखा-का-सूखा है। स्वयं उनकी किस्मत भी हरी-भरी नहीं।

खास तौर से यह बंगाल देश तो बहुत ही गरीब है। यहां के किसानों तथा खेतीहर मजदूरों के चहरे पर न तेज है, न उत्साह है और न स्वस्थता की अनुभूति है। जिस बंगाल में रवीन्द्रनाथ जैसे महान् लेखक हुए बंकिमचन्द्र तथा शरत्चन्द्र जैसे महान् उपन्यासकार

हुए, जगदीशचन्द्र बसु जैसे महान् वैज्ञानिक हुए, सुभाषचन्द्र बोस जैसे महान् देश सेवक हुए, चैतन्य महाप्रभु रामकृष्ण परमहंस और अरविन्द घोष जैसे महान् आध्यात्मिक पुरुष हुए उस बङ्गाल की आम जनता का जीवन कितना शोषित, पीड़ित और बेसहारा है, यह पाद विहार करते हुए अच्छी तरह से अनुभव हो जाता है।

कलकत्ता से चलने के बाद श्री रामपुर, सेवड़ाफुली, चन्द्रनगर मगरा, पडुवा, मेमारी, शक्तिगढ़ आदि गावों में रुकते हुए बंगाल के सुप्रसिद्ध नगर बर्दवान पहुँचे हैं। पहले बिहार, बङ्गाल, उड़ीसा क्षेत्र जैन धर्म के केन्द्र रहे हैं। इस शहर का नाम श्रमण भगवान वर्धमान के नाम से पड़ा है।

हम सातों मुनि यहाँ से तीन भागों में बटकर तीन दिशाओं में रवाना होने वाले हैं। मुनि श्री हीरालालजी म० झरिया की ओर मुनि श्री प्रतापमलजी म० सैंथिया की ओर तथा हमने रानीगंज की ओर विहार किया।

दुर्गापुर

ता० १८-१२-५५ :

आज हम हिन्दुस्तान के नये तीर्थ दुर्गापुर में हैं। सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ भारत अब आजाद है और स्वतन्त्रतापूर्वक अपना नव निर्माण कर रहा है। जगह जगह नये नये उद्योग खड़े हो रहे हैं। नये नये कारखाने खुल रहे हैं। बिजली का उत्पादन हो रहा है। बांध बन रहे हैं। नहरें निकल रही हैं। इस प्रकार देश अपनी तरक्की के लिए संघर्ष कर रहा है। इस

प्रकार के नव-निर्माण के स्थानों को भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दुस्तान के 'नये तीर्थ' बताया है। दुर्गापुर भी ऐसा ही एक तीर्थ है। यहाँ पर एक बहुत बड़ा बाँध बनाया गया है। इस बाँध के निर्माण पर ७ करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। अपने आप खुलने तथा बन्द होने वाले ३४ द्वार इस बाँध की अपनी विशेषता है। अपार जलराशि देखकर शास्त्रों में वर्णित परमब्रह्म का विवरण आँखों के सामने आ जाता है। उत्ताल प्रवाह से बहने वाली दो नहरें उत्तर एवं दक्षिण की तरफ जाती हैं। उत्तर की तरफ बहनेवाली नहर भारत की पवित्र सलिला गंगा नदी में आकर मिल जाती है। इससे इस नहर की उपयोगिता न केवल सिंचाई के लिए है बल्कि जलपोत के आवागमन के लिए भी हो जाती है।

दोनों किनारों पर बने हुए भव्य उपवन इस स्थान की शोभा में चार चाँद लगा देते हैं। इस तरह के अनेक बाँध भारत में बन रहे हैं। आर्थिक तथा भौतिक विकास की ओर तो पूरा ध्यान दिया जा रहा है पर आध्यात्मिक पक्ष आजादी के बाद भी उपेक्षित-सा ही पड़ा है। जब तक समाज का आध्यात्मिक स्तर उन्नत नहीं होगा, तब तक ये भौतिक उपलब्धियाँ भी व्यर्थ ही साबित होंगी। वास्तव में स्वतन्त्रता तभी चिरस्थाई होगी जब हमारे समाज में मानवीय सद्गुणों का उत्तरोत्तर विकास होगा। यह बहुत दर्दनाक बात है कि आजादी के बाद दुर्गापुर जैसे नये तीर्थों के रूप में भौतिक उन्नति ज्यों ज्यों हो रही है त्यों त्यों ही देश में स्वार्थ-लिप्सा भोग-लिप्सा राज्य-लिप्सा तथा भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

वर्धमान से दुर्गापुर के बीच हमारे पाँच पड़ाव हुए। पालपुरा, गलसी, बुद बुद, पानागढ़ तथा अराकोल। सभी गाँवों में गरीबी का गहरा साम्राज्य है। फिर भी सभी जगह साधुओं के प्रति असीम आदर दीख पड़ता है। भारत आध्यात्मिक देश है इसलिए हर

परिस्थिति में यहा के लोग आध्यात्मिक मार्ग के प्रति तथा उस मार्ग पर चलने वालों के प्रति पूरी श्रद्धा रखते हैं।

आसन सोल

ता० २६-१२-५५ :

हमारा मुनि-जीवन वास्तव में एक तपो भूमि है और नित-नवीन अनुभवों को प्राप्त करने का अद्भुत साधन भी है। कहीं एक जगह नहीं रहना। नित्य चलते जाना। यह कितना सुन्दर है। जैसे नदी का प्रवाह नहीं रुकता उसी तरह मुनियों की यात्रा नहीं रुकती। चरैवेति। चरैवेति !! नित्य नया रास्ता, नित्य नया गाव, नित्य नया मकान, नित्य नये लोग, नित्य नया पानी। यह भी कितने आनन्द का विषय है। इन सब परिवर्तनों में भी मुनि को समता-वृत्ति रखनी होती है। कभी अनुकूलता हो, तब भी आसक्त न होना और कभी प्रतिकूलता हो तब भी दुखी न होना, यही मुनि जीवन की परमोत्कृष्ट साधना है। इस साधना के बल पर ही 'मुनि अपने जीवन के चरमोत्कर्ष तक पहुँच सकता है।

लाभा लाभे सुहे दुखे, जीविए मरणे तहा।
समो निन्दा पससासु, तहा माणाव माणवो ॥

सूत्र उ० १६-६१ गाथा

कभी अधिक सम्मान मिलता है, कभी अपमान का जहर भी पीना पड़ता है। लेकिन मानापमान की उभय परिस्थितियों में समता रखना ही हमारा व्रत है। हम आसन सोल पहुँचे, तो हमारा भव्य स्वागत हुआ। कुछ सज्जन कलकत्ता से भी आये। कुछ दूसरे स्थानों के भी आये। स्थानीय लोग भी काफी सख्या में थे।

यहाँ प्रवचन में मैंने लोगों को जीवन में अध्यात्मवाद को प्रश्रय देने की प्रेरणा देते हुए कहा कि "आज विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मनुष्य के लिए अनन्त सुख-सुविधा के साधन जुटा दिये हैं। रेल मोटर, हवाई जहाज आदि के आविष्कार से यातायात की सुविधाएं खूब बढ़ गई हैं। रहने के लिए पक्के सज्ज भवन उपलब्ध हैं। खाने के लिए वैज्ञानिक साधनों से बिना हाथ के स्पर्श के तैयार किया हुआ और रैफ्रीजरेटर में सुरक्षित भोजन मिलता है तार टैलीफोन और टैलीविजन के माध्यम से सारा संसार बहुत निकट आ गया है। और भी बहुत प्रकार के आविष्कार हुए हैं। परन्तु इन सब आविष्कारों तथा भौतिक सुख-सुविधाओं की चका-चौंध में आध्यात्मिक जीवन की भावना नहीं पनपने देता है। आज विज्ञान में अध्यात्म की पुट नहीं है इसीलिए अणु-शक्ति के आवि-ष्कार से सारा संसार भयभीत हो रहा है। ऐसे बमों का आविष्कार हो चुका है जिनके विस्फोट से क्षण भर में यह संसार, इसका इतिहास साहित्य संस्कृति और कला का विनाश हो सकता है इसी-लिए मेरी यह निश्चित मान्यता है कि विज्ञान की इस बढ़ती हुई भौतिक प्रवृत्ति पर अध्यात्मवाद का अंकुश होना चाहिए। अन्यथा जैसे बिना अंकुश के मदोन्मत्त हाथी खतरनाक साबित होता है बिना लगाम के घोड़ा खतरनाक हो जाता है वैसे ही यह विज्ञान भी समाज के लिए अभिशाप स्वरूप ही सिद्ध होगा।"

कटीयपुर मोहनपुर, करजोड़ा रानीगाँव और छापराम इस तरह दुर्गापुर से आसन सोल के बीच में हमारे पांच पड़ाव हुए। हम यहाँ १५ १२-५५ को ही पहुँच गये थे।

आज यहाँ पर बंगाल प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन हो रहा था। सम्मेलन के आयोजकों का आग्रह भरा

निवेदन था कि हम भी इस सम्मेलन में उपस्थित रहें और अपने विचार प्रगट करें। इसलिए मैंने सम्मेलन के मच से अपने विचार जनता के सामने रखे। "मारवाडी जाति ने देश की व्यापारिक उन्नति में अपना उल्लेखनीय योग दान दिया है। परन्तु दुर्भाग्य से आज मारवाड़ी समाज में अनेक सामाजिक रूढ़ियों तथा कुप्रथाओं ने अपना डेरा जमा लिया है। इसलिए अब बदले हुए जमाने की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन कुप्रथाओं को समाप्त करके नये ढग से अपना विकास करने की आवश्यकता है। जब मारवाड़ी समाज युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगा तभी वह एक प्रगतिशील समाज बन सकता हैं। अन्यथा युग आगे बढ़ जाएगा और यह जाति पिछड़ी की पिछडी रह जायगी।" मेरे कहने का यही सार था क्योंकि गोरक्षा का प्रश्न उस समय विचारार्थ सामने था और गोरक्षा के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी उपस्थित था इसलिए मैंने कहा कि—

"भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहा की कृषि बैलों पर आधारित है, इसलिए अर्थ-शास्त्र की दृष्टि से भी गोरक्षा का प्रश्न बहुत महत्त्व का है। वैसे गाय भारतीय इतिहास में अपना सास्कृतिक तथा भावनात्मक वैशिष्ट्य तो रखती ही है। जैन-शास्त्रों में जिन विशिष्ट श्रावकों का वर्णन आता है, वे गाय का पालन करते थे, यह भी शास्त्रों में अनेक स्थानों पर वर्णित है। इसलिए भारतीय जन-मानस की उपेक्षा नहीं की जा सकती और गो-रक्षा के सवाल को टाला नहीं जा सकता।"

न्यामतपुर

ता० १-१-५६ :

आज वर्ष का प्रथम दिन है। १९५५ का साल समाप्त हुआ और नूतन वर्ष हमारा अभिनंदन कर रहा है। यह काल-चक्र निरंतर चलता ही रहता है। कभी भी रुकता नहीं। दिन बीतते हैं रातें बीतती हैं सप्ताह पक्ष और मास बीतते हैं उसी तरह वर्ष और युग बीत जाते हैं। जो क्षण बीत जाता है, वह वापस लौट कर नहीं आता।

> जाजा वच्चई रयणी न सा पडि नियत्तई।
> अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ॥
>
> उ अ १४-गाथा २४
>
> जाजा वच्चई रयणी न सा पडिनियत्तई।
> धम्मंच कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ॥
>
> उ.अ १४-गाथा २५

अर्थात् जो रात्रि बीत जाती है वह पुनः लौटकर नहीं आती। इसलिए जिसकी रात्रि अधर्म में गुजरती है उसकी जिन्दगी असफल हो जाती है और जिसकी रात्रि धर्म की उपासना करते हुए गुजरती है उसकी रात्रि सफल होती है। किन्तु मानव कभी भी इस बात पर विचार नहीं करता। खेल कूद में वह अपना बचपन व्यतीत कर देता है भोग-विलास में अपना यौवन समाप्त कर देता है और बुढ़ापे में उस समय पछताता है जब इन्द्रियाँ क्षीण हो जाती हैं। धर्म करने का सामर्थ्य नहीं रहता। इसलिए यह नव-वर्ष का प्रथम दिन हमें इस बात की याद दिलाता है कि समय बीतता जा रहा है। उसे हम पकड़ नहीं सकते पर उसका सदुपयोग करना तो मानव के हाथ में है।

आसन सोल से चलने के बाद हम मीरजा रोड़ में रुके और घर्द्दनपुर में रुके। वर्द्धनपुर में श्री धनजीभाई मुख्य श्रावक हैं, जिनकी धार्मिक श्रद्धा से मन पर सात्विक प्रभाव पडता है। वर्द्धनपुर से हम न्यामतपुर आगये। यह एक छोटी जगह है,पर मन में वैचारिक प्रेरणा उत्पन्न करने वाला स्थान है।

चितरंजन

ता० ३-१-५६ :

न्यामतपुर से १० मील चलकर हम यहां आये हैं। यहा रेल इंजिन का एक बडा कारखाना है।

यातायात के साधन दिन प्रतिदिन विकसित होते जारहे हैं। विज्ञान ने तेज रफ्तार वाले अनेक साधनों का आविष्कार करके सारी दुनिया को निकट ला दिया है। खासतौर से योरप, अमेरिका, रूस आदि देशों ने इस प्रतियोगिता मे विशिष्ट योगदान दिया है। सारी दुनिया को ये देश, रेल का, मोटर का, विमान का, साइकिल का तथा अन्य यातायात के साधनों का सामान भेजते हैं। पर अब धीरे धीरे एशिया और अफ्रीका के देश भी आजाद हो रहे हैं और अपने देश में ही इन साधनों का विकास कर रहे हैं। भारत में भी अब रेल्वे के इंजिन तथा डिब्बे बनने लगे हैं। चितरंजन भारतीय रेलों के विकास में अपना महत्त्व का योग दे रहा है। ५० प्रतिशत मशीनें और इंजिन की बोडी का निर्माण यहा होता है। इस प्रकार यह कारखाना देश मे अपना ढंग का अकेला है।

पर हम तो पदयात्री ठहरे। लोग अवश्य ही मन में ऐसा विचार करते होंगे कि हवाईजहाज और राकेट के इस युग में जबकि

मानव सुरक्षित में बैठकर चन्द्रमा की यात्रा करने का सपना देख रहा है, ये मानव लोग पैदल क्यों चलते हैं ! इतना समय नष्ट क्यों करते हैं। पर उन्हें शुद्ध पद विहार का आनंद तथा उपयोगिता का ज्ञान नहीं है। पद-विहार के समय प्रकृति के साथ सीधा संपर्क आता है। खुली हवा खुला प्रकाश खुली धूप और खुली जल-वायु के सान्निध्य में हम ऐसा ही अनुभव करते हैं मानो हम सृष्टि की गोद में हैं। इससे भारत की कोटि कोटि ग्रामीण जनता से संपर्क करने का भी यह श्रेष्ठतम साधन है। इसलिए इस राकेट युग में जितना महत्त्व हवाई-यात्रा का है, उससे कहीं अधिक महत्त्व पद-यात्रा का है। चितरंजन में रेलवे इंजिन का कारखाना देखते समय हमारे साथ करीब १ व्यक्ति थे। उनके साथ इस प्रकार का विचार-विमर्श चलता रहा।

यहाँ पर एक और महत्त्वपूर्ण कारखाना देखा। अंडर ग्राउण्ड में बिछाने के लिए टेलीफोन का तार यहाँ पर तैयार किया जाता है। तार पर इतना मजबूत कपड़ा चढ़ाया जाता है कि वह न तो सड़ न पानी से खराब हो और न जमीन में लम्बे समय तक रहने पर भी क्षतिग्रस्त हो। टेलीफोन का आविष्कार सचमुच एक ऐसा आविष्कार है जो मानवीय वैज्ञानिकता का अनोखा परिचय देता है। अब तो टेलीविजन का भी अवतरण हो चुका है। तार के अन्दर मानवीय वाणी और मानव का चित्र समाहित हो जाय और यह एक बार दूसरी ओर ठीक तरह प्रतिबिम्बित होता रहे, यह वास्तव में आश्चर्य की बात है। अब तो यह चीज बहुत साधारण हो गई है, पर जब इसका आविष्कार हुआ होगा तब तो यह चमत्कार ही रहा होगा।

मैथून

ता० ४–१–५६ :

चितरंजन से ६ मील पर यह एक और भव्य स्थान है। यहा पर भी २८ करोड़ रुपये लगकर एक बहुत बड़ा बांध बना है। इस यात्रा मे सबसे पहले तो दुर्गापुर का बाध आया था और अब दूसरा मैथून-बाध है। यहा पर भू-गर्भ में एक पावर हाउस ससार में अपने ढग का अकेला होगा।

झरिया

ता० ६–१–५६ :

मैथून से बराकर, बरवा, गोविंदपुर तथा धनबाद होते हुए आज हम झरिया पहुँचे। झरिया तथा आसपास का यह सारा क्षेत्र कोलियारी-क्षेत्र है। यहा से लाखों टन कोयला सारे देश को जाता है। यह काला कोयला जहा भी जाता है, पीछे सोने को घसीट कर लाता है। आज औद्योगिक-युग में कोयले का कितना महत्व बढ़गया है। गांवों का यह देश अब शहरों की ओर प्रयाण कर रहा है और इस केन्द्रीकरण का यह परिणाम है कि शहरों के लोग लकड़ी से भोजन नहीं पका सकते। इस तरह कुछ विशिष्ट स्थानों पर, जहां कोयला पैदा होता है, सारे देश को निर्भर रहना पड़ता है। औद्योगिक कारखानों के लिए तथा घरेलू उपयोग के लिए जब किसी कारणवश देश के एक कोने से दूसरे कोने तक कोयला नहीं पहुँच पाता, तब सब जगह कोयला महगा हो जाता है और हाहाकार होने लगता है। पुराने छोटे छोटे घरेलू उद्योग-धधे विकेन्द्रित ढग से चलते थे, इसलिए उन उद्योगों पर कोई संकट नहीं आता था।

इसी प्रकार बंगाल की सर्व-सुलभ वस्तुओं से भोजन पकता था इसलिए उसकी भी कोई समस्या नहीं थी।

और यह झरिया धनवान-कतरास-चास कोयले का खजाना है और व्यापार के निमित्त राजस्थान तथा विशेष रूप से गुजरात के व्यापारी यहां पर बसे हुए हैं। इनमें जैन-श्रावक भी काफी संख्या में हैं।

झरिया में पूज्य मुनिश्री प्रतापमलजी म० और राजेन्द्र मुनि श्री महाराज से भेंट हुई। झरिया हमारे लिए दिशा-निर्णय का स्थान है। आगे किस ओर प्रस्थान किया जाय ? इसका निर्णय यहां पर करना है। काफी विचार-विमर्श हुआ। श्री संघ तो स्वाभाविक रूप से यह चाहता ही था कि हम एक वर्ष इसी क्षेत्र में विचरण करें साथ ही मुनिश्री प्रतापमलजी म ने भी यह परामर्श दिया कि हम सातों मुनि एकाएक यह पूर्व-भारत का क्षेत्र छोड़कर चले जाँय यह ठीक नहीं होगा इसलिए इस वर्ष इधर ही रहना श्रेयस्कर है। साथ ही हमारे साथी मुनि श्री बसंतीलालजी म० का स्वास्थ्य भी बहुत लम्बे प्रवास के लिए अनुकूल नहीं था। इसलिए सर्व-सम्मति से इसी निर्णय पर पहुँचे कि इस वर्ष इसी क्षेत्र में विहरण करना है।

अब हम लम्बा प्रवास बन्द न करके यहीं आस पास के गांवों में घूमने के लिए प्रयास करेंगे। इस ओर जो जैन-समुदाय है उसे साधुओं का सम्पर्क क्वचित् ही उपलब्ध होता है इसलिए यहां घूमना आवश्यक भी हो गया है।

कतरास गढ़
ता० ३-३-५६ :

हम इस बीच भागा, बलिहारी कोलियरी, करकेन, खरकरी कोलियरी आदि स्थानों में भ्रमण करते रहे। इन क्षेत्रों में कलकत्ता अहमदाबाद, राजस्थान आदि से भी दर्शनार्थी बराबर आते रहे। जगह-जगह हमें नित नया आनन्द और उल्लास का वातावरण मिलता था। प्राय सर्वत्र रात्रि-प्रवचन, सत्सग, विचार-विमर्श और छोटी-बड़ी सभाओं का आयोजन होता था। कुसस्कारवश गरीबों, ग्रामीणों और छोटी जाति के लोगों में भी बहुत से दुर्गुण घर कर गए हैं। जैसे कि शराब तो प्राय हर गाव में अपना अड्डा जमाये हुए है। हालाकि हम मुनि अपनी आत्म साधना के पथ पर ही अग्रसर होते हैं, फिर भी जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज की क्या दशा है, इसका विचार करना भी हमारा कर्तव्य है। शराब एक नशीली, उत्तेजक और मादक चीज है। यह ज्ञान देहात की आम जनता तक पहुँचाना हमारे पाद-विहार का खास मिशन है। हम जहा भी जाते हैं, वहा लोगों को यह समझाते हैं कि शराब से समाज में सात्विकता का विनाश होता है। और तामसिक वृत्तिया बढती है। फलस्वरूप मुनियों के उपदेश से लोग प्रभावित होते हैं और शराब का परित्याग करते हैं। इसी प्रकार दूसरे दुर्गुणों तथा कुसस्कारों के लिए हम, लोगों को समझाते हैं। सामाजिक जीवन की सात्विक प्रतिष्ठा के लिए यह आवश्यक है कि समाज मे अधिक से अधिक सद्गुणों का विकास हो और दुर्गुणों का निरसन हो।

हम अपने पाद-विहार के दौरान में ता० १८-२-५६ को भी यहां पहुँचे थे और तब १२-१३ दिन यहा रहकर गये थे। अभी फिर

२ दिन के लिए यहाँ आये हैं। यह एक छोटा ही पर सुन्दर नगर है। श्रावक-समुदाय में भी बहुत उत्साह है एक जैन शाला चलती है जिसमें काफी विद्यार्थी ज्ञानार्जन करते हैं। पिछली बार जब हम आये थे तब यहाँ के छात्रों के सामने २ ३ बार व्याख्यान दिया। आज छात्र जीवन उच्छृंखलता की ओर बढ़ा जा रहा है। यह संपूर्ण देश के लिए बहुत दुर्भाग्य की बात है। आज के विद्यार्थी ही कल के राष्ट्र-चालक बनने वाले हैं। कल का व्यापार शासन व्यवस्था इत्यादि सब संभालने के लिए हमें अपने विद्यार्थियों का समुचित पोषण तथा विकास करना होगा। विद्यार्थियों की जो हीन अवस्था है, उसके लिए ज्यादा तो आज की शिक्षा-पद्धति जिम्मेदार है। आजादी प्राप्त कर लेने के बाद भी शिक्षा-पद्धति गुलाम भारत की ही चल रही है तब भला विद्यार्थियों में स्वातंत्र्य-शक्ति का तथा चेतना का उदय कहाँ से हो? यदि विद्यार्थियों के भविष्य को सुरक्षित करना है तो तुरंत शिक्षा पद्धति में सुधार करना चाहिए और आध्यात्मिक-स्तर को बुनियाद में रखकर शिक्षा पद्धति का निर्माण करना चाहिए।

लाल बाजार

ता० १६-३-५६ ।

इस क्षेत्र में एक जाति है— सराक'। यह शब्द श्रावक' से बना है। इस जाति के रीति रिवाज देखने से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि किसी युग में ये लोग जैन श्रावक थे। पर साधु-संपर्क के अभाव में धीरे धीरे इनके संस्कार बदल गये और आज इन्हें इस बात का भान भी नहीं है कि ये जैन धर्म को मानने वाले 'श्रावक' हैं। इस जाति में काम करने की जरूरत है। मुझे मार्ग के पथिकों को मन्मार्ग पर लाना कितना बड़ा काम है इसका अनुमान सहज

ही लगाया जा सकता है । गाव गाव मे घूमना, किस गाव में कितने 'सराक' हैं, इसका पता लगाना और फिर उनका ठीक तरह से सग ठन करके उनमें जैनत्व का सस्कार भरना बहुत आवश्यक है । यदि ऐसा करने में कुछ साधुओं को अपना काफी समय लगाना पडे, तो भी लगाना चाहिए । यदि इस जाति का ठोक प्रकार से सगठन हो जाय और इनमें भली-भाँति काम किया जा सके, तो निश्चय ही हमें हजारों घर मिलेंगे । इन हजारों घरों के जैन बन जाने से जिस विहार में आज जैन धर्म को मानने वाले मूल निवासी नगण्य सख्या में ही हैं उस विहार मे तथा वगाल में भो हजारों जैन धर्मावलम्बी हो जायेंगे । इस प्रकार इस क्षेत्र में फिर से धर्मोदय हो सकेगा ।

करकेन, धनबाद, गोविन्दपुर, बखा, श्यामा कोलियारी, बराकर, आदि गावों में हम इन दिनों में घूमे । आज लाल बाजार में हैं। यहा 'सराक' जाति के १२ घर हैं । कई अच्छे कार्यकर्ता भी हैं। यहा से हम कुछ प्रचार-कार्य आरम करने जारहे हैं । 'सराक' जाति में विशेष रूप से कुछ काम हो सके, यह उद्देश्य है । कुछ विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें भी तैयार की गई हैं । अच्छा परिणाम आयेगा ऐसी उम्मीद है ।

जे. के. नगर

ता० ३१–३–५६ :

यह औद्योगिक क्रांति का युग है । सारा ससार औद्योगिक विकास की ओर भागा जारहा है । जो देश औद्योगिक क्षेत्र मे आगे बढ़ जाता है, वह सारे ससार में अपना वर्चस्व जमा लेता है । आज योरोप तथा अमेरिका जैसे पश्चिमी देश इसीलिए इतने प्रगति

शीर्ष माने जाते हैं क्योंकि वहां औद्योगिक-क्रांति परिपूर्ण हो चुकी है। एशिया और अफ्रीका के देश अभी तक इसीलिए पिछड़े हुए माने जाते हैं क्योंकि यहां पर विकसित और बड़े उद्योगों का अभाव है। ये पिछड़े देश पश्चिम की राह पर आगे बढ़ने के लिए लालायित हैं और हर प्रकार से उनकी नकल करते हैं। खान-पान वेष-भूषा रहन-सहन सब में आज पश्चिम की नकल की जाती है। सच पूछा जाय तो एशिया और अफ्रीका के लोगों के लिए पश्चिम के लोग देवता बन गये हैं। इसीलिए आज भारत भी पश्चिम की नकल करने में ही अपने को धन्य भाग्य समझ रहा है। जहां भी देखिए वह अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति की परम्पराओं का तोड़-मरोड़ कर नई भौतिक सभ्यता को प्रश्रय दे रहा है। नई दिल्ली जैसे शहरों में तो ऐसा लगता ही नहीं कि हम भारत में हैं। वहां की फैशन और औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप आई हुई सभ्यता को देखकर ऐसा ही लगता है कि यह कोई पश्चिमी देश का बड़ा शहर है।

पर आज वे देश जहां औद्योगिक-क्रांति हो चुकी है और जहां केन्द्रीकरण हो चुका है बहुत चिन्तित हैं। क्योंकि विज्ञान के सहारे पर उन्होंने बड़े बड़े कारखाने तो खड़े कर लिये सामान का उत्पादन भी खूब करते हैं पर उस सामान को खपाने के लिए बाजार नहीं मिल रहा है। जिन दिनों में बड़े देशों के पास ही बड़े बड़े कारखाने थे उन दिनों में वे देश बाहर के देशों से कच्चा माल मंगाते थे और पक्का माल खूब ऊंचे दामों पर दूसरे देशों को बेच देते थे। इस तरह छोटे और अविकसित देश इन बड़े देशों का माल खपाने के लिए अपनी मंडियां और अपना बाजार उपलब्ध करते थे। पर आज इन छोटे देशों में भी कारखाने खुलने लगे हैं। ये छोटे देश अब माल अपने यहां माल बनाकर बाहर भेजना चाहते हैं। विदेशी मुद्रा की आवश्यकता आज प्रत्येक देश

को है। इसलिए कच्चा माल बाहर न भेजकर बड़े कारखानों मे उसे पक्का बनाना तथा अन्य देशों को वह माल भेजकर विदेशी मुद्रा कमाना आज सभी देशों का लक्ष्य है। यह विषम स्थिति बड़े उद्योगों के कारण आई है। साथ ही इन बड़े उद्योगों ने बेकारी को भी प्रश्रय दिया है। जो काम १०० आदमी मिलकर करेंगे, वह काम मिल में १० आदमी कर सकते हैं। इस तरह उत्पादन बढेगा, उत्पादन की आमदनी एक आदमी के पास जाएगी और अधिक लोग बेकार होंगे। एक ही साथ अनेक दोष हैं। पर कहने का अर्थ यह नहीं है कि बड़े उद्योग हों ही नहीं। केवल उनपर नियत्रण रखने की आवश्यकता है। कुछ बड़े उद्योगों के अभाव में तो देश की अर्थ व्यवस्था मे और संसार की अर्थ व्यवस्था में संतुलन ही नहीं रह जाएगा।

जे के नगर एक औद्योगिक नगर है। एल्युमिनियम का कारखाना है। बहुत अच्छी जगह है। आबोहवा भी स्वास्थ्यप्रद है।

कतरास

ता० २१-४-६१ :

पिछले महीने हम कतरास आये थे। एक माह १८ दिन में हमने जो प्रवास किया, वह मुख्य रूप से 'सराक' जाति में काम करने की दृष्टि से ही था। गाव, गाव में हमें खूब उत्साह मिला। सर्वत्र अत्यत स्वागत हुआ। यहा सातत्य योग से काम करने की आवश्यकता महसूस हुई। क्योंकि एक बार जब मुनियों से सपर्क आता है, तब तो लोगों को प्रेरणा मिलती है और जब यह सपर्क पुराना पड़ जाता है, तब फिर से सस्कार मिटने लगते हैं। इसलिए इस जाति में सतत काम चलता रहे, इसकी योजना बननी चाहिए

और धर्म को एक मिशन का रूप देकर उसे व्यवस्थित बनाना चाहिए।

कतरास में मुनि श्री जगजीवनजी म० तथा मुनि श्री जयंती लालजी म० का समागम हुआ। ये दोनों मुनि सांसारिक पक्ष में पिता-पुत्र हैं और बड़े अध्यवसाय के साथ पूर्व भारत में विचरण कर रहे हैं। जयंती मुनि के व्याख्यान बड़े हृदय स्पर्शी और बड़े सरल सुबोध होते हैं। उनके व्याख्यान तथा उपदेश सुनकर आम जनता न केवल प्रसन्न और संतुष्ट ही होती है, बल्कि प्रभावित होकर सदाचरण की प्रेरणा भी प्राप्त करती है।

कतरास में जैन उपाश्रय का अभाव था। पर यहां के लोगों के उत्साह से और विशेष रूप से देवचन्द भाई जैसे सम्पन्न लोगों के प्रयत्न से उस अभाव को पूरा कर दिया है। एक भव्य भवन का निर्माण हो चुका है।

ता० २२-४-६१ :

जैन उपाश्रय का उद्घाटन-समारोह यहां के सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री नरभेराम भाई के हाथों से संपन्न हुआ। आस-पास के लोग काफी संख्या में उपस्थित थे।

ता २३-४-६१ :

महावीर जयंती !

भगवान महावीर इस युग के एक क्रांतिकारी महापुरुष हुए हैं। यदि हम अहिंसा सत्य अपरिग्रह और आत्मोन्नति का प्रशस्त-पथ दिखाने वालों का स्मरण करेंगे तो उनमें भ० महावीर का नाम

जाज्वल्यमान सूर्य की तरह चमकता हुआ दिखाई देगा। जिस युग में चारों ओर हिंसा, राज्य-सत्ता और धार्मिक अंध-विश्वासों का अंधेरा छाया हुआ था उस युग मे भगवान महावीर ने शांति, प्रेम, करुणा, वैराग्य, अपरिग्रह, अहिंसा आदि सिद्धांतों का प्रचार करके कुमार्ग में भटकती हुई जनता को सद्बुद्धि देकर सन्मार्ग दिखाया।

यह महावीर जयंती हर वर्ष आती है। हर वर्ष इस पावन-पुनीत अवसर पर बड़ी बड़ी सभाओं का आयोजन होता है। पर सोचने की मुख्य बात यह है कि क्या हम महावीर के अनुयाई उनके बताये हुए मार्ग पर चलते हैं? यदि महावीर-जयंती मनाने वाले महावीर के आदर्शों पर नहीं चलते, तो जयंती मनाने का कोई सार नहीं।

कुछ लोग बाहर से ऐसे दीखते हैं मानो वे सचमुच महावीर के पद चिन्हों पर चलने वाले बारह व्रतधारी श्रावक हैं। शास्त्र की किसी भी उलझी हुई गुत्थी को वे सुलझा सकते हैं। सब जगह उनकी तारीफ भी होती है। वे निरन्तर ज्ञान-ध्यान में व्यस्त दीख पड़ते हैं। उनका घर आगम-ग्रन्थों, भाष्यों, टीकाओं आदि से भरा रहता है। सर्वत्र उनकी पूछ होती है। महावीर-जयंती जैसे अवसरों पर व्याख्यान देने के लिए उनको आमन्त्रित किया जाता है। सर्वत्र स्वागत होता है। मालाएं पहनाई जाती हैं। उनका व्याख्यान सुनकर श्रोतागण मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं। तालियों की गड़गड़ाहट होती है।

पर यदि वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो उनके जीवन में सत्याचरण का प्रायः अभाव ही रहता है। सम्यग्ज्ञान, सम्यग् दर्शन तथा सम्यग् चरित्र रूपी रत्नत्रय का उनमें कहीं दर्शन नहीं

होता। वह सारा केवल वाक्-प्रपंच ही रहता है। देव गुरु और धर्म की वास्तविक पहचान से रहित उनका वह पाण्डित्य खोखला ही होता है।

इसलिए महावीर जयन्ती खास चिन्तन का दिन है। इस दिन यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम ऊपर के विषयों में न उलझकर सचमुच महावीर के आदर्शों पर चलेंगे।

यहाँ पर महावीर-जयन्ती का खूब अच्छा आयोजन हुआ। हमने लोगों को उपरोक्त विचार समझाने का प्रयत्न किया। सायंकाल थोड़ी दूर पर स्थित सरकारी कोलियारी पर महावीर जयन्ती समारोह में भाग लेने के लिए मुनिगण रात को ही चले गये।

अभी यहाँ पर जो आस-पास की विभिन्न कोलियारी हैं उन्हीं में हम विचरण करेंगे। इस क्षेत्र में अपने जैन भाई भी बड़ी संख्या में हैं। उन से सम्पर्क करना भी आवश्यक है।

करकेन्द
१—७—५६

समस्त जैन समाज का यह आग्रह है कि हमें इस वर्ष का वर्षावास बिहार में ही करना चाहिए। यह बिहार-प्रान्त एक ऐतिहासिक प्रान्त है। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध की पावन-भूमि यह बिहार है। एक कवि ने बिहार प्रदेश का वर्णन करते हुए लिखा है—

"महावीर ने जहाँ दया का दुनिया को सन्देश दिया।
जिस धरती पर बैठ बुद्ध ने मानव का कल्याण किया।

जहां जन्म लेकर अशोक ने, विश्व प्रेम था फैलाया ।
गांधीजी ने सत्याग्रह का, मन्त्र जहां पर बतलाया ॥
जहां विनोबा ने भूखों को, पंथ प्रेम का दिखलाया ।
लाखों एकड़ भूमि यज्ञ में दान जहां पर मिल पाया ॥
ओ विहार तुम पुण्य-भूमि हो, गंगा तुम मे बहती है ।
गण्डक-कोसी की विभीषिका भी तुम में ही रहती है ॥"

ऐसी ऐतिहासिक भूमि मे जहां सम्मेद-शिखर, राजगृह, पावा-पुरी, वैशाली आदि स्थान भारत के अतीत की गौरव गाथा सुना रहे हों, रहने का सहज ही मोह होता है। उस पर भी भक्ति भरा आग्रह देख कर तो मन और भी पिघल जाता है।

झरिया, कोलियारी-क्षेत्र का एक प्रमुख केन्द्र है। यहां पर लोगों में भक्ति श्रद्धा भी बहुत है। मुनियों के लिए सभी प्रकार की अनुकूलताए भी है। झरिया के भाइयों का अत्यन्त आग्रह है। इस लिए हमने इस वर्ष का चातुर्मास-काल झरिया में व्यतीत करने का निर्णय किया।

झरिया

ता० ३–७–५६ :

हम चातुर्मास करने के लिए झरिया पहुँच गये हैं। सभी लोगों में एक प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। इधर जैन मुनियों के चातुर्मास का अवसर ठीक वैसा ही है, मानों महीनों से भूखे किसी व्यक्ति को खीर-पूरी का भोजन मिल गया हो, इसलिए उत्साह स्वाभाविक है।

प्रथम सन्देश में ही हमने यह सन्देश दिया कि "आज जन-समाज में धर्म के प्रति और साधुओं के प्रति अरुचि उत्पन्न हो रही है। पर इस सम्बन्ध में गहराई से सोचने पर सहज ही यह ज्ञात हो जायगा कि इसका कारण चन्द स्वार्थी लोगों द्वारा धर्म का तथा साधु-वेष का दुरुपयोग करना ही है। अतः हम वास्तविक धर्म की जानकारी देकर लोगों की डिगी हुई श्रद्धा को दृढ़ बनाना चाहते हैं। इस दिशा में जो भी प्रयत्न हो सकेगा वह हम इस चातुर्मास की अवधि में करेंगे।"

ता० ९–८–५६ :

चातुर्मास आनन्द चल रहा है। धर्म प्रभावना अधिकाधिक विकासोन्मुख है। जैन जैनेतर सभी लोगों में वास्तविक धर्म के प्रति आस्था दृढ़ हो रही है। अन्धकार को मिटाने के लिए अन्धकार को न तो मारने की जरूरत है और न झाड़ू से साफ करने की। हजारों वर्षों से व्याप्त अन्धेरे को मिटाने के लिए बस एक दीपक जला देना ही पर्याप्त है। उसी प्रकार अज्ञानान्धकार को मिटाने के लिए विवेक का दीपक जलाना ही पर्याप्त है। प्रवचनों में विभिन्न विषयों पर समुचित रूप से विश्लेषण होता है। मेरा मुख्य कथन यही रहता है कि अपने विवेक को जागृत करो। यदि विवेक की आँखें खुली हैं तो किसी चीज की चिन्ता नहीं। पाप की जड़ अविवेक ही है।

शिष्य पूछता है :

कहं चरे कहं चिट्ठे कहमासे कहं सए।
कहं भुंजंतो भासंतो पावकम्मं न बंधई ?

द० अ० ४-७ गाथा

यानी—कैसे चलना, कैसे ठहरना, कैसे बैठना, कैसे सोना, कैसे खाना, कैसे बोलना, हे गुरुवर ! इसका मार्ग बताइये। ताकि पाप कर्म का बन्धन न हो।

गुरु उपदेश करते हैं :

जय चरे, जय चिट्ठे जय मासे, जय सए।
जयं भुजतो भासंतो, पावकम्म न बन्धाई ?

दृ० अ० ४ ८ गाथा

यानी—यतना से अर्थात्—विवेक से चलो विवेक से ठहरो, विवेक से बैठो, विवेक से सोओ, विवेक से खाओ, विवेक से बोलो, कोई भी काम विवेक और यतना पूर्वक करने से पाप-कर्म का बन्धन नहीं होता।

पर्यू षण पर्व !

ता० १०–६–५६ :

पूरे वर्ष में चातुर्मास एक ऐसा समय है, जिसमें साधु-संगति, व्याख्यान-श्रवण,त्याग-तपस्या आदि का विशेष अवसर मिलता है। चातुर्मास में भी पर्यू षण एक ऐसा समय है जिसमें मनुष्य अपने पापों को धोने एवं आत्मा को विशुद्ध बनाने की ओर सचेष्ट रहता है। पर्यू षण में भी संवत्सरी पर्व एक ऐसा दिन है, जिस दिन प्रत्येक धर्म श्रद्धालु अपनी आत्मा को अत्यन्त विनम्र एवं सरल बना• कर सभी वैर-विरोधों को भूल जाता है और भगवत् चिंतन अथवा आत्म-चिन्तन में लीन हो जाता है।

पर्यू षण पर्व के कारण यहा लोगों में कितना उत्साह है। नये उपाश्रय के प्रांगण में भव्य-पण्डाल बनाया गया। देखिये न, लोग

माता भाग कर पर्यूषण पर्व की आराधना के लिए तैयारी कर रहे हैं। प्रभात फेरी से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ"। सैंकड़ों व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। दिन भर ज्ञान चर्चा प्रवचन स्वाध्याय प्रति क्रमण आदि का कार्यक्रम रहा। गृहस्थ-जीवन कष्टों का जीवन है। आदमी घानी के बैल की तरह गृहस्थी के कामों में व्यस्त रहता है। धर्म-ध्यान के लिए उसे समय ही नहीं मिलता। अत पर्यूषण पर्व एक ऐसा समय है जिस अवसर पर ८ दिन के लिए कोई भी गृहस्थ अपने धंधों से मुक्त होकर आत्म-निर्माण का पथ प्रशस्त कर सकता है।

तपस्या का महत्व जैन धर्म में बहुत ही विशिष्ट रूप से बताया गया है। आत्मा पर जो कर्म-बन्धन दृढ़ता से अपना साम्राज्य जमाये रहते हैं, उन बन्धनों को जड़मूल से विनष्ट करने का एक मात्र साधन तपस्या ही है। इसलिए ये पर्यूषण के दिन आत्म-साधकों के लिए तपस्या के दिन होते हैं। यहां पर भी तपस्या की अच्छी योजना तीन दिन चार दिन पांच दिन आठ दिन नौ दिन इस प्रकार की तपस्याएं और उपवास करके लोग पूरी तरह से सांसारिक कामों को छोड़कर आत्म-चिन्तन में ही लीन हो जाने के लिए प्रयत्न शील रहे।

> खामेमि सव्व जीवे सव्वे जीवा खमंतु मे।
> मित्ति मे सव्व भूएसु वेरं मज्झ न केणई ॥

मैं जगत के सभी प्राणियों से क्षमा याचना करता हूँ। साथ ही समस्त प्राणियों को मैं भी क्षमा करता हूँ। इस संसार में सबके साथ मेरा प्रेम है मेरी मित्रता है किसी के साथ वैर विरोध तथा द्वेष नहीं है।

यह शुभ कामना प्रत्येक व्यक्ति संवत्सरी के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्यक्त करता है और अपने अंतरतम को विशुद्ध तथा निर्मल बनाता है।

झरिया एक कोलियारी क्षेत्र है। थोड़ी थोड़ी दूर पर अनेक कोलियारीज हैं और उनमें बहुत से जैन-श्रावक कार्य करते हैं। उन सभी ने पर्यूषण में भाग लिया है। ७ बार स्वामि वात्सल्य का भी आयोजन हुआ। स्वामि वात्सल्य समारोह में भी आस-पास के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

ता० १९-११-५६ :

झरिया में चातुर्मास-काल पूरा करके आज यहां से विदा हो रहे हैं। चार महीने में जिनके साथ घनिष्ठ संबंध आता है और जो साधु-संपर्क में निमग्न हो जाते हैं, वे इस विदा-काल में वियोगार्द्र हो जाते हैं। पर साधु निर्लिप्त रहते हैं और अपनी मंजिल की ओर प्रयाण करते हैं।

झरिया का चातुर्मास बहुत ही सफल रहा। एक नया क्षेत्र खुला। काम करने की नई दृष्टि मिली। सराक जाति में काम करने की प्रेरणा को बल मिला। चातुर्मास के दौरान मे स्थानकवासी कान्फ्रेंस के प्रमुख श्री बनेचन्द भाई, कलकत्ता समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री कानजी पानाचन्द, श्री गिरधर भाई, श्री त्र्यंबक भाई, श्री सेठ जयचन्दलालजी रामपुरिया आदि सज्जन आए। सभी ने यह महसूस किया कि इस क्षेत्र में जो काम हुआ है, वह महत्त्वपूर्ण है और इस काम को आगे बढाना चाहिए। कुल मिलाकर यह चातुर्मास बहुत सफल रहा और हमारे लिए प्रेरणाप्रद साबित हुआ।

सिंदरी

ता० २६-११-५६ :

झरिया से विदा होकर मार्ग दिगवाडी होते हुए हम सिंदरी आये हैं। सिंदरी में बहुत बड़े पैमाने पर खाद का निर्माण होता है। खेती के लिए खाद उतनी ही आवश्यक मानी जाती है जितनी आवश्यक मनुष्य के लिए रोटी है। पौधों को खाद से ही खुराक मिलती है। राष्ट्र के नेताओं की मान्यता है कि हिन्दुस्तान में खाद के उपयोग की बात बहुत कम लोग जानते हैं। इसीलिए यहाँ की जमीन से पर्याप्त उपज नहीं मिलती। यदि हिन्दुस्तान के लोग एक एकड़ में १५ मन धान पैदा करते हैं तो जापान जैसे देश के लोग खाद आदि के सहारे से ५ या ६० मन तक साधारणतः पैदा कर लेते हैं। यहाँ खेती की भी खाद क्यों नहीं जाने दी जाती पर भारत में तो गोबर जैसे बहुमूल्य खाद को लोग जला डालते हैं।

सिन्दरी में वैज्ञानिक तरीकों से खाद का निर्माण किया जाता है। इस खाद से जमीन की ताकत घटती है ऐसा कुछ वैज्ञानिकों का मत है और कुछ अर्थशास्त्री ऐसा भी कहते हैं कि यह खाद हिन्दुस्तान के गरीब किसानों के लिए बहुत महंगी पड़ती है। इसलिए इस खाद की उपयोगिता के बारे में अभी मतभेद है।

सरकार ने बहुत खर्च करके इस कारखाने का निर्माण किया है। यह देखा गया है कि जिन खेतों में यह खाद डाली गई उनमें उत्पादन की मात्रा काफी बढ़ी। हिन्दुस्तान कृषि-प्रधान देश है। इसलिए यहाँ की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि के विकास को प्राथमिकता दी गई है। यह ठीक भी है। कृषि के विकास पर ही भारत का विकास निर्भर है। यदि कृषि उन्नत हुई हो और

भारत के किसानों का जीवन-स्तर उठे तो निश्चय ही देश भी किसी भी देश का मुकाबला कर सकता है। पचवर्षीय योजनाए इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। देखें, कब मंजिल तक पहुँचते हैं।

महुदा

ता० ३-१२-५६ :

कल हम ताल गड़िया में थे। वहां एक विचित्र ही दृश्य देखा। 'कल्याणकारी राज्य' अच्छे कर्मचारियों के अभाव में और ईमानदार प्रशासकों के अभाव में न केवल 'अकल्याणकारी' बन जाता है बल्कि अभिशाप ही सिद्ध होता है। रेल्वे विभाग भ्रष्टाचार के लिए बहुत बदनाम है। उसका एक उदाहरण कल देखा। स्टेशन-मास्टर एव रेल-गार्ड ने मिलकर जिस तरह से सार्वजनिक संपत्ति का अपहरण किया, वह सचमुच इस देश की दयनीय अवस्था का एक नमूना है। जो काम सेवा के लिए और जनता की सुविधा के लिए चलाया जाता है, वही काम इस तरह जनता के लिए भार स्वरूप बन जाता है। आजादी के बाद सरकारी कर्मचारियों में भयकर रूप से भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। घूंसखोरी तो मानों एक अधिकार ही बन गया है। कहीं भी जाइये, बिना घूस के कोई काम नहीं होता। कानून का पालन कराने वाली कचहरी तो घूस खोरी का सबसे बड़ा अड्डा है। यदि इसी प्रकार चलता रहा, तो यह देश कहा जाकर गिरेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता।

ताल गड़िया से ८ मील चलकर आज हम महुदा पहुचे। प्रात काल बड़ा सुहावना था। गुलाबी ठड पड़ रही थी। सर्दी के दिनों में प्रकृति भी अपने पूरे उभार पर रहती है। वर्षा समाप्त हो जाती है। खेतों में धान पक जाता है। कहीं कटाई चलती है। तो कहीं

खलिहान भिरे रहते हैं। ईख की फसल भी खूब बड़ी हुई दीख पड़ती है। यह इतना सुहावना और मनोरम मौसम हमारी पदयात्रा के लिए भी बड़ा अनुकूल होता है। गरमियों में थोड़ी धूप तेज होने के बाद चलना कठिन हो जाता है। लेकिन सर्दियों में धूप भी बड़ी अच्छी लगती है।

यहां श्री प्रभाकरविजयजी म. से भेंट हुई। इसी तरह विहार काल में जगह जगह विभिन्न संप्रदायों के मुनियों से मुलाकात होती रहती है। यह बड़े दुःख की बात है कि हमारे साधुओं में दूसरी संप्रदाय के साधुओं से संपर्क बढ़ाने की वृत्ति बहुत ही कम है। आज जैन समाज अनेक छोटे-बड़े टुकड़ों में विभाजित होगया है। इतना ही नहीं वे विभिन्न संप्रदायें एक दूसरे के विरोध में अपनी ताकत खर्च करती हैं। परन्तु हमें सोचना चाहिये कि हम सब एक ही महावीर के अनुयायी हैं। फिर आपस में इतना विरोध क्यों? अलग अलग सम्प्रदायें हैं तो भले ही रहें। पर आपस में सबको प्रेम रखना चाहिये। जैन धर्म की आधार-शिला प्रेम अहिंसा और अनेकान्तवाद पर टिकी है। यदि अनेकान्तवाद के प्रतिपादक जैन धर्मावलम्बी खुद आपस में झगड़ते रहेंगे तो कैसे काम चलेगा!

मैं तो बराबर यही सोचता रहता हूँ कि हमें अपने विचारों के भेद को सामने न लाकर तथा विरोध और झगड़े की बातों को प्रोत्साहन न देकर प्रेम का वातावरण बनाना चाहिए। इसी से हमारे समाज का विकास होगा और दुनियां को हम जैनधर्म का रास्ता दिखा सकेंगे। यदि आपस में लड़ने में ही अपनी शक्ति खर्च कर देंगे तो दुनियां को क्या मार्गदर्शन करायेंगे?

वेरमो

ता० ३०-१-५७ :

आज ३० जनवरी है। वह भी ३० जनवरी की शाम थी। जिस प्रार्थना के लिए जाते हुए इस युग के महान अहिंसावादी महात्मा गाधी के सीने पर एक हिन्दू युवक ने सकुचित हिन्दुत्व की रक्षा के नाम पर गोली मार दी थी। अहिंसा और शाति का सारे ससार को मार्ग दिखाने वाला हिन्दुस्तान कभी कभी कैसे हिंसकवृत्ति के मनुष्य पैदा कर देता है। महात्मा गांधी ने देश को अहिंसक रास्ते से आजाद किया। देश की सेवा के लिये अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। उनको गोली से मार देने का दुस्साहस सचमुच कितनी भयकर घटना थी। उस सारे दृश्य को याद करके हृदय काप उठता है और रोम रोम प्रकपित हो जाता है।

रात्रि को महात्मा गाधी की निधन तिथि मनाने के लिये एक सभा हुई मैंने इस प्रसङ्ग पर अपने विचार रखते हुए कहा कि "आज देश का प्रत्येक राजनीतिज्ञ और सामाजिक नेता महात्माजी का नाम लेता है। कांग्रेस सरकार तो कदम कदम पर गाधीजी की दुहाई देती है। दूसरी राजनैतिक पार्टियां भी गांधीजी का नाम रटती हैं। पर उनके सत्य और अहिंसा के आदर्श पर चलने वाले कौन कौन हैं? यह गम्भीरता से सोचने की बात है।

इस देश के इतिहास को देखने से यह ज्ञात होगा कि यहा व्यक्ति को तो बहुत ऊंचा चढ़ाया गया, उसकी पूजा भी खूब हुई पर उसके आदर्शों का पालन करने में सदा ही उदासी बरती गई। यदि गाधीजी के साथ भी ऐसा ही हुआ,तो उनके साथ न्याय नहीं होगा।

बेरमो में मुनि श्री बखतीसागरजी म० के साथ भेंट हुई। यहां पर एक नवीन जैन स्थानक का भी उद्घाटन हुआ। उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिये आस पास के अनेक गांवों के सज्जन आये। कलकत्ता प्रसिद्ध जैन व्यापारी श्री कानजी पानाचंद ने उद्घाटन-रस्म अदा की और मणीलाल रायचंदजी सेठ ने सभा की अध्यक्षता की।

बड़गाँव
ता० १-२-५७।

इस समय बिहार के हजारी बाग तथा रांची जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में से गुजर रहे हैं। पहाड़ी वन और जंगली क्षेत्र प्राकृतिक रमणीयता में अपना अद्वितीय स्थान रखते हैं। जंगली रास्ते भी बड़े डरावने होते हैं। कहीं पगडंडी तो कहीं गाड़ी का रास्ता। चारों ओर सुनसान। हरी भरी वनस्पतियां। ऊंचे ऊंचे पेड़ घनी झाड़ियां कटीले कंकड़, पत्थर! यह इस रास्ते की सौन्दर्य-सुषमा है।

हमारा देश धर्म-प्रधान देश है। लेकिन दुर्भाग्य वश धर्म कर्म के साथ कुछ रूढ़ियां भी चल पड़ी। बलि प्रथा भी एक ऐसी ही धार्मिक कुरूढ़ि है। लोग भ्रम-वश ऐसा मानते हैं कि देवी देवता को बलिदान की जरूरत है। वे किसी के बलिदान से प्रसन्न होते हैं। भ० महावीर के युग में तो यह बलि प्रथा बहुत ही प्रचलित थी इसीलिये भगवान ने इसका घोर विरोध किया। आज तो यह प्रथा बहुत कम रह गई है। फिर भी अनेक जातियों में इस प्रथा को अभी भी मान्यता दी जाती है। ऐसा ही बड़गांव में भी होता है। मैंने जनता को बलिप्रथा को बन्द करने के लिये समझाते हुए अपने व्याख्यान में कहा—

"सव्वे जीवावि इच्छति जीविऊ न मरिज्जिऊं ।
तम्हा पाणवह घोरं निग्गंथा वज्जयंतिण ।।

द० अ० ६ ११ गाथा

अर्थात्—सब जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। अत किसी भी जीव का प्राणापहरण करना पाप है। कोई यदि ऐसा समझते हों कि देवी-देवता किसी जीव के प्राणापहरण से प्रसन्न होते हैं, तो वे निरी भ्रमणा मे हैं। आप जब किसी को जिला नहीं सकते तब आपको इसका क्या अधिकार है कि किसी को मारें। यदि देवी को भोग ही देना है तो आप अपना भोग क्यों नहीं देते। बेचारे निरीह पशुओं का, जो बोल नहीं सकते, अपना दुख दर्द प्रगट नहीं कर सकते, भोग चढाकर यदि आप पुण्य कमाना चाहते हैं तो यह सर्वथा निन्दनीय एव अवाछनीय है। इस व्याख्यान को सुनने के बाद अनेक भाइयों ने यह प्रतिज्ञा ली कि वे "अब किसी भी निमित्त से किसी भी मूक प्राणी की हत्या नहीं करेंगे। यदि देवी देवताओं को पूजा का सवाल आयेगा तो वहां भी अहिंसक मार्ग का अनुसरण करेंगे।"

इस प्रकार बड़गाव में यह एक बहुत ही अच्छा काम हो गया।

अरगड़ा

ता० ७–२–५७

रास्ते में विहार करते हुए हमें आज सरकस वालों का एक काफिला मिला। हमने देखा कि मानव अपने तुच्छ मनोरन्जन के लिए और निकृष्ट स्वार्थ पूर्ति के लिये किस प्रकार पशुओं का शोषण करता है। बलि-प्रथा में तो पशु को मार दिया जाता है पर इस

सरकस में तो जिन्दा पशुओं को मारपीट के सहारे इस तरह से नम्री बनाया जाता है और इस तरह से उन्हें तंग किया जाता है कि स्नान करते ही हृदय धड़कना से मर जाता है। इसी प्रकार अजायबघरों और चिड़ियाघरों में भी मानव मनोरञ्जन के लिए पशुओं को बन्दी बनाया जाता है। खुले विचरण करने वाले पशु सीखचों में बन्द होजाने के बाद ऐसा ही महसूस करते हैं मानो उन्हें गिरफ्तार करके जेल में रख दिया गया है। ऐसी स्थिति में यह मानने को हम बाध्य हो जाते हैं कि मानव अत्यन्त स्वार्थी है। वह अपने निकृष्ट और मानव स्वार्थों की पूर्ति के लिए चाहे जैसा जघन्य कर्म करने को तैयार हो जाता है। कई देशों में मैंढों को लड़ाया जाता है। भैंसों का रेस किया जाता है। घोड़ों को मनोरञ्जन के दांव पर लगाया जाता है। गैंडों का और शेरों का शिकार भी बहादुरी के प्रदर्शन का और मनोरंजन का एक साधन मान लिया है जब हम यह कहते हैं कि मांस खाने की प्रवृत्ति पशु के साथ मानव का घोर अत्याचार है तब मानव समाज की खाद्य समस्या का तर्क उपस्थित कर दिया जाता है पर जब मनोरञ्जन के लिये पशुओं पर होने वाले अन्याय को देखकर सहज ही यह भेद खुल जाता है कि मनुष्य केवल अपनी जिह्वा के स्वाद के लिये और अपनी इन्द्रिय शक्ति को बढ़ाने के लिये ही मांस का सेवन करता है।

कुल मिला कर हमें अब यह तय करना होगा कि इस संसार में पशुओं को जीने का हक है या नहीं और मानव के साथ पशुओं का क्या सम्बन्ध रहे। क्योंकि पशु अपने अधिकारों की मांग नहीं कर सकता और वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरोध में आवाज नहीं उठा सकता इसलिये उस पर मानव अपनी मनमानी करता रहे यह मानवता के माथे पर कलंक का टीका है और अहिंसा वादियों के लिये लज्जा की बात है।

इस सम्बन्ध में गहराई से विचार होगा तो आज दवाओं के लिये अथवा वैज्ञानिक प्रयोगों के लिये होने वाला बन्दरों का निर्यात और उनका संहार तथा इसी तरह की अन्य प्रवृत्तिया स्वत बद हो जाएँगी।

रांची

ता० १४-२-५७ :

अब हम विहार के एक सिरे पर पहुँच गए हैं। यह विहार की ग्रीष्म-कालीन राजधानी है। जब यहा का राज्य अंग्रेजों के हाथ में था, तब उन्होंने प्राय हर एक प्रान्त में कुछ ऐसे हिल स्टेशन बनाये और गर्मी के दिनों में सारा काम-काज स्थल-भूमि से उठाकर पर्वतीय भूमि में ले जाने का कार्यक्रम बनाया। क्योंकि उन्हें हिन्दुस्तान का धन अपने ऐश-आराम पर खर्च करना था, एवं यहा की गरीब हालत के लिए वे चिन्तित नहीं थे, इसलिए स्वराज्य के पहले यह सब चलता रहा। पर आश्चर्य है कि स्वराज्य के बाद भी जब कि देश के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता है, हमारे राज्याधिकारियों एव शासकों को राजधानी परिवर्तन करने मे होने वाला लाखों का खर्च कैसे स्वीकार्य है ?

इसके अलावा भी ग्रीष्म-काल में अधिकाश सरकारी सभाएं ऐसे पर्वतीय स्थानों पर होती हैं। सरकारी अफसरों के लिए दोनों ओर चादी बनती है। उन्हें हिल स्टेशन पर घूमने का कोई खर्च नहीं करना पड़ता, भत्ता भी मिलता है और सरकार का तथा कथित काम भी पूरा हो जाता है। पर मुझे लगता है कि इस देश के लिए इस तरह की फिजूल खर्च और आराम परस्त प्रवृत्ति खतरनाक एवं घातक है।

लिये देश भर मे सरकार ने कुछ चुने हुये प्रमुख स्थानों में इस तरह के विकास-विद्यालय स्थापित किये हैं। यहा से प्रशिक्षण प्राप्त करके ये विद्यार्थी गावों मे फैल जायेंगे और जन-सेवा तथा जन विकास का काम करेंगे।

यहाँ प्रशिक्षण भी विविध विषयों का दिया जाता है। खेती के उन्नत तरीके, शिक्षा, चिकित्सा आदि का स्वस्थ-विकास, पशु-पालन, ग्रामोद्योग आदि का प्रचार तथा इसी तरह की अन्य सामाजिक प्रवृतिया गाँव गाव मे सिखाने की शिक्षा ये विद्यार्थी ग्रहण करते हैं।

हजारी बाग

ता० ४-३-५७ :

राँची पहाड पर है और हजारी बाग तलहटी पर। टेढी मेढी सड़क इस तरह से घुमती हुई उतरती है कि देखते ही बनता है। पूरा रास्ता हरा भरा जगल का है। कहीं कहीं जंगली फूलों की शोभा भी अनिर्वचनीय है। जगह जगह जल स्रोत हैं। झरने बह रहे हैं। तालाब हैं। बीच बीच में छोटे छोटे गाव हैं। चारों ओर घन घोर जगल फैला हुआ है। ऐसे बीहड रास्तों से चलने मे भी कितना आनन्द आता है। सरकार ने ऐसे बीहड प्रदेश में भी डाक बगले काफी सख्या में बना रखे हैं। स्कूल भी बीच बीच में मिलते रहते है। इसलिए ठहरने की कोई दिक्कत नहीं आती।

हजारी बाग जिले का शहर है। लेकिन सफाई आदि की दृष्टि से यहाँ की नगर पालिका उदासीन ही है, ऐसा भान हुआ। वैसे हिन्दुस्तान में आम तौर से सफाई की तरफ उपेक्षा ही बरती जाती है। पर यहा तो काफी गन्दगी देखने को मिली। धर्मशाला आदि की

व्यवस्था का भी अभाव ही दिखाई दिया। लेकिन दिगम्बर जैन भाइयों के ७० घर हैं। प्रायः सभी बहुत अच्छे सम्पन्न और भावना शील हैं।

बिहार के कई नगरों में अखिल विश्व जैन मिशन का अच्छा काम है। कई कार्यकर्ता बहुत दिलचस्पी के साथ इस काम में लगे हैं। जैन मिशन ने विदेशों में भी जैन धर्म के प्रचार का अच्छा काम किया है। पद्मा गेट में राज्य रानी श्रीमती ललिता राज्य लक्ष्मी ने उपदेश का लाभ लिया और नारी आदर्श ऊपर प्रवचन सुना। महारानी ने निरामिष भोजी रहने का व्रत स्वीकार किया। वर्तमान धर्म के सम्बन्ध में भी काफी विचार विमर्श एक घण्टे तक होता रहा।

कोडरमा बाँध

ता० ७–२–५७ :

लगभग १६ मील के विस्तार में फैली हुई अपार जल राशि! उठती हुई लहरें! कल कल करता हुआ पानी। तीनों ओर पहाड़ियाँ। कितना मोहक है। स्वयं प्रकृति ही कितनी सुन्दर है, उस पर यदि मानवीय कला का हाथ लग जाय तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लग जाते हैं। जल और वनस्पति ये दोनों चीजें तो प्राकृतिक सम्पत्ति के सबसे सुन्दर उपहार हैं। नदी, झरने, बावड़ी, कूप, तालाब और समुद्र के रूप में जल का सौन्दर्य तथा जंगल उपवन खेत बाग-बगीचे आदि के रूप में वनस्पति का सौन्दर्य सर्वत्र संसार में फैला हुआ है। जल और वनस्पति न केवल सौन्दर्य के साथ हैं बल्कि मानव जीवन के आधार भी हैं। यदि इस प्रकृति का योगदान मानव को न मिले तो उसका जीवन ही असम्भव हो जाय।

कोडरमा बांध पर आकर हमने देखा कि जल में कितनी शक्ति है। कहीं कहीं तो यह जल संहारक रूप धारण करके मानव-समाज के लिए अभिशाप भी बन जाता है, पर यदि मानव इस प्रकृति के साथ अन्याय न करे, उसका केवल सदुपयोग मात्र करे तो यह प्रकृति उसके लिए शक्तिशाली मददगार बन जाती है।

इस विज्ञान युग मे प्रकृति पर बहुत अन्याय हो रहा है। बड़े बड़े आणविक शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से वायुमंडल दूषित किया जारहा है।, इसीलिए वर्षा आदि में अनियमितता आरही है और बाढ, भूकंप आदि का प्रकोप बढता जारहा है। मानव को संयम से काम लेने पर ही प्राकृतिक जीवन का आनंद मिल सकेगा।

झूमरी तिलैया

ता० ८-३-५७ :

यह धरती जिस पर मानव बसता है, कितनी महान है। कितनी सहन शील है। भगवान महावीर ने कहा है—

"पुढ्वि समे मुणी हविज्जा"

अर्थात मुनि को इस पृथ्वी के समान गंभीर, धीर, सहनशील और उदार होना चाहिए। यह भूमि भूमा है। 'भूमा' यानी अनल्प। अल्प नहीं। यह सारी सृष्टि को अपने वक्ष स्थल पर धारण किये हुए है। यह सारे संसार के लिए अपना रस देकर अन्न उत्पन्न करती है। पहाड़ों, जंगलों, नदियों और समुद्रों को भी इसी ने धारण किया है। इसको खोदने से पीने का मधुर जल प्राप्त होता है। यह धरती ही करोडों टन कोयला पैदा करके औद्योगिक समृद्धि को स्थिर रखती है। यह पृथ्वी यदि पैट्रोल पैदा न करे तो संसार

भर का यातायात और संचार क्या भर में ठप्प हो जाय। कहीं इसको खोदने से ताँबा मिलता है तो कहीं सोना और हीरे भी मिलते हैं। यह धरती क्या नहीं देती ?

झूमरी तिलैया को भी इस धरती ने एक विशिष्ट वरदान दिया है। यहाँ आस-पास के क्षेत्र में 'अभ्रक' नाम का एक मूल्यवान खनिज पदार्थ उपलब्ध होता है। इस खनिज पदार्थ ने लाखों मनुष्यों को आजीविका दी है और साधारण व्यक्ति भी इस 'अभ्रक' के व्यापार से करोड़पति बन गये हैं। ऐसी जगह है झूमरी तिलैया।

यहाँ एक बहुत सुन्दर दिगंबर जैन मंदिर है। दि० जैनों के करीब १० घर हैं। बहुत अच्छी जगह है।

गुणावा

ता० ११-२-५७ :

कहते हैं कि भगवान महावीर के प्रधान शिष्य और प्रथम गणधर गौतमस्वामी का निर्वाण इसी स्थान पर हुआ था। यहाँ जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर और इस युग के महान अहिंसोपदेष्टा भगवान महावीर का निर्वाण हुआ वह स्थान पावापुरी माना जाता है। लेकिन इतिहास वेत्ताओं की मान्यता है कि पावापुरी (पंपापुरी) यह नहीं किन्तु गोरखपुर जिले में विद्यमान है। यहाँ से १२ मील दूर है। गौतम स्वामी को भगवान महावीर ने अंतिम दिन अपने से दूर भेज दिया था। इस दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ महावीर प्रभु भी ठहरा करते थे।

पावापुरी

ता० १३-३-५७ :

यहा आते ही सारी स्मृतियां भगवान महावीर के जीवन पर चली जाती है। यह वही स्थान है, जहा कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन भगवान महावीर निर्वाण पद को प्राप्त हुए थे। जहा भगवान निर्वाण प्राप्त हुए थे, वहा एक जल मन्दिर बना हुआ है। चारों ओर कमल युक्त तालाब और बीच में स्वच्छ स्फटिक की तरह चमकता हुआ संगमरमर का मन्दिर।

यहा श्वेताम्बर और दिगबर समाज की ओर से अलग अलग मन्दिर तथा यात्रियों के लिए ठहरने का अलग अलग सुन्दर धर्मशाला का प्रबध है।

इसके अलावा यहा एक नई चीज का निर्माण हुआ है। श्वेताम्बर-मूर्तिपूजक समाज के प्रभाव शाली आचार्य श्री रामचन्द्र सूरि की प्रेरणा से जहा भगवान का समवसरण हुआ था वहा, आरस पत्थर का ७५ फीट ऊचा एक समवसरण बनाया गया है। अशोक वृक्ष के नीचे भगवान की मूर्ति है और जिधर से भी देखिए उधर से मूर्ति दिखाई देती है। यद्यपि हम मूर्तिपूजा को प्रश्रय नहीं देते, गुण-पूजा और भाव-पूजा का ही विशिष्ट महत्त्व है, पर स्थापत्य-कला की दृष्टि से यह सुन्दर कृति है।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, दीपावली के दिन यहां पर जैन समाज के हजारों व्यक्ति तीर्थ यात्रा के निमित्त से आते हैं और भगवान महावीर को अपनी श्रद्धांजलिया अर्पित करते हैं। वह दृश्य देखने लायक होता है।

जिस युग में चारों ओर हिंसा का कलुषित वातावरण छाया हुआ था और जब मानव का हृदय दया, प्रेम करुणा और सत्य से विचलित हो रहा था तब भगवान महावीर ने राज-पाट घर-बार सब कुछ छोड़कर जन-कल्याण के लिए तथा सत्य और अहिंसा का प्रचार करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था। इसी तरह आज भी सारा संसार हिंसा के दावानल में झुलसता जा रहा है। इसलिए हम सब लोगों का जो महावीर के अनुयायी हैं यह परम कर्तव्य है कि उनके उपदेशों को जन जन तक पहुँचाने के लिए अपना जीवन लगावें।

राजगृह

ता १५–२–५७ :

जैन-शास्त्रों में स्थान स्थान पर राजगृह का उल्लेख मिलता है। भगवान महावीर के युग में राजगृह प्रमुख धर्म केन्द्र था और वहां वे बार बार आया करते थे। राजगृह के परित: पांच ऊंची ऊंची पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों पर जाने के लिए रास्ता भी बना हुआ है। ऊपर श्वेताम्बरों और दिगम्बरों के मंदिर हैं। इन मंदिरों की परिक्रमा करना प्रत्येक जैन-तीर्थ-यात्री के लिए आवश्यक माना जाता है, इसलिए जो यात्री पैदल ऊपर तक नहीं जा सकते वे डोली में बैठकर ऊपर जाते हैं। पांचवें व चौथे पहाड़ के नीचे सुन्दर मन्दिर है। और इसी के आगे एक मणि मन्दिर भी है, जिसे शालिभद्र का कुआं भी कहा जाता है।

राजा बिंबिसार को बंदी बनाकर जिस बंदीगृह में रखा गया था, वह भी यहां पर ही है। उस युग के अनेक खंडहर अवशेषों के रूप में आज भी इतिहास के स्मृतिचिन्ह बनकर खड़े हैं। जिनको देखने से हमें इस बात का भान होता है कि हमारा अतीत कितना गौरव पूर्ण था।

राजगृह न केवल भगवान महावीर की साधना का मुख्य केन्द्र था, बल्कि महात्मा बुद्ध ने भी इसी स्थान को प्रधानत. अपनी ज्ञान-आराधना का केन्द्र बनाया था। गृद्धकूट आज भी उस युग की कथाए अपने में समेट कर खडा है, जहा महात्मा बुद्ध ने आत्म-चिंतन और जीवन-शोधन के क्षण व्यतीत किये थे। इसीलिए यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय तीर्थ बन गया है। जापान, बर्मा आदि देशों ने अपने बौद्ध-विहार यहा स्थापित किये हैं। सीलोन, थाइलेंड, तिब्बत चीन आदि विभिन्न देशों के यात्री बराबर यहा आते रहते हैं। सरकार ने भी उनके ठहरने का अच्छा प्रबध किया है।

यहां श्वेताबर एव दिगम्बर समाज की बडी बडी धर्मशालाएँ हैं। जहा प्रतिवर्ष हजारों यात्री आते हैं और इन ऐतिहासिक स्थानों की परिक्रमा करते हैं।

राजगृह न केवल जैनों और बौद्धों का तीर्थस्थान है, बल्कि यहा वैष्णव-समाज का और मुस्लिम समाज का भी उतना ही बोल बाला है। इस प्रकार राजगृह एक समन्वय भूमि है। जहा जैन, बौद्ध, हिन्दू, मुस्लिम, सभी का सगम होता है और सब एक दूसरे के प्रति आदर तथा प्रेम रखते हुए अपने अपने मार्ग पर दृढता पूर्वक चलते हैं।

राजगृह की प्रसिद्धि का एक कारण और भी है। यहा गधक-जल के कई प्रपात हैं। गरम और शीतल जल के ये प्रपात स्वास्थ्य के लिए अत्यत लाभप्रद माने जा रहे हैं, इसलिए प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति यहा आते हैं और इन प्रपातों मे अवगाहन करके स्वास्थ्यलाभ करते हैं।

नालंदा

ता० २०—३—५७ :

राजगृह से ८ मील चलकर हम नालंदा आये। नालदा प्राचीन बौद्ध युग में एक अत्युत्तम विश्वविद्यालय था। प्रमुख रूप से बौद्ध-भिक्षुओं के विद्याध्ययन का यह केन्द्र था। यह विश्व विद्यालय

पूर्णतः विकसित एक लघु नगर ही था। आज भी उसके अवशेषों को देखने से सहज यह प्रतीत होता है कि उस युग में भी इस देश ने शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति कर ली थी। शिष्यों और गुरुओं के निवास-स्थान भी बहुत अच्छे ढंग के बने हुए हैं।

संस्कृति कला स्थापत्य आदि सब क्षेत्रों में भारत बहुत प्राचीन काल से आगे बढ़ा हुआ है। इस बात के प्रमाण स्वरूप नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों के अवशेष हैं। इसी तरह हड़प्पा की खुदाई के बाद भी बहुत से ऐतिहासिक तथ्य सामने आये हैं। अजन्ता एलिफेंटा एलोरा आदि गुफायें भी भारतीय कला का सत्य प्रतिनिधित्व करती हैं।

बिहार सरकार ने 'नव-नालंदा-विहार' की यहाँ पर स्थापना की है। यह एक ऐसा विद्यापीठ है जहाँ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बौद्ध-दर्शन के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है। चीन जापान बर्मा सीलोन स्याम आदि विभिन्न देशों के बौद्ध भिक्षु यहाँ अध्ययन करते हैं।

हम जिस दिन पहुँचे उस दिन एक प्रतियोगिता का आयोजन था। प्रतियोगिता का विषय था— बौद्ध धर्म और संस्कृति से आज के युग की समस्याएँ हल हो सकती हैं।" इस प्रतियोगिता में विभिन्न विश्व विद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। इसमें हम भी शामिल हुए।

दानापुर (पटना)

ता० १-४-५७

बिहार शरीफ और बख्तियार पुर होते हुए हम बिहार की राजधानी पटना में २६-३-५७ को पहुँचे तब से बांकीपुर मीठापुर

आदि मुहल्लों में होते हुए आज दानापुर आये हैं। पटना बिहार की राजधानी है। पाटलिपुत्र के नाम से यह अति प्राचीन काल में विशिष्ट महत्व का नगर था। सम्राट् अशोक ने यहां से ही बौद्ध-धर्म के प्रचार का बिगुल बजाया था और करुणा, प्रेम एवं भ्रातृभाव का संदेश फैलाया था। जैन कथा-साहित्य में सेठ सुदर्शन की कथा बहुत प्रचलित है। जिन्होंने ब्रह्मचर्य की इतनी उत्कृष्ट साधना की थी कि उसके प्रभाव से शूली की सजा भी फूलों के सिंहासन के रूप में परिवर्तित हो गई। वे सुदर्शन यहाँ पर ही हुए। उनका यहाँ एक मन्दिर भी है। और भी कई दृष्टियों से पाटलिपुत्र का ऐतिहासिक महत्व है।

इस युग में भी पटना एक सुन्दर नगर है और आजादी के संग्राम में पटना एक प्रमुख केन्द्र रहा है। डा० राजेन्द्र बाबू जैसे आजादी-संग्राम के सेनानियों का पटना गढ था और सदाकत आश्रम जैसे स्थान आजादी के कार्यक्रमों का चक्रव्यूह रचने के लिए प्रसिद्ध थे।

पटना में खादी ग्रामोद्योग-भवन भी अपने अप्रतिम आकर्षण से विभूषित है। इसी तरह सर्वोदय आंदोलन का भी पटना प्रमुख केन्द्र है। श्री जयप्रकाशनारायण जैसे सर्वोदयी नेता पटना में ही रहते हैं। विद्या, साहित्य, संस्कृति, राजनीति आदि सभी दृष्टियों से पटना का अपना खास महत्व है।

आज दानापुर में बिहार प्रांत के वर्तमान राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकर भेंट करने के लिये आए। बातचीत के दौरान में हमने जैन-इतिहास, जैनधर्म और जैन संस्कृति के संबंध में विस्तार से चर्चा की। हमने दिवाकरजी से कहा कि "आज यद्यपि भारत में

जैन अनुयाइयों की संख्या अल्प है पर भारतीय संस्कृति कला, और दर्शन के विकास में जैन विद्वानों तथा विचारकों का अमूल्य योगदान रहा है। इस पर राज्यपाल महोदय ने अपनी स्वीकृति तथा सहमति बताते हुए कहा कि वास्तव में भ० महावीर ने अहिंसा का जो विचार विश्लेषण किया वह अपने आप में अद्वितीय स्थान रखता है। सरकार ने भी इस ओर अब धीरे धीरे ध्यान देना प्रारम्भ किया है। वैशाली का पुनर्विकास एवं वहां प्राकृत जैन विद्यापीठ की स्थापना करके सरकार ने इस ओर कदम उठाया है। राज्यपाल महोदय ने अपनी चर्चा के बीच कहा कि "आप अब पटना तक आगये हैं तो अब आपको वैशाली भी पधारना ही चाहिये। वहां जो काम हो रहा है उसे आप देखें और आगे उस काम को किस ओर मोड़ना चाहिये यह भी सुझायें। श्री दिवाकर जी के तथा वैशाली संघ के अत्यन्त आग्रह के कारण हमने पटना से वैशाली की ओर जाने का निर्णय किया।

सोनपुर

ता ८-४-५७।

आज हम सोनपुर पहुँचे। सोनपुर गङ्गा के उत्तरीय तट पर है। गङ्गा भारत की पवित्रतम नदियों में से एक है। इस नदी को हिंदू धर्म में बहुत महत्त्व दिया गया है और इस नदी के किनारे बड़े बड़े मुनियों ने तपस्या की है। एक कवि ने लिखा है—

> "गङ्गा जिसकी लहरों में दुलार चमकता भरता है।
> आमों से मानव कुरा जिसके रौद्र रूप से डरता है॥
> गङ्गा जिसने मोह लिया है भारत का सारा जीवन।
> तुला चुकी जो अपने तट पर, अहिंसी लोगों को अनगिनत

जिसके उद्गम से लेकर के, मिलने तक की सागर में।
परिव्याप्त है सरस कहानी, पूरे धरती अम्बर में॥
जिसने छूकर हरिद्वार को फिर यू पी सरसब्ज किया।
और इलाहाबाद पहुँच कर यमुना को निज प्यार दिया॥
अगर कानपुर की श्यामा को, गङ्गा ने आधार दिया।
तो काशी में तीर्थ रूप हो, भक्त जनों को प्यार दिया॥
उत्तर औ दक्षिण बिहार को, दो भागों में बाट दिया।
पटना से भागलपुर होकर, मार्ग स्वयं का छाट लिया॥
गुजरी फिर बंगाल भूमि से, खाड़ी का पथ अपनाया।
इतने सघर्षों से लड़कर, नाम हिन्दमहासागर पाया॥

इस प्रकार की पुण्य-सलिला गगा के उत्तरीय तट पार करके हम एशिया के प्रसिद्ध सोनपुर नगर मे पहुँचे। सोनपुर की प्रसिद्धि का कारण कार्तिक में लगने वाला उसका मेला है इस मेले से प्रभावित होकर ही किसी यात्री कवि ने लिखा होगा—

रेल्वे प्लेटफार्म है जिसका, भारत में लम्बा सबसे।
और एशिया भर का गुरुतर, लगता है मेला कबसे॥
ऊँट, बैल जैसे भी चाहें, गाय, भैंस, घोड़े, हाथी।
सब कुछ मिलता इस मेले में, मिल जाता खोया साथी॥
पूर्ण एशिया में न कहीं पर, इतना पशुओं का व्यापार।
मानव लाखों जुटते इसमें, होजाती है भीड़ अपार॥

हमें सोनपुर से अब सीधे वैशाली के मार्ग पर ही आगे बढ़ना है। यहा से वैशाली केवल २५ मील है।

वैशाली

ता० १२-४-५७ :

हम रामापुर से जिस लक्ष्य को लेकर चले थे वह आज पूरा हुआ और हम अपनी मंजिल पर कल पहुँच गए। आज महावीर जयन्ती का आयोजन हुआ। स्वयं राज्यपाल महोदय श्री आर. आर. दिवाकर भी इस समारोह में उपस्थित हुए एवं हमारा स्वागत किया।

यह जैन मन्दिर है। मन्दिर के पास के तालाब में मछली पकड़ने का सरकार की ओर से ठेका दिया जाता था। हमने इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करने की बात यहाँ के जिलाधीश के सामने रखी कि जिस नगरी से अहिंसा का महान मंत्र निकलना चाहिये वहाँ निरीह मछलियों की हिंसा कैसी! सरकार ने इस बात को स्वीकार करके ठेका प्रणाली को बन्द किया।

वैशाली के इतिहास और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए मैंने एक निबन्ध आज यहाँ तैयार किया।

रात्रि को करीब दो लाख जनता महावीर के जन्म जयन्ति समारोह में इकट्ठी हुई। उसके सम्मुख वैशाली के इतिहास और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा—

वैशाली और भगवान महावीर

सर्व नगर शिरोमणी वैशाली। जहाँ से कि अहिंसा परमोधर्म का सूत्र प्राप्त हुआ। इसी पवित्र नगरी ने भगवान महावीर वर्धमान की जन्म भूमि होने का विशेष गौरव प्राप्त किया है।

वैशाली के इतिहास में बड़े बड़े परिवर्तन हुए हैं। इस नगरी ने बड़ी राजनीतिक उथल पुथल देखी। यह वही नगरी है जहां वाल्मिकी रामायण में वर्णित है—"जब राम लक्ष्मण और विश्वामित्र ने यहां पदार्पण किया था तब यहां के राजा सुमति ने विशेष स्वागत किया था"। इस नगरी के पश्चिमी तट पर 'गण्डक" नामक नदी बहती है। वैशाली को "शाखानगर" कहते थे।

वृद्ध विष्णु पुराण में विदेह देश की सीमा बताते हुए लिखा है कि—विदेह के पूर्व में कौशिकी (आधुनिक कोशी) पश्चिम में गण्डकी, दक्षिण में गंगा और उत्तर में हिमालय है। पूर्व से पश्चिम की ओर २४ योजन लगभग १८० मील। उत्तर में १६ योजन लगभग १२५ मील है।

भगवान महावीर एवं बुद्ध के समय में विदेह की राजधानी वैशाली ही थी। भगवान महावीर के कुल चातुर्मासों में से १६ चातुर्मास विदेह में हुए थे। वाणिज्य ग्राम और वैशाली में १२, मैथिला में ६ और १ अस्थिगाम में।

पुराणों में वैशाली :

पुराणों में इसके विशाल, विशाला तथा वैशाली ये तीन नाम दिये गये हैं। पाटलीपुत्र से भी यह बहुत प्राचीन है। वाल्मिकी रामायण में विशाला के नाम से इसका और इसके संस्थापक तथा उसके वंशजों का वर्णन मिलता है। भगवान रामचन्द्र के समय से लगभग ८-१० पीढ़ी पूर्व विशाला नगरी का निर्माण हो चुका था। यह भागवत्पुराण एवं वाल्मिकी रामायण से साबित है। पाटलीपुत्र का निर्माण अजात शत्रु के समय में हुआ।

वैशाली की चर्चा वाल्मीकि रामायण आदि काण्ड के ४५ वें ४६ वें तथा ४७ वें सर्गों में की गई है। पैंतालीसवें सर्ग में यह कहा गया है कि इस स्थान पर देवों और दानवों ने समुद्र मंथन की मन्त्रणा की थी। ४६ वें सर्ग में "रानीदिति" की उस तपस्या का वर्णन है जो उसने इन्द्र को मारने वाले पुत्र की उत्पत्ति के लिये की थी। उसी सर्ग के अन्त में तथा ४७ वें सर्ग के आरम्भ में इन्द्र के प्रयत्न से "रानी दिति" की तपस्या का निष्फल होना वर्णित है। इसके पश्चात ४७ वें सर्ग के अन्त में वैशाली नगरी के निर्माण का इतिहास दिया गया है।

इस प्रकार केवल चार पुराणों में वैशाली की चर्चा पाई जाती है। वे ये हैं (१) वाराह पुराण (२) नारदीय पुराण (३) मार्कण्डेय पुराण और (४) श्री मद्भागवत। वाराह पुराण के सातवें अध्याय में विशाल राजा का (द्वारा) गया में पिण्डदान करने से उनके पितरों की मुक्ति कही गई है। उसी पुराण के ४८ वें अध्याय में भी एक विशाल राजा का उल्लेख है। पर ये काशी नरेश थे वैशाली नरेश नहीं।

नारदीय पुराण के उत्तर खंड के ४४ वें अध्याय में भी विशाला नरेश विशाल की चर्चा की गई है और यह कहा गया है कि ये त्रेतायुग में थे। पुत्र हीन होने से पुत्र प्राप्ति के लिए उन्होंने पुरोहितों की राय से गया में पिण्डदान किया। और अपने पिता पितामह तथा प्रपितामह का नरक से उद्धार कराया किन्तु यहाँ विशाल के पिता का नाम सत बतलाया है। संभव है इसका दूसरा नाम सित रहा है।

वैशाली की व्यवस्था प्रणाली :

ब्राह्मण युग में मैथिला और वैशाली दोनों राजतंत्र थे। उनकी

शासन में ७७०७ पुरुष थे। वे "राजुनम्" कहलाते थे। वैशाली गण की स्थापना श्रीमद्‌भागवत के उल्लेखानुसार 'राम और महाभारत" युद्ध के बीच हुई। वैशाली मे बहुत से छोटे बड़े न्यायालय थे। विभिन्न प्रकार के राजपुरुष इनके सभापति होते थे। उस समय के न्याय प्रणाली की विशेषता यह थी कि अभियुक्त (अपराधी) को तभी दंड मिलता था; जब कि वह क्रमश सात न्यायालयों (समितियों) द्वारा एक स्वर से अपराधी घोषित कर दिया जाता। इनमे से किसी एक के द्वारा वह (अपराधी) मुक्त भी कर दिया जा सकता था। इस प्रकार मानव स्वतन्त्रता की रक्षा की जाती थी। जिसकी उपमा सभवत: विश्व के इतिहास में नहीं है।

लिच्छिविगण का एक बड़ा बल था। वज्जिय सघ के अन्य सदस्यों से सयुक्त रहना। जैसा कि भीष्म ने कहा था "गणों को यदि जीवित रहना है तो उन्हें सर्वदा संघ प्रणाली का अवलम्बन करना चाहिये। कौटिल्य ने भी इसी प्रकार अपने अर्थशास्त्र में भी उल्लेख किया है।

गणतंत्र राज्य में एक कौंसिल थी। उसमें नव मल्ल और नव लिच्छवि के सदस्य थे।। गणतत्र करीब आठ सौ वर्ष चला।

वैशाली में लिच्छवियों के ७७०७ कुटुम्ब थे। हरेक कुटुम्ब का प्रमुख व्यक्ति गण सभा का सभासद होता था और वह गण राज्य कहलाता था। लेकिन गण सभा की एक कार्य वाहक सभा होती थी। जिसे अष्टकुलक कहते थे। आठ प्रमुख गण राजन इसके सदस्य थे। और प्राय गण सभा इनका चुनाव किया करती थी। अष्ट कुलक में से प्रत्येक का अलग अलग रंग निश्चत था। विशेष उत्सवों और अवसरों पर हर एक अष्ट कुलक अपने अपने निश्चित रंग के वस्त्रा भूषण धारण करके उसी रंग के घोड़े पर सवार होकर जाते थे।

जब गण सभा की बैठक होती थी तो उसे गण संनिपात कहा जाता था और उस बैठक के स्थान और सभा भवन का नाम 'संस्थागार' कहा जाता था। उस 'संस्थागार' के निकट ही एक 'पुष्करिणी" थी। जो कि आज बोमपोखर (तालाब) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें केवल गण राजन् ही स्नान करने के अधिकारी थे। जब नये गण राजन् का अभिषेक होता तब वह बड़े समारोह के साथ इस पुष्करिणी में स्नान करता था।

(१) वैशाली के सन्निकट एक कुण्डग्राम था। उस कुण्डग्राम में दो बस्तियाँ थी एक क्षत्रिकुण्डग्राम दूसरी ब्राह्मण कुण्डग्राम। एक में क्षत्रियों की बस्ती अधिक थी। दूसरे में ब्राह्मणों की। इनमें दोनों क्रमशः एक दूसरे के पूर्व पश्चिम में थे। दोनों पास पास थे। दोनों बस्तियों के बीच एक बगीचा था। जो "बहुशाल चैत्य के नाम से विख्यात था। दोनों नगर के दो दो खण्ड थे। ब्राह्मण कुण्डपुर का दक्षिणी भाग ब्रह्मपुरी कहलाता था। क्यों कि यहाँ ब्राह्मणों का ही निवास था। दक्षिण ब्राह्मण कुण्डपुर के नायक ऋषभ दत्त नाम के ब्राह्मण थे। जिनकी स्त्री का नाम देवानन्दा था। दोनों पार्श्वनाथ के द्वारा जैन धर्म को मानने वाले गृहस्थ थे। क्षत्रिय कुण्ड के नायक का नाम सिद्धार्थ था। इसके दो भाग थे। इसमें करीब ५०० पर "ज्ञाति क्षत्रिय थे। तथा राजा की उपाधि से मंडित थे। वैशाली के तत्कालीन राजा का नाम चेटक था। जिनकी पुत्री त्रिशला का विवाह सिद्धार्थ राजा से हुआ था।

(२) कुमारग्राम,प्राकृत भाषानुसार'कम्मार' कर्मकार का अपभ्रंश है। अर्थात् कर्म का अर्थ है मजदूरों का गाँव अर्थात् लुहारों का गाँव। यह गाँव क्षत्रिय कुण्डग्राम के पास ही था। महावीर स्वामी प्रव्रज्या लेकर पहली रात यहीं ठहरे थे।

(३) कोल्लाक संनिवेश'—यह ग्राम क्षत्रिय कुण्डग्राम के नजदीक ही था। कुमार ग्राम से विहार कर भगवान महावीर यहा से पधारे थे और यहीं पारणा किया था। उपाशकदशा के प्रथम अध्यन में इस स्थान की स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यह नगर वाणियग्राम के तथा उस बगीचे के बीच में पडता था।

(४) वाणीय ग्राम। यह जैन सूत्र का "वाणिज्यग्राम" बनियों का ग्राम है। गडकी नदी के दाहिने किनारे पर यह बड़ी भारी व्यापारी मंडी थी। यहा बड़े बड़े धनाढ्य महाजनों की बस्तिया थी। यहा के एक करोड़पति का नाम आनन्द गाथापति था। जो महावीर स्वामी का भक्त था।

बौद्ध ग्रंथों के विशेषत. दीवनीकाय अनुशीलन से पता चलता है कि बुद्ध के समय में यह नगरी बड़ी समृद्धिशाली थी। उसमे ७७७७ महल थे। यहा एक वेणुग्राम था। जहा बुद्ध ने वर्षों तक निवास किया।

जैन ग्रथ श्री कल्पसूत्र में भगवान महावीर को विदेहे, विदेह-दिन्ने, विदेहजच्चे, विदहसूमाला अर्थात विदेह, विदेह दक्ष, विदेह जात्य। विदेहसुकुमार लिखा है। वे वैशालीक भी थे। जमाली भी इसी ग्राम के रहने वाले थे। जिन्होंने ५०० राजकुमारों के साथ दीक्षा ली थी।

भगवान महावीर ने प्रथम पारणा कोलाग सन्निवेश, में किया। जैन सूत्रों के हिसाब से ये दो ग्राम होते हैं। एक कोलाग सन्निवेश, वाणिज्य ग्राम के पास, दूसरा राजगृही के पास। एक दिन में चालीस मील जाना कठिन है क्यों कि राजगृही नामक स्थान यहां से ४० मील पड़ता है। अत. यही कोलाग सन्निवेश है।

भगवान महावीर ने प्रथम चातुर्मास अस्थिक ग्राम में दूसरा राजगृही में किया। राजगृही जाते समय श्वेताम्बिका नगरी से होकर गये और तदनन्तर गंगा को पार कर राजगृही में पहुँचे। बौद्ध ग्रन्थों से मालूम होता है कि श्वेताम्बिका श्रावस्ति से कपिल वस्तु को जाते समय रास्ते में पड़ती थी।

भगवान महावीर :

भगवान महावीर का निर्वाण "पावापुरी" में माना जाता है। यह पावापुरी जो अभी मानी जाती है। उससे बिलकुल विपरीत बौद्ध ग्रन्थों के अनुशीलन से मालूम पड़ता है कि यह जिला गोरखपुर के पडरौना के पास पप उर ही है। यह पावापुरी के अन्दर मल्ल गणतंत्र राज्य था। गणतंत्र की सीमा विदेह देश में मानी जाती है। राजगृही अंग देश में है। और वहाँ का राजा अजातशत्रु गणतन्त्र राज्यों से बिलकुल विरुद्ध था। संगीति परियायसुत्त (दीघनीकाय का ३३ वाँ सुत्त) के अध्ययन से पता चलता है कि यह मल्ल नामक गणतंत्र लोगों की राजधानी थी। जिसके नये सस्थागार (संथागार) में बुद्ध ने विश्राम किया था। यह भी पता चलता है कि बुद्ध के आने के पहले ही "निगंठ नाथ पुत्र" का निर्वाण हो चुका था। बौद्ध ग्रन्थों में महावीर "निगंठ नाथ पुत्र" ही के नाम से प्रसिद्ध हैं। भ० महावीर का जन्म ई० स० ५९९ वर्ष पूर्व हुआ था। निर्वाण ५२७ वर्ष पूर्व।

विदेह दत्ता महावीर की माता का नाम था। आचारांग सूत्र में इस प्रकार लिखा है "समणस्सणं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिठ्ठस्स गुत्तविसेषा तिन्नि नाम धेज्जा। तिसला इवा विदेह दिन्ना इवा पियकारिणी इवा। यह नाम उनकी माता को इसलिए मिला था कि उनकी माता त्रिशला विदेह देश की नगरी वैशाली के

गण सत्तानक राजा चेटक की पुत्री थी। यह घराना विदेह नाम से प्रसिद्ध था। इसी कारण माता त्रिशला को विदेह दत्ता कहा गया है।

निरावलियाओं के अनुसार राजा चेटक वैशाली का अधिपति था और उसे परामर्श देने के लिए नो मल्लि और नो लिच्छवि गण राजा रहा करते थे। मल्ल जाति काशी में रहती थी और लिच्छवी कौशल मे। इन दोनों जातियों का सम्मिलित गणतत्र राज्य था। जिसकी राजधानी वैशाली और गणतत्र का अध्यक्ष चेटक था। वैशाली नगरी में हैहय वश में राजा चेटक का जन्म हुआ था। इस राजा की भिन्न भिन्न रानियों से ७ पुत्रिया थी। (१) प्रभावती (२) पदमावती (३) मृगावती (४) शिवा (५) ज्येष्ठा (६) सुज्येष्ठा (७) और चेलणा। प्रभावती वीतिमय के उदयन से, पदमावती चपा के दधिवाहन से, मृगावती कोशाम्बि के शतानिक से, शिवा उजयनी के प्रद्योत से और ज्येष्ठा कुण्डग्राम के वर्धमान के वड़े भाई नन्दिवर्धन से. सुज्येष्ठा और चेलणा उस समय कुमारी ही थी।

अहिंसा के अवतार सत्य के पुजारी शान्ति के अग्रदूत भगवान महावीर का जन्म चेत सुदी १३ के दिन मध्यरात्री के पश्चात हुआ था।

अर्वाचीन वैशाली :

वैशाली बहुत ही प्रतिष्ठा प्राप्त स्थान है। यह तो निर्विवाद वस्तु है। जैन धर्म की अपेक्षा बौद्धों ने इस नगरी को बहुत महत्त्व दिया है। अभी भी बौद्ध राष्ट्रों में अनेक स्थानों में वैशाली नाम के नगर इसकी स्मृति के रूप में बसाये हैं। विदेशों से प्रतिवर्ष हजारों की सख्या में बौद्ध भिक्षु एवं गृहस्थ वैशाली की यात्रा को आते हैं और वहा की धूल पवित्र मानकर अपने सिर एवं शरीर पर लगाते हैं। पूछने पर वे कहते हैं कि यह धूल तथागत के चरणों से पवित्र बनी हुई हैं। वर्तमान समय में वैशाली छोटे से

ग्राम के रूप में है। पटना से उत्तर की ओर २१ मील आगे बढ़ने पर यह ग्राम आता है। अभी भी यहां महाराजा चेटक का प्राचीन दुर्ग भग्नावशेष के रूप में अतीत की वीर गाथाएं और पवित्रता का नाद गूंज रहा है। इस दुर्ग में से सरकार द्वारा खुदाई करने पर कुछ महत्वपूर्ण वस्तुएं निकली हैं जिनको सुरक्षित म्युजियम बना कर रखी गई।

इस दुर्ग से पश्चिम की ओर मिश्रवरण एक तालाब है जिसमें वैशाली गणतन्त्र के निर्वाचित अभिषेकों को ही स्नान करने का अधिकार था। इसका अभी नाम बोसपोखर है।

वैशाली से पूर्व में आधा मील आगे बढ़ने पर एक हाई स्कूल आता है जिसका नाम तीर्थंकर भगवान महावीर हाई स्कूल है। यह हाई स्कूल स्थानीय व्यक्तियों द्वारा ही संचालित है। और वैशाली के अन्दर एक जनता द्वारा वैशाली संघ स्थापित किया हुआ है। जो कि इस ग्राम के विकास के लिए प्रति पल प्रयत्नशील रहता है।

भगवान महावीर का जन्म स्थान :

हाई स्कूल के उत्तर में १ मील की दूरी पर एक वासु कुण्ड नामक ग्राम है। यह वही ग्राम है जो कि क्षत्रिय कुण्ड ग्राम के नाम से प्रसिद्ध था। यहां पर म म० के कुछ वंशज लोग रहते हैं। उनके पास वंश परम्परा से कुछ एकड़ जमीन थी। जिसका कि वे सरकार को मुनिकर तो देते थे किन्तु उस पर खेती नहीं करते थे। सरकारी कर्मचारियों द्वारा इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि यह वह स्थान है जहां महावीर का जन्म हुआ। परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं था कि महावीर कौन है? क्योंकि महावीर हनुमानजी को भी कहते हैं।

सरकार के इतिहास विभाग ने इतिहास एवं कल्पसूत्र आदि ग्रन्थों का अवलोकन किया। और निश्चय किया कि यहां सिद्धार्थ पुत्र महावीर का जन्म हुआ है। यह शुभ समाचार विस्तार पूर्वक भग

वान महावीर के वशजों को मालूम हुआ तो बहुत ही उत्साह से वह जमीन बिहार सरकार को उसके विकास के लिए दे दी। करीब चार वर्ष पूर्व उसी स्थान पर भारत गणतन्त्र के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के कर कमलों द्वारा एक विशालकाय शिलान्यास किया गया है। जिसके एक तरफ हिन्दी में भ० म० के जन्म का वर्णन है और दूसरी तरफ प्राकृत भाषा में।

सरकार द्वारा जयन्ती समारोह :

वैशाली मे करीब १५ वर्ष से प्रत्येक चैत्र सुदी १३ के दिन भ० महावीर का जन्म बिहार सरकार की तरफ से मनाया जाता है। इस प्रसग पर करीब डेढ से २ लाख आदमी बहुत ही उत्साह पूर्वक उपस्थित होते हैं। और भ० म० के प्रति अनन्य श्रद्धा व्यक्त करते हैं। मुझको भी दिनाङ्क १२-४-५७ ई० को बिहार सरकार के गवर्नर श्री आर० आर० दिवाकर एव वैशाली संघ के अति आग्रह से इस जयन्ती समारोह में सम्मिलित होने का एव जनता को भ० म० का सन्देश सुनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

जैन प्राकृत इन्स्टिट्युट :

भारत में मुख्यतया तीन सस्कृतियों का उद्गम स्थान है। जैन, बौद्ध एव वैदिक सस्कृति। भारत सरकार तीनों सस्कृतियों को जीवित रखने के लिए तीन इन्स्टिट्युट चला रही है। बौद्ध सस्कृति के लिए नालन्दा, वैदिक संस्कृति के लिए मैथिला (दरभगा) एव जैन सस्कृति के लिए वैशाली,जैन प्राकृत इन्स्टिट्युट मुजफ्फर में चला रही है। इसके प्रति वर्ष हजारों का व्यय सरकार करती है। इस इन्स्टिट्युट के लिए निजि भवन बनाने का वैशाली संघ का निर्णय करने पर वासुकुण्ड ग्राम की जनता ने ३२ बीघा जमीन सरकार को भेंट दी है। जिस पर कि हमारे राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने करीब चार वर्ष पूर्व शिलान्यास किया है। और शाहु शान्तिप्रसाद जैन तथा

जन्म गृह, महल, जहाँ अतिथि गृह, उपासना गृह आदि २ की योजनायें बना रहे हैं।

इस प्रकार वैशाली जैनियों के लिए सभी तीर्थ स्थानों की अपेक्षा बहुत ही महत्व रखती है। अतः समस्त जैनों से अनुरोध है कि वे अपनी २ कोम्फरेन्सों के साम्प्रदायिक ममत्व दूर कर इस पवित्र भूमि के विकास के लिए जल्दी से जल्दी प्रयत्न शील बनें। अन्यथा बौद्ध धर्मावलम्बी इस पवित्र भूमि को अपने हस्तगत कर लेंगे। इसमें कोई शक नहीं है क्योंकि वे हजारों की संख्या में विदेश से आते हैं। और कुछ न कुछ निर्माण कार्य करके जाते हैं। किन्तु जैन अभी तक इस तरफ जागृत नहीं हुए हैं। अतः इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें। ऐसी आशा है।

वासुकुण्ड

ता० १४-५-५७ :

सरकार ने खोज करके यह निर्णय किया है कि अहिंसा के महान उपदेष्टा भगवान महावीर का जन्म-स्थान यहां पर ही है। यह जगह वैशाली से ९ मील दूर है। महावीर जन्म दिन के अवसर पर यहां की साधारण जनता भी यहां पर दीपक जलाती है और वासुकुण्ड ... है। यहां पर ही प्राकृत विद्यापीठ का शिलान्यास किया गया है और राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के हाथ से शिलालेख की स्थापना की गई है। यहाँ पर भीनापुर में और वैशाली में आमतौर से लोग निरामिष भोजी हैं, यह भी महावीर प्रभु की परम्परा का प्रमाण है। यद्यपि अभी तक तो जैन लोग महावीर का जन्म स्थान एक दूसरी ही जगह मानते आये हैं पर ऐतिहासिक प्रमाणों से यहीं पर महावीर का जन्म स्थान सिद्ध होता है।

मुजफ्फरपुर

ता० २५–४–५७ :

यह उत्तर बिहार का एक प्रमुख नगर है। बिहार में खादी का जो काम चलता है, उसका प्रधान केन्द्र यहां पर ही है। सैंकड़ों कार्यकर्त्ता खादी के इस प्रधान कार्यालय में काम करते हैं और बिहार भर में विस्तृत लाखों रुपये के खादी कार्य का संयोजन करते हैं।

यहां पर ५ घर जैनों के हैं। बाकी गुजराती घर १० और मारवाड़ियों के ६०० घर हैं। यहां पर ही अगला चातुर्मास किया जाय, ऐसी आग्रह भरी प्रार्थना यहां के निवासियों की तरफ से आ रही है। हम १६-४-५७ को यहां आये, तब से प्रतिदिन व्याख्यानों के कार्यक्रम रहते हैं और जनता अपार हर्ष तथा उत्साह के साथ लाभ ले रही है। भले ही जैन श्रावकों के घर न हों, पर लोगों में जो अनन्य श्रद्धा-भक्ति दीख पड़ती है, वह आकर्षण पैदा करने वाली है।

ता० २६–४–५७ :

यहां की जनता के आग्रह को टालना कठिन था। इसलिए आखिर हमने यही निर्णय किया है कि इस वर्ष का चातुर्मास मुजफ्फरपुर में व्यतीत किया जाय। भक्त की भक्ति आखिर रंग लाती ही है। जो लोग जैन धर्मानुयाई भी नहीं हैं और जिनके साथ हमारा कोई पूर्व परिचय भी नहीं है, उनकी इस प्रकार से अनिर्वचनीय भक्ति तथा श्रद्धा जब दृष्टिगोचर होती है, तब यह मानने के लिए हम बाध्य हो जाते हैं कि भक्त के सामने भगवान को भी झुकना पड़ता है।

जब हमने यह निर्णय किया कि अगला चातुर्मास यहां पर ही बितायेंगे तो सहज प्रश्न उपस्थित हुआ कि चातुर्मास के पहले के समय का कहां सदुपयोग किया जाय ? समस्या के साथ ही समाधान छिपा रहता है । नेपाल जाने का विचार तुरन्त सामने आया क्योंकि हमारी माग की महारानी ललिता राज्य लक्ष्मी ने पहले ही नेपाल की विनति की थी वैसुर नेपाल के राज्य कु वारी हैं । तथा मुजफ्फरपुर एक तरह से भारत-नेपाल की सीमा के पास का ही शहर है । अत यह स्वाभाविक ही था कि नेपाल-यात्रा का कार्यक्रम बनाया जा सके । विचार विमर्श के बाद आखिर हमने यह निश्चय किया कि चातुर्मास के बीच का समय नेपाल यात्रा करके उपयोग में लाया जाय ।

रून्नि

ता० २८-४-५७ ।

नेपाल की ओर हम बढ़े जा रहे हैं । उत्तर बिहार का यह प्रदेश भी अत्यंत सुहावना है । यहां के लोग अत्यंत सरल और मेहनती होते हैं । आज हम अंबर चरखा विद्यालय में ठहरे हैं । गांधीजी ने चरखे को अहिंसा का प्रतीक बनाया और चरखे के आधार पर सारे देश को संगठित करके आजादी हासिल की । उन्होंने विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था की मौलिक कल्पना उपस्थित की और कहा कि बड़े बड़े कारखानों में मानवता शोषित है । इसलिए घर घर में उद्योगों की स्थापना होनी चाहिए और चरखा एक ऐसा ग्रामोद्योग है जो गांव-गांव और घर घर में प्रवेश पा सकता है ।

पहले का चरखा बहुत अविकसित था । बुद्धिजीवि वर्ग के लोग 'बुढ़िया का चरखा' कहकर उसकी हंसी उड़ाते थे । तब गांधीजी ने चरखे में सुधार करने की तरफ ध्यान दिया बांस चरखे से लेकर

किसान चक्र, यरवदा चक्र और सुदर्शन चक्र के रूप मे उसके त्रिविध रूप सुविकसित होते गए। गाँधीजी के निधन के बाद भी चरखे का अर्थशास्त्र उनके शिष्यों ने जीवित रखा और उसी के परिणाम स्वरूप अम्बर चरखे का आविष्कार हुआ।

अम्बर चरखा गरीवों के लिए प्राणमय सिद्ध हुआ। जो चरखा मिल के मुकावले में किसी तरह टिक नहीं सकता था, उसमें अम्बर चरखे ने नई क्रांति पैदा की और मिल के सामने भी खडा रह सके ऐसी एक चीज देश को मिलगई। हिन्दुस्तान मे आज 'अम्बर चरखा' बहुत लोक प्रिय सिद्ध हो रहा है।

यहाँ पर इसी अम्बर चरखे का प्रशिक्षण दिया जाता है। आजकल करीब २० स्त्रियाँ प्रशिक्षण ले रही हैं। ३ महीने में अम्बर चरखे की पूरी शिक्षा प्राप्त हो जाती है।

सीता मढी

ता० २६–४–५७ :

हम अलबेले साधु अपनी मंजिल पाने के लिए बढ़े चले जा रहे हैं। रास्ते में कहीं सम्मान तो कहीं अपमान। ठीक भी है। आज साधु वेष के नाम पर जो दंभ चलता है,उसके कारण लोगों को साधुओं के प्रति कुछ नफरत पैदा हो तो आश्चर्य ही क्या है? कोई साधु भंग और गाजे का नशेबाज होता है तो कोई भूखों मरने के बजाय साधू वेश धारण किये हुए है। कोई लोगों को उनका भविष्य बता कर ठगता है तो कोई किसी दूसरी राह से अपना उल्लू सीधा कर लेता है।

सीतामढ़ी उत्तर बिहार का एक प्रमुख नगर है। यहाँ पर मरापन्थियों के ४ घर हैं। हमने व्याख्यानों का कार्यक्रम भी रखा और धर्म चर्चा भी खूब हुई। धर्म चर्चा में एक ऐसा रस है जो जीवन की शुष्कता को मिटा देता है और उसे मधुर सुखद बना देता है। लोग आते हैं तरह तरह के सवाल पूछते हैं शास्त्रों की बातें सामने आती हैं तर्क वितर्क होते हैं और इन सबके बाद एक सुन्दर समाधान मिलता है। धर्म चर्चा में भिन्न धर्मों शास्त्रों ग्रन्थों परम्पराओं आदि का विश्लेषण होता है और इन सब में जो जीवन को समुन्नत बनाने का मार्ग मिलता है उसे स्वीकार करने की प्रेरणा होती है। इस दृष्टि से धर्म चर्चा का महत्त्व प्रवचन से कम नहीं। प्रवचन में वक्ता किसी विशिष्ट विषय का विश्लेषण करता है। पर धर्म चर्चा में प्रश्नकर्ताओं के साथ वक्ता का तादात्म्य सम्बन्ध हो जाता है। हमारी यात्रा में इस प्रकार धर्म चर्चा का अवसर खूब आता है।

सीतामढ़ी चम्पारण जिले का मुख्य शहर है। यह वही चम्पारण जिला है, जहाँ महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक किसान सत्याग्रह किया था। किसानों पर होने वाले अन्याय के विरोध में जब गांधीजी ने आवाज उठाई तो सारे देश की नजरें चम्पारण की तरफ लग गई थी। सत्याग्रह के इतिहास में चम्पारण का एक तीर्थ स्थान की भांति महत्त्वपूर्ण स्थान है।

लोकहा

ता० २-५-१७ :

आज हम जिस गांव में ठहरे हैं यहाँ हमने देखा कि छुआ-छूत का भूत अभी तक काफी मात्रा में विद्यमान है। यहाँ तक कि एक मुहल्ले के लोग दूसरे मुहल्ले में पानी भरने के लिए भी नहीं

जाते। इसी तरह एक जाति की कोई स्त्री यदि पानी भरती हो तो दूसरी जाति की स्त्री तब तक वहा नहीं जायगी जब तक वह स्त्री वहा से हट न जाय।

हिन्दुस्तान को इस स्पृश्या स्पृश्य के रोग ने बहुत नीचे गिराया है। मानव-मात्र की समानता के सिद्धान्त से दूर होकर ऊँच-नीच की भ्रांति पूर्ण मान्यताओं मे यह देश फंसा, इसीलिए इमे गुलाम होना पड़ा, गरीबी के दल दल में फसना पड़ा और दुनिया के पिछड़े हुए देशों में इसकी गिनती होने लगी।

इस देश में कोई भी चीज चरमोत्कट अवस्था में पहुँच जाती है, इसलिए आदर्श और व्यवहार में एक लम्बी खाई उत्पन्न हो जाती है। एक तरफ तो अद्वैतवाद का सिद्धान्त चलता है। जड़-चेतन, सब में ईश्वर के होने का शास्त्र प्रतिपादित किया जाता है। दूसरी ओर मानव-मानव के बीच घृणा के बीज बोये जाते हैं। ऊँच नीच की सकुचित दीवारें खड़ी की जाती है। यह स्थिति कितनी भयावह, दुखद और हास्यास्पद है। यह गाव नेपाल का है। हमने नेपाल में "गौर" से प्रवेश किया। यह प्रदेश नेपाल की तराई प्रदेश कहा जाता है। तराई प्रदेश में शिक्षा की बहुत कमी देखने में आई। गरीबी भी अधिक है।

वीर गंज

ता० ४-५-५७ :

यह नेपाल का प्रवेश-द्वार है। वीरगंज में प्रवेश करते ही मन में उत्साह की लहर दौड़ गई। एक महीने की परीक्षा और पद यात्रा के बाद नेपाल का प्रवेश द्वार आया। सुरम्य प्राकृतिक सौन्दर्य के

वातावरण में आते हुए यदि मन आनन्द-विभोर हो उठे तो इसमें क्या आश्चर्य ? मनुष्य जब अपनी मंजिल के निकट पहुँचता है तो उसमें दुगुने जोश के साथ सहसा उठती है ।

उधर रक्सोल हिन्दुस्तान का आखरी रेल्वे स्टेशन है और इधर ऊँचे हिमालय के मस्तक पर बसा हुआ रमणीय नेपाल है ।

बीरगंज एक मध्यम स्थिति का कस्बा है । यहां मारवाड़ी भाइयों के भी १५ के लगभग घर हैं । धर्मेश भी है । यहां से नेपाल जाने के लिए रेल्वे मिलती है ।

अमलेखगज

ता० ८-५-५७ :

यह स्थान स्थल प्रदेश का आखिरी स्थान है । रेल्वे भी यहां समाप्त होजाती है । आगे दुर्गम घाटियों में से एक सड़क का मार्ग है जिसके द्वारा ही सारा यातायात सम्पन्न होता है । इसे त्रिभुवन राजपथ कहते हैं । भारत की सेना टुकड़ियों ने इसे बनाई है । सड़क भी साधारण स्थिति की है । नदी के किनारे से चढ़ता हुआ मार्ग अत्यन्त सुहावने दृश्यों से भरा है । ऐसा घनघोर जंगल कि जिसकी कल्पना ही की जा सकती है । इस घनघोर जंगल से आच्छादित दोनों ओर ऊंची पहाड़ियां तथा कलकल करती हुई बहने वाली स्वच्छ सलिला सरिता ! नेपाल की राजधानी काठमांडू तक ऐसा ही सुहावना दृश्य है ।

अमलेख गंज एक अच्छा व्यापार केन्द्र है । एक ओर सारा स्थल प्रदेश तथा दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश काठमांडू आदि । इन दोनों का मध्यबिन्दु है यह अमलेखगंज जो दोनों को जोड़ने का

काम करता है। यहा भी मारवाड़ी व्यापारियों के १२ घर हैं। मारवाडी समाज एक ऐसा व्यापार कुशल समाज है, जो दुर्गम से दुर्गम स्थान में भी पहुँच कर व्यापार-कार्य करता है। व्यापार समाज की सुव्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हालाकि आज तो व्यापार मे प्रामाणिकता, नैतिकता और सेवा भावना का अभाव हो गया है। व्यापार को केवल अधिकाधिक अर्थ-सग्रह का साधन बना लिया गया है। परन्तु यदि शुद्ध व्यापारिक नियमों के अनुसार प्रामाणिकता पूर्वक व्यापार किया जाय तो उसमें मारवाड़ी समाज का उल्लेखनीय योगदान माना जा सकता है।

भैंसिया

ता० ६–५–५७ :

नेपाली भाइयों से अच्छा संपर्क आरहा है। इस प्रकार से जैन साधुओं का संपर्क इन लोगों के लिए सर्वथा नई बात है। इस-लिये बड़ी उत्सुकता के साथ आते हैं। हमने अपना यह नित्यक्रम बनाया है कि रात्रि-काल में नेपाली भाषा में नेपाली भाइयों द्वारा ही भजन कीर्तन हो। यह कार्यक्रम बडा रुचिकर सिद्ध हो रहा है। नेपालियों में ईश्वर और देवी देवताओं के प्रति बहुत श्रद्धा होती है। इसलिए वे बडे तन्मय होकर भजन कीर्तन का कार्यक्रम करते हैं।

पहाड़ों पर रहने वाले ये नेपाली स्त्री पुरुष बडे परिश्रमी, पुरुषार्थी और सरल स्वभाव के होते हैं। यहा स्त्रिया भी पुरुषों की तरह ही काम करती हैं। खेती की मुख्य जिम्मेदारी स्त्रियों पर ही होती है। ये लोग पर्वत चोटियों पर लघु काय कुटिया का निर्माण बड़े चातुर्य के साथ करते हैं। कुटिया का रूप बहुत लुभावना होता

है। दूर से ऐसा ही प्रतीत होता है मानो कोई ऋषि कुटिया ही है। इन कुटियाओं के आस पास छोटी छोटी क्यारियों में ये लोग खेती करते हैं। दूर से ऐसा लगता है मानों ये क्यारियां नहीं बल्कि झोपड़ियों में जाने के लिये पहाड़ पर सीढ़ीयों का निर्माण किया गया है पर ये सब में सीढ़ीयां नहीं बल्कि क्यारियां होती हैं। जगह २ पर निर्मल-स्वच्छ सलिल के स्रोत और झरने मन को मोह लेते हैं। प्रकृति मानों सोलह श्रृंगार करके यहां धरती पर अवतरित हो गई है। मार्ग भी इस प्रकार टेढ़ी मेढ़ी घाटियों के बीच से निकलता है कि दूर से आभास तक नहीं होता कि आगे मार्ग आ रहा है। ऐसा ही लगता है मानों एक पर्वत श्रेणी दूसरी पर्वत श्रेणी से सट कर खड़ी है पर आगे जाने पर रास्ता मुड़ जाता है और स्पष्ट ही ये पर्वत श्रेणियां एक दूसरी से बहुत दूर हो जाती हैं।

इस प्रकार के मार्गों में से हम आगे बढ़े चले आ रहे हैं। यहां से दो रास्ते हैं एक रास्ता सड़क का है जो कि करीब ८ मील के चक्कर का है दूसरे भीमफेरी का है जो पगरास्ता पहाड़ियों पर से नेपाल काठमांडू जाता है।

भीमफेरी

ता १०-५-६७ :

यह भीमफेरी एक ऐतिहासिक स्थान है। ऐसा कहा जाता है कि लाक्षागृह से बचकर भागे हुए पांडवों ने इसी जगह विश्राम पाया था। और भीम ने यहीं पर हिडम्बा के साथ पाणिग्रहण (फेरी) किया था।

इधर पहाड़ी जातियों के लोग बहुत असरहन भी मांसाहारी तथा निर्दयी इतने कि खुले बाजारों में भैंसें काटते हैं,

राक्षसों की कल्पना ऐसे ही लोगों के आधार पर निर्मित हुई होगी। नेपाल के आड़े-टेढ़े रास्ते और ऊची-नीची घाटियों की झोपड़ियों में रहने वाले ये लोग आज के युग के लिए चुनौती हैं। यह एक आवश्यक काम है कि इन लोगों का सुधार किया जाय, तथा इन्हें मासाहारी असंस्कृतिक जीवन से मुक्ति दिलाई जाय।

जिस युग में नेपाल की राजधानी काठमाड़ू तक पहुँचने के अन्य विकसित मार्ग नहीं थे, तब भीमफेरी के पैदल-रास्ते से ही लोग काठमाडू पहुँचा करते थे। अब भी वह रास्ता है। पर भेंसिया से काठमाडू तक ८० मील की एक सड़क हिन्द-सरकार ने बनाई है। जिसका नाम त्रिभुवन राजपथ है। ८१२६ फीट की चढ़ाई लाघकर इस मार्ग से ही हमें काठमाडू पहुँचना है।

कुलेरवानी

ता० ११–५–५७ :

भेंसिया और भीमफेरी के बीच में एक गाव है धुरसी। इस गाव से काठमाडू तक तार के सहारे से चलने वाली डोलियों का मार्ग है। वह मार्ग आज हमने भीमफेरी से १ मील पूर्व दूर देखा। पहाड़ की चढ़ाई बहुत कठिन है। इसलिए इस आकाश-मार्ग का निर्माण किया गया है।

रास्ते में गढी-पुलिस चौकी आई। यहा पर कड़ाई के साथ विदेशी-यात्रियों के सामान और पासपोर्ट की जाच की जाती है। हमसे भी पासपोर्ट के लिए पूछा गया। हमने अधिकारियों को बताया कि जैन साधुओं के कुछ विशिष्ट प्रकार के नियम होते हैं। वे किसी एक देश के नहीं होते। सारे संसार में मुक्त विचरण करने

वाले ऐसे साधुओं के लिए किसी प्रकार का प्रतिबंध भी नहीं होता। वे अप्रतिबंध विहारी होते हैं। ऐसा समझने पर अधिकारी मान गये और हमें आगे बढ़ने का मार्ग मिला।

एक वह भी युग था जब नेपाल हिन्दुस्तान का ही अंग था। बर्मा सिलोन और अफगानिस्तान तक भारत की सीमाएं थी तथा वहां जैन धर्म की जोत जलती थी पर एक यह भी युग है जब किसी मुनियों को नेपाल आदि देशों में मुक्त-प्रवेश का भी अधिकार नहीं है। संपूर्ण मानव-जाति एक है और सारे संसार में प्रत्येक मनुष्य को कहीं भी स्वतंत्र विहरण का अधिकार प्राप्त हो तभी विश्व-मानुषत्व की एवं विश्व-बंधुत्व की कल्पना साकार होगी। कम से कम इन राष्ट्रों में जो कभी एक ही राष्ट्र के अंग रहे हैं मुक्त-प्रवेश की सुविधा मिलनी ही चाहिए।

चितलांग

ता० ११-५-५७ :

प्रातःकाल हम कुलेखानी में थे। सायंकाल यहां आये। कुलेखानी तो नदी के किनारे पर ही बसा है। चितलांग तक रास्ते में पानी के झरनों का अपरिमित आनंद मिला। नदियों व नालों पर झूलने वाले पुल बने हुए हैं। इन पुलों के नीचे गड़गड़ारव करता हुआ पानी बहता है। एक झरने की शब्द-संगतियां कानों में गूंजती ही रहती है कि दूसरा झरना आ जाता है। इनकी संख्या इतनी अधिक है कि गिनती करना भी संभव नहीं। जैसे कोई वाद्य बज रहा हो और स र ग म का आलाप हो रहा हो ऐसा ही भान होता है।

इस क्षेत्र के लोग सूर्यास्त तक सब काम समाप्त करके अपने अपने घरों में घुस जाते हैं। कृषि-कार्य तो दिवस कार्य ही है।

बाजार का और व्यवसाय का जीवन इन गांवों मे नहीं के बराबर है। अत इन लोगों के लिए रात्रि चिर शाति तथा विश्राम का सदेश लेकर आती है। आज कल शहर में, जहा व्यापार तथा उद्योग ही जीवन के सचालन का प्रधान माध्यम है, सूर्यास्त के बाद चहल पहल प्रारभ होती है। बारह एक बजे तक सिनेमा चलता है। होटल चलते है। लोग जागते हैं, बिजली के तेज प्रकाश में रहते हैं, इससे न केवल प्राकृतिक नियम टूटता है, बल्कि शरीर पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडता है। विदेशों में कई जगह बाजार २४ घटों लगता है। हम जैन मुनियों के लिए तो कहीं भी, एक व्यवस्थित जीवन-क्रम रहता है। सूर्यास्त से पहले पहले आहार आदि की क्रियाओं से निवृत हो जाते है। रात्रि का उपयोग विश्राम, चिन्तन और ध्यान योग में करते है।

यहा के लोग जिस प्रकार खेती करते हैं, वह विशेष दर्शनीय है। ऊचा नीचा पहाड़ी प्रदेश होने के कारण हल-बैल से तो खेती हो नहीं सकती। सारी खेती हाथ से ही होती है। राष्ट्र के नेता कहते हैं हाथ से की जाने वाली खेती न केवल सुन्दर होती है। बल्कि उसमे उत्पादन भी ज्यादा होता है। एक एक पौधे से किसान का सीधा सपर्क आता है। फिर कुछ अर्थ शास्त्रियों का यह भी कहना है कि एक समय ऐसा आयेगा, जब इस धरती पर मनुष्य सख्या अत्यधिक बढजाने से बैलों को खिलाने के लिए और उनका पालन करने के लिए मनुष्य के पास जमीन ही नहीं बचेगी। यहा के लोगों ने तो प्राकृतिक अर्थशास्त्र से हाथ की खेती स्वभावत. ही अपना ली है। खेती का दृश्य इतना कलात्मक होता है कि देखते ही बनता है। कौन कहता है कि इन अनपढ़ देहाती किसानों को कला का ज्ञान नहीं है।

काठमांडू

ता० १२-५-५७ :

नेपाल की यह सुप्रसिद्ध नगरी और राजधानी है। १४ मील के घेरे में दूर दूर बसी हुई नेपाल की इस रमणीय नगरी में पहुँच कर एक संतोष हुआ। काठमांडू आधुनिक सभी साधनों से सम्पन्न है। वैसे नेपाल का पूरा क्षेत्रफल ५४ १४२ वर्ग मील है। जिसमें ३१,८९० गाँव है और लगभग १ करोड़ की आबादी है। नेपाल का हृदय है काठमांडू। साधुओं के भक्त नेपाल नरेश ने किसी युग में अपने परम आराध्य गुरुदेव के लिए एक ही वृक्ष की लकड़ी का एक 'काष्ठ मंडप' तैयार करवाया। धीरे धीरे आगे चल कर काष्ठ मंडप के नाम को ही आम जनता ने काठमांडू कहकर प्रसिद्ध कर दिया।

यहीं है विश्व विख्यात हिन्दुओं के पशुपति नाथ का विशाल मन्दिर जिसके सामने वागमती नदी अपने स्वच्छ प्रवाह के साथ बहती है। भगवान नीलकण्ठ की एक सुषुप्तावस्था की प्रतिमा भी यहीं पर है, जिसके दर्शन के लिए यात्रियों को जलकुंड के बीच जाना पड़ता है। वहां निरन्तर ११ धाराएँ गिरती है। इसी तरह प्राचीन कला-वैभव से संपन्न अनेक बुद्ध, कृष्ण आदि के मन्दिर काठमांडू में एक छोर से दूसरे छोर तक फैले हुए हैं।

यहां पर कहीं कहीं बुद्ध की प्रतिमाओं पर सर्प का चिन्ह भी देखने को मिलता है। एक विद्वान जैन यात्री ने इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए लिखा है "भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर सर्प का जो चिन्ह है उससे जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा का अद्भुत साम्य है। बारह वर्षीय दुर्भिक्ष के समय आचार्य भद्रबाहु ने नेपाल

मे प्रवास किया था। पार्श्वनाथ उनके इष्ट थे। उन्होंने शायद पार्श्वनाथ की प्रतिमाए स्थापित करवाई हों, और वे ही कालान्तर में बुद्ध-प्रतिमाओं के रूप मे परिवर्तित हो गई हों। जैन साधुओं की नेपाल यात्रा स्थगित होने से हजारों वर्षो का परिणाम यह हो सकता है कि जिन-मूर्तियों को बुद्ध मूर्तियों के रूप में लोग पूजने लग जाय। बुद्ध परिचित रहे हैं, इसलिए पार्श्वनाथ का परिचय बुद्ध में समाहित हो गया हो।"

(राह के सघर्ष पृष्ठ १७)

नेपाल में द्वितीय भद्रबाहु स्वामी आठमी शताब्दी में विचरण कर रहे थे, उनको पूर्वो का ज्ञान था, उनसे ज्ञान सपादन करने के लिये स्थुलीभद्रजी ने अपने दो साधुओं को लेकर नेपाल की ओर प्रयाण किया था तब नेपाल की विकट पहाड़ियों की उतार चढ़ाई मे घबराकर स्थूलीभद्रजी के दो साथी साधु पुन लौट गये और सिर्फ स्थुलीभद्रजी भद्रबाहु स्वामी की सेवा में पहुँचे। सुना है कि नेपाल में १२ वीं शताब्दी तक जैन धर्म था।

ता० २७—५—५७ :

दो सप्ताह तक नेपाल की इस राजधानी में बिताकर आज हम विदा हो रहे हैं। इस अरसे में जो मुख्य कार्यक्रम रहे उनमें से एक है, नेपाल राज्य के कुछ प्रमुख व्यक्तियों से मिलन और दूसरा है २५ सौ वर्ष के बाद सारे ससार में मनाई जाने वाली बुद्धजयती में भाग लेना।

जिन प्रमुख व्यक्तियो से मिलन हुआ, उनमें से नेपाल नरेश श्री महेन्द्र वीर विक्रम, वर्तमान प्रधान मन्त्री टकप्रसाद आचार्य, जनरल कर्नल श्री केशर शमशेर जगबहादुर, आदि के नाम विशेष

रूप से उल्लेखनीय है। सभी के साथ जैन धर्म अहिंसा आदि विषयों पर बड़ी गंभीरता के साथ विचार-विमर्श हुआ। सभी ने जैन साधुओं के जीवन में उनकी आचार-क्रियाओं में और उनके व्रतों को जानने में बड़ी अभिरुचि प्रगट की।

बुद्ध जयंती का आयोजन वैसे तो सारे संसार में हो रहा है पर भारत तथा एशिया के अन्य बौद्ध देशों में बड़े जोर-शोर के साथ यह कार्यक्रम मनाया जा रहा है। हर जगह पर लाखों रुपये व्यय हो रहे हैं और विशाल पैमाने पर आयोजन किये जा रहे हैं यहाँ पर भी बहुत बड़े रूप में समारोह था इस समारोह में मैंने अहिंसा के सूक्ष्म विश्लेषण के साथ बुद्ध के जीवन पर प्रकाश डाला—

“२५ सौ वर्ष पहले हुए महात्मा बुद्ध से १६ वर्ष पूर्व भगवान महावीर हुए हैं जिन्होंने संसार को जो प्रेम करुणा और मैत्रि का मार्ग बताया था उसकी आज भी उतनी ही आवश्यकता है। क्योंकि संसार विनाश के कगारे पर खड़ा है। आणविक प्रतिस्पर्धा ने संपूर्ण मानव जाति के लिए खतरा पैदा कर दिया है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आँख गड़ाए बैठा है। अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए दूसरे को गुलाम बनाने में आज के राजनीतिज्ञ किंचित भी नहीं झिझकते। ऐसी दशा में दुनिया का भविष्य अत्यंत अंधकार पूर्ण है”।

इसके अलावा एक और मुख्य आयोजन हमने किया। जैन बौद्ध और वैदिक धर्मावलम्बी एक साथ मिलकर एक अहिंसा सम्मेलन में आये। यह सम्मेलन नेपाल में १२ ० सौ वर्ष के बाद सर्व प्रथम था। इस तरह के सम्मेलनों की आज भी कितनी आवश्यकता है, यह कहने की जरूरत नहीं। क्योंकि सभी

धर्मावलम्बियों के कधों पर आज के समस्या सकुल वातावरण में यह जिम्मेदारी है कि आतंक, भय और हिंसा से सत्रस्त मानव को अहिंसा का मार्ग दिखाए। धर्म स्थापना का यही वास्तविक उद्देश्य है। धर्म के छोटे मोटे साम्प्रदायिक मतभेदों को लेकर लड़ने से अब काम नहीं चलेगा। आज का मानव अंधेरे में कुछ टटोल रहा है, उसे मार्ग नहीं मिल रहा है। जब अहिंसा का प्रकाश फैलेगा तब अपने आप मनुष्य सशक्त होकर आगे बढ सकेगा।

इस सम्मेलन में भी मैंने अहिंसा का तात्विक विश्लेपण उपस्थित किया —

शक्ति का अक्षय स्रोत अहिंसा :

(सामाजिक जीवन छोडकर किसी गिरि कन्दरा में बैठकर कोई कहे कि मैं अहिंसा का पालन कर रहा हूँ तो यह कोई बड़ी बात नहीं। बड़ी बात है—दूकान पर सौदा लेते और देते समय, यहा तक कि किसी को दण्ड देते और युद्ध करते समय भी अहिंसक बने रहना। मुनिजी का यह विश्लेपणात्मक भाषण अहिंसा के सम्बन्ध में नई दृष्टि, नया विचार और नया चिन्तन देगा, और तार्किक बुद्धि को नया समाधान।—स०)

"मानव-विचार, मनन और मथन से, सूक्ष्म शक्तियों का पुञ्ज है। यह अपने जीवन को नितान्त उज्ज्वल बना सकता है। वैसे तो प्राणी मात्र में सिद्धत्व और बुद्धत्व जैसे गुणों की उपलब्धि की सम्भावनाए हैं, किन्तु वे अपनी शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलताओं के कारण दैवी सम्पत्ति के महत्व को हृदयङ्गम करने में बहुत

कम क्षमता रखते हैं। मानवेतर जीवों में शान्ति का अभाव रहता है तथा वे वातावरण से अभिभूत रहने के कारण निरन्तर व्यथित एवं त्रसित रहते हैं। उनका सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि वे मानवों के समान अपने हिताहित कृत्याकृत्य को परख नहीं सकते। विवेक-बुद्धि का उनमें अभाव है। स्वर्गीय देवतागण भोग-विलास मय जीवन व्यतीत करते हैं जिससे केवल तप और त्याग से प्राप्त परमानन्द से वे वंचित ही रहते हैं। इस भाँति केवल मानव ही एक ऐसा विचारशील एवं मननशील प्राणी है जिसमें अपने वास्तविक हिताहित कृत्याकृत्य को परखने की विलक्षण क्षमता पाई जाती है। मानव ही अपने जीवन की संजीवन विद्या के रहस्य को समझ सकता है।

समस्त भारतीय वाङ्मय एवं प्राचीन जैनागम साहित्य की सर्व प्रथम सर्व प्रमुख अन्तश्चेतना एवं अन्तर्प्रेरणा है—अहिंसा। हमारे समस्त पुराण एवं इतिहास ग्रन्थ अहिंसा के गुरु-गम्भीर जयघोष से गुञ्जित हैं। सर्वत्र ही इस बात पर जोर दिया गया है कि मानव-जीवन की सफलता एवं सिद्धि के लिए अहिंसा तत्त्व को अपनाना अत्यावश्यक है। यह अहिंसा तत्त्व वास्तव में अक्षय शक्तियों का अजस्र स्रोत है। वैसे तो अहिंसा तत्त्व की विशद व्याख्या महाभाष्य ग्रन्थ द्वारा ही विवेचित की जा सकती है, फिर भी उसका सूक्ष्म आभास करना ही आज के प्रवचन का मूलोद्देश्य है।

अहिंसा के दो प्रमुख पक्ष हैं, जिनका हृदयङ्गम किया जाना सबसे पहले आवश्यक होगा। अहिंसा निषेधात्मक होती है एवं विधेयात्मक भी। अहिंसा का साधारण अथवा विदित शब्दों में प्रयोग का अभिप्राय है—किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाना हिंसा न करना। यह तो केवल अहिंसा का निषेधात्मक अभिप्राय हुआ।

किन्तु अहिंसा का एक और अधिक गहन एवं रहस्यात्मक अभिप्राय भी है, जिसका आशय है—अपने जीवन की विविध शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं प्रक्रियाओं द्वारा, किसी प्रकार की अशान्ति, विक्षोभ एवं विषाद की अनुभूति होने की सम्भावना ही नष्ट हो जाए।

निषेधात्मक अहिंसा—इस तत्त्व के भी अनेक पक्ष हैं, जो मननीय एवं विचारणीय हैं। वह किसी गुण विशेष का द्योतक न होकर एक सर्वतोमुखी आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक है। सूक्ष्म दृष्टि से देखे जाने पर, उसमें सभी उत्तम गुणों का समावेश पाया जाता है। उदाहरणार्थ क्षमा से अभिप्राय है—यदि कोई व्यक्ति, अपनी इच्छा के विरुद्ध भी व्यवहार करे तो भी हमारे हृदय में उसके लिए रञ्चमात्र भी रोष न उपजे। यही नहीं, हम उसके अज्ञान का बोध कराने के अभिप्राय से, उसके साथ ऐसा मधुर एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करें कि उसे अपनी भूल का स्वयं ही अनुभव हो जाए। क्षमा की परिणति एवं चरम अभिव्यञ्जना यही है। ध्यान पूर्वक विचार करने पर ज्ञात होगा कि क्षमा के इस सक्रिय रूप के मूल में अहिंसा ही प्रमुख आधार है। जो व्यक्ति क्रोध या आवेश के परिणाम में स्वयं जला जा रहा है, उसके साथ आक्रोशपूर्ण व्यवहार तो उसकी क्रोधाग्नि में घृत-सिंचन का काम ही करेगा। ऐसा करने से तो स्वयं क्लेश की प्राप्ति एवं दूसरे को भी क्लेश का परिणाम मिलने के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। ऐसे में स्वयं अहिंसक भाव को अपनाने से ही आत्म-सन्तोष एवं पर-मार्ग प्रदर्शन सम्भव हो पायेंगे। जो अपने साथ बुराई करे, उसके साथ हम मृदु-मिष्ट व्यवहार करें—जहर देने वाले को अमृत दें और पत्थर बरसाने वाले पर फूलों की बिखेर करें—ये सभी उदारतापूर्ण व्यवहार निषेधात्मक अहिंसा के मंगलमय पक्ष हैं।

विधेयात्मक अहिंसा—अहिंसा-तत्त्व का गहनतर एवं रहस्या-त्मक तत्त्व ज्ञान है और तदनुसार अपने जीवन का नव सृजन है इससे आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि की उपलब्धि होती है। यह ए प्रकार से मानव जीवन का सुसंस्कृत सुविकसित एवं समुन्न विकास का राज-मार्ग है। इससे सभी प्राणियों में समान भाव शान्ति-पूर्ण व्यवहार एवं धैर्यशीलता के अद्भुत गुणों की सिद्धि होती है। यह विधेयात्मक अहिंसा की साधना निरन्तर अभ्यास स्वात्मानुशासन एवं तपस्या की अपेक्षा रखती है और जल्दबाजी सिद्ध नहीं हो सकती। श्रद्धा विश्वास एवं स्वयं कष्ट सहन क तत्परता इसके अनिवार्य उपकरण हैं। अहिंसा के इस सकारात्म पक्ष से नीच विचार, अधीरता एवं क्रूरता के अवगुण विनष्ट हो जाते हैं। महाकवि मिल्टन ने अपनी एक प्रसिद्ध कविता में कहा है कि— अहिंसा एवं क्षमा अपूर्व गुण हैं जिनके द्वारा मानव सर्वो त्तम सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है और मानव-गुणों का मुल्य द्वार अहिंसा अथवा निर्वैर ही है।"

प्रेम अहिंसा का उद्गम स्रोत है। इसका आरम्भ होता है ममत्व से। और इसकी परिणति होती है तादात्म्य में। जब दूसरे के दुःख-दर्द को हम अपना दुःख दर्द मानने लगते हैं तो हमारे मन में अहिंसा का प्रादुर्भाव होता है। इस भाँति यह स्पष्ट है कि अहिंसा तथा उत्तम व्यवहार के मूल में प्रेम ही मौलिक तत्त्व है। प्रेम-मूलक अहिंसा के द्वारा ही एक-दूसरे को परखने का अवसर मिलता है। ऐसी अहिंसा के राज्य में भय का अस्तित्व नहीं रहता। आज मानव को जितना भय एवं त्रास अन्य मानवों के द्वारा मिलता है उतना तो उसे सिंह या सर्प से भी मिलने की आशा नहीं रहती। इसका कारण यही है कि मानव-हृदय में प्रेम का स्थान स्वार्थ ने ग्रहण कर लिया है। अहिंसा और प्रेम नैसर्गिक मानव गुण

हैं। उनके क्रियात्मक व्यवहार के लिये हमें किन्हीं कार्यो एव व्यापारों की खोज करनी नहीं पडती। दूसरे शब्दों में इसी को यों भी कहा जा सकता है कि अहिंसा तो अपने आप मे स्वयभू है, किन्तु हिंसा के प्रयोग के लिए हमें दूसरों की अपेक्षा रहती है। एक प्रकार से यदि व्यापक दृष्टि से देखें तो समस्त कार्य, व्यापार एवं प्रत्येक क्रिया का आधार या तो अहिंसा है अथवा हिंसा। हिंसायुक्त आचरण एव चिन्तन से मानव पाशविक बन जाता है। इसके अतिरिक्त अहिंसा के आचरण से मानव की प्रकृति में दिव्यत्त्व की प्रतिष्ठा होती है।

भगवान महावीर ने कहा है

'एव खु नाणिणो सार जंन हिंसइ किंचण।'—सू० १, १, ३, ४।

ज्ञान का सार तो यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, आघात न पहुँचाना अथवा पीडा न देना; दूसरे शब्दों में समस्त प्राणियों को आनन्द पहुँचाने में ही ज्ञान की सार्थकता है। उपर्युक्त सूत्र में अहिंसा के निषेधात्मक एव विधेयात्मक—दोनों ही पक्षों की विशद एव सम्पूर्ण परिभाषा आगई है। उपर्युक्त सूत्र की पूर्ति हमें दशवैकालिक सूत्र में मिलती है, जहा कहा गया है कि—"अहिंसा निउणा दिट्ठा" अर्थात—द्रष्टा वही है जो कि अहिंसा के प्रयोग में निपुण है। इन थोड़े से शब्दों में गर्भित अहिंसा की विशद व्याख्या बारम्बार माननीय है।

हिंसा क्यों नहीं करनी चाहिये, इसको भी स्पष्ट किया गया है। उत्तराध्ययन-सूत्र में 'सव्वे पाणा पियाउया।' अ० २८, उ० ३। सभी प्राणियों को जीवित रहना ही प्रिय है। कोई भी, किसी भी अवस्था में मृत्यु एवं दु ख को नहीं चाहता। इसलिए किसी को भी दु:ख या

मृत्यु अभीष्ट नहीं है इसलिये सदा सर्वदा ही ध्यान रखना उचित है अहिंसक व्यवहार इसीलिये सभी प्राणियों के लिए प्रेम भी है और सेवाभाव भी। इसी तथ्य को यों कहा गया है—

"पाणे य नाइवाएज्जा......मिवाइ उदगं व थलाओ ॥ द ८-५

जो व्यक्ति प्राणियों का वध नहीं करता वह उसी भांति हिंसा कर्मों से मुक्त हो जाता है जैसे कि ढाल् जमीन पर से पानी बह जाता है। उसको जन्म-मृत्यु के बीच परिव्याप्त विभिन्न हिंसात्मक पाप क्रियाओं की कालिमा नहीं लग पाती और वह आद्योपान्त आत्म शुद्ध बना रहता है। इसी हेतु भगवान महावीर ने शान्ति की उपलब्धि का मार्ग बताते हुए यों कहा है—'समया' प्राणीमात्र पर दया करना ही शान्ति प्राप्त करना है।

इस प्रकार अहिंसा तत्त्व की यदि व्यापक परिभाषा की जाये तो आध्यात्मिक दृष्टि से अहिंसा का व्यावहारिक स्वरूप है—राग द्वेष क्रोध मान माया लोभ भीरुता शोक आदि विकृत भावों का परित्याग। केवल प्राणियों के प्राणों का दमन ही हिंसा नहीं है वरन् वास्तविक बात तो यह है कि जब तक मानव हृदय में क्रोध भाव आदि विद्यमान है तब तक किसी के प्रति बुरा बर्ताव न करते हुए भी वह हिंसा से विमुक्त नहीं है। अहिंसा एक देशीय एवं सर्व देशीय—दो प्रकार की मानी जाती है। सांसारिक जीवन बिताने वाला व्यक्ति सर्व देशीय अहिंसा का पालन तो नहीं कर सकता किन्तु फिर भी वह नित्य प्रति के सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए एक देशीय अहिंसा का पालन करता ही रह सकता है। अहिंसक गृहस्थ बिना प्रयोजन के या प्रयोजन से प्रेरित होकर दोनों ही अवस्थाओं में तुच्छ से तुच्छ प्राणी को भी कष्ट नहीं पहुँचायेगा। साथ ही देश रक्षा एवं समाज रक्षा के अभिप्राय से यदि उसे किसी

कर्त्तव्य प्रेरणा से प्रेरित होकर अस्त्र शस्त्रों तक का प्रयोग भी करना पड़े तो वह अहिंसा व्रत का खण्डन नहीं माना जायेगा, क्योंकि ऐसे शस्त्र प्रयोग में मौलिक प्रेरक तत्त्व तो वही 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' ही है।

धर्मानुयायी गृहस्थ केवल स्थूल हिंसा का परित्याग कर पाता है। स्थूल हिंसा से अभिप्राय है—निरपराधी प्राणियों का संकल्प पूर्वक, दुर्भावना या स्वार्थ से प्रेरित होकर हिंसा न करना। किसी भी प्राणी का भोजन के निमित्त प्राण हरण न करना। प्रत्येक प्राणी को उपयुक्त समय पर भोजन की आवश्यकता होती है। उसे टालने का कभी भी आलस्य व प्रयत्न न करे। जैन शास्त्रों में—"भत्त पाण विच्छेए" नामक दोष से गृहस्थ दूर रहें ऐसा उल्लेख है, अर्थात्—अपने आश्रित व्यक्ति से उसकी सामर्थ्य से अधिक काम लेना तथा उसे समय पर भोजनादि न देना भी हिंसात्मक दोष है। किसी भी प्राणी को अनुचित बन्धन में डालने से 'बन्धन' नामक हिंसात्मक दोष लगता है। किसी को मारना पीटना या गाली देना आदि 'पन विच्छेए' दोष कहाता है। मारने की अपेक्षा अपशब्द का व्यवहार भी महादोष माना जाता है। उक्त पाच प्रकार के हिंसात्मक दोषों से परे रहना ही व्यावहारिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग करना एव हिंसा से दूर रहना है।

आध्यात्मिक दृष्टि से अहिंसा पथ के पथिक को इस भांति सोच विचार करना चाहिये कि "जिसे मैं मारना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ, जिसके ऊपर मैं आधिपत्य स्थापित करना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ। जिसको मैं पीड़ा पहुँचाना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ। साम्य-योग की दृष्टि के अनुसार जिन दूसरे व्यक्तियों के साथ मैं भला या बुरा बर्ताव करना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ। दूसरों को

बंधन में डालना वस्तुतः स्वयं को ही बंधन में डालना है।" इस प्रकार का निरन्तर चिन्तन साधक को अहिंसक जीवन की ऊंची आदर्श भूमि पर ला खड़ा करता है।

गृहस्थ जीवन की भूमिका पर जीवन निर्वाह करने वाले व्यक्ति को चार प्रकार की हिंसा से बचना आवश्यक है—संकल्पी, विरोधी, आरम्भी और उद्यमी। हिंसा के इस भिन्न प्रतिदिन के जीवन में आरोप की परिभाषा करनी आवश्यक है। सबसे पहले हम संकल्पी हिंसा को ही लें। किसी विशेष संकल्प या इरादे के साथ किये गए, हिंसात्मक व्यापार को संकल्पी हिंसा कहा गया है। शिकार खेलना, मांस भक्षण करना आदि संकल्प कार्यों में संकल्पी हिंसा होती है।

विरोधी हिंसा का अभिप्राय है—किसी अन्य द्वारा आक्रमण किये जाने पर उसके प्रतिकार करने में जो हिंसात्मक कार्य करना पड़ जाता है उससे। यह आक्रमण अपने व्यक्तित्व पर समाज पर या देश पर किसी पर भी किसी के द्वारा कभी किया जा सकता है। ऐसे संकट काल में अपनी मान मर्यादा अथवा आश्रितों की रक्षा के लिये युद्ध आदि में प्रवृत्त होने को 'विरोधी' हिंसा कहा जाएगा। गृहस्थ जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग उपस्थित हो सकते हैं। ऐसे अवसर पर पीठ दिखा कर भागना अथवा जी चुराना तो गृहस्थ अथवा सामाजिक कर्तव्य से प्रतिकूल होता है। हां अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा यदि विरोध को अपनी व्यवहार कुशलता से टाला जाना सम्भव हो तो उसके टालने का प्रयत्न अवश्य ही किया जा सकता है।

अमरीका के राष्ट्र निर्माता अब्राहम लिंकन के कहे गये कुछ स्मरणीय शब्द यहाँ उल्लेखनीय हैं—'युद्ध एक नृशंस कार्य है। मुझे इससे घृणा है। फिर भी न्याय या देश-रक्षा युद्ध करना

वीरता है। अपने देश की अखडता के लिये किये गये धर्म-युद्ध को मैं न्याय समझता हूँ। मुझे उससे दु ख नहीं होता।" एक जैनाचार्य का इस सम्बन्ध में कथन है—

"केवल दण्ड ही निश्चय रूप से इस लोक की रक्षा करने में समर्थ होता है। किन्तु राजा द्वारा समान बुद्धि एव निष्पक्ष भाव से प्रेरित होकर यथा दोष चाहे वह शत्रु हो या अपना पुत्र हो, उसके साथ न्याययुक्त आचरण किया जाना उचित है। ऐसा दण्ड भी इस लोक में या परलोक में रक्षा करने वाला सिद्ध होता है।"

'आरम्भी हिंसा', मानव की नित्य प्रति की सहज जीवन-चर्या में भी जो हिंसात्मक कार्य व्यवहार, बिना सकल्प के बनते ही रहते हैं। उनसे लगे हुए दोष का नाम आरम्भी हिंसा है। मानव को धर्म-कार्य के लिये भी शरीर की रक्षा अभिप्रेत है। तदर्थ भूख-प्यास के निवारण और आतप, शीत वर्षा आदि से स्वरक्षण, इन में भी स्वाभाविक रूप से हिंसा होती रहती है। उसे हिंसा का 'आरम्भी' दोष कहा जाता है। 'हितोपदेश' में उक्त 'आरम्भी' हिंसा के सम्बन्ध में एक मनोहर कथा को हरिणी के मुख से कहलाया गया है—

"जब वन में पैदा होने वाले शाक-सब्जी, घास-पात आदि के खा लेने से ही, किसी भी प्रकार उदर-पूर्ति की जा सकती है, तो भला फिर इस आग लगे पेट को भरने के लिये महा पाप क्यों करें?"

जैनाचार्य श्री हरि विजय सूरि आदि के सम्पर्क में आने से जब सम्राट् अकबर के मन में अहिंसा के प्रभाव से विवेक-बुद्धि जागृत हुई, उसका अबुलफजल ने यों वर्णन किया है कि—'सम्राट

अकबर ने कहा कि यह उचित नहीं जान पड़ता कि इन्सान अपने पेट को जानवरों की कब्र बनावे। मांस भक्षण मुझे प्रारम्भ से ही अच्छा नहीं लगता था। प्राणी रक्षा के संकेत पाते ही मैंने मांस भक्षण त्याग दिया!"

'उद्योगी हिंसा' आजीविका-सम्बन्धी वृत्ति के निर्वाह करते समय स्वतः होती रहने वाली हिंसा को कहते हैं क्योंकि कृषि आदि कर्मों में जाने-अनजाने वध हो जाती है। फिर भी कृषि एवं वाणिज्य के मूल में जन-मंगल एवं लोक-हित की भावना रहने पर 'उद्योगी हिंसा' के दोष का यथासम्भव परिमार्जन भी होना सम्भव होता है। इस भांति हम देखते हैं कि जीवन क्या है? एक सतत संग्राम है। इसमें अनन्त परिस्थितियों में होकर निकलना पड़ता है। किन्तु फिर भी यदि मानव अहिंसा के जीवन-सूत्र का निर्वाह करता हुआ इस धर्म-युद्ध में प्रवृत्त होता है तो उसकी विजय स्वतः ही सुनिश्चित रहती है। सभी महापुरुषों की जीवन घटनाएँ इस तथ्य की साक्षी हैं कि उन्होंने अपने अपने उत्थान-निर्माण की दुर्गम यात्रा में सदा ही 'अहिंसा' को सर्व प्रथम माना है।

मानव एक चेतनाशील प्राणी है। किसी कारण वश उसकी यह चेतना शक्ति मन्द पड़ जाती है, तब वह आततायी एवं अत्याचारी हो जाता है। फिर भी उसकी नैसर्गिक सुप्त चेतना कभी न कभी जाग ही उठती है। तब उसे अपने किये हुए अज्ञानमय कर्मों पर पश्चात्ताप भी होता है। सिकन्दर नेपोलियन हिटलर आदि सभी ने अपनी जीवन-संध्या में यह अनुभव अवश्य किया कि उनके जीवन-काल में उनसे अनेक अन्यायपूर्ण एवं अनुचित कार्य बन पड़े जिनका निराकरण करने के लिए उनके पास अन्त में कोई भी उपाय नहीं रहा। अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति की धुन में इन्होंने असंख्य नर-नारियों के हँसते-खेलते जीवनों को

ध्वस कर डाला। साराश तो यही है कि हिंसा में निरन्तर प्रवृत्त रहने पर भी अन्त में अहिंसा की ही स्नेहमयी गोद में मानव को शाति एवं विश्रान्ति मिल पायेगी।

आज के अविश्वासपूर्ण वातावरण में, इस बात पर विश्वास करना कठिन होता है कि हिंसक विचारों द्वारा आयु-बल क्षीण होते रहते हैं। निरन्तर हिसात्मक विचारों में लीन रहना—निश्चित मृत्यु की ओर अग्रसर होने का ही द्योतक है। हिंसापूर्ण विचारों से मानव की बुद्धि भ्रान्त हो जाती है। उसकी शाति नष्ट हो जाती है। सद्वृत्तिया चली जाती हैं। इस भाति वह अनजाने ही सर्व नाश एव मृत्यु के गह्वर में स्वय ही दौड़ा चला जाता है।

वैज्ञानिक अभ्युदय के इस युग में, अहिसा सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है। आज का मानव भौतिक पदार्थों के मायामोह में मतिमूढ़ हो रहा है। फिर भी उसका प्रत्यक्ष परिणाम सभी के समक्ष है। एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से आशकित एवं भयभीत है। एक देश दूसरे देश से शकित एवं त्रस्त है। अणुबम आदि अनत परम सहारकारी अस्त्र शस्त्रों की होड ने आज मानव-जाति के भविष्य पर प्रलयकर घटनाएँ छा डाली हैं। चन्द्रलोक में भी अपनी सत्ता जमाने की महत्त्वाकांक्षा रखने वाला मानव कहीं अपनी इस घातक, सहारक उपकरण निर्माण की विघातक होड़ द्वारा कभी अपना अस्तित्व ही न मिटा ले, इसकी सदा ही आशका बनी रहती है। इस विश्व-व्यापी अविश्वास, आतक एवं हिंसा का निराकरण, केवल अहिंसात्मक सजीवन विद्या की साधना द्वारा ही सम्भव है।

अहिंसा के प्रयोग के लिए, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू पर, व्यापक क्षेत्र खुला हुआ है। समाज का प्रत्येक नागरिक

अपने अपने क्षेत्र एवं परिस्थिति के अनुसार अहिंसात्मक जीवन अपनाने की साधना में प्रवृत्त हो सकता है। एक डाक्टर या चिकित्सक यदि अपनी चिकित्सा वृत्ति एवं भेषज विद्या का ध्येय मात्र धनोपार्जन न रखकर लोक सेवा रख पाए तो वह अधिक से अधिक अर्थों में एक अहिंसक जीवन बिताने में समर्थ हो सकता है। यदि कृषक संसार के भरण पोषण की भावना से अन्न का उत्पादन करे तो वह भी अहिंसा-व्रत का व्रती कहा जा सकता है। व्यापारी लोक-हित को यदि प्रथम स्थान दे एवं धनार्जन को दूसरा तो वह भी 'उद्योगी' हिंसा-दोष से बचा रह सकता है। श्रीमद् भगवद् गीता के अन्तर्गत श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया है कि—'जो व्यक्ति अपनी परिस्थिति के अनुसार अपने उत्तरदायित्व एवं स्व-धर्म का निर्वाह करता है वह चिरस्थायी एवं शाश्वत श्रेय का भागी बनता है।

इस संजीवन-विद्या की महाशक्ति 'अहिंसा' की आराधना साधना द्वारा मानव ऊँची से ऊँची आध्यात्मिक सिद्धि का अधिकारी बन सकता है। भगवान् महावीर का आविर्भाव महात्मा बुद्ध से ८२ वर्ष पूर्व हुआ था। उन्होंने अहिंसा की अमोघ शक्ति का ज्ञान जन साधारण को हृदयंगम् कराया एवं २५ सम्राटों ने उनके धार्मिक उद्बोधन को सुनकर राजपाट का परित्याग करके अपरिग्रह व्रत अपनाया था। उन्होंने मगध के महाराजा बिम्बसार द्वारा उसके संपूर्ण राज्य में हिंसा निषेध करवा दिया था। उन्हीं की प्रेरणा पाकर लाखों करोड़पतियों एवं लाखों सुकुमार ललनाओं ने वैभव पूर्ण जीवन को ठुकराकर वैराग्य वृत्ति स्वीकार की थी। आज भी भगवान् महावीर द्वारा प्रवर्तित जैन-धर्म के अनुयायी विश्व में अहिंसात्मक भावनाओं एवं सिद्धान्तों का प्रचलन व अंगीकरण पाया जाता है।

(२५०१ वीं बुद्ध जयन्ती, रुपन्देही नेपाल)

नेपाल यात्रा का, इस तरह के सर्वजनोपकारी कार्यक्रमों का आयोजन होने से, बहुत महत्त्व बढ़ गया।

नगर के अनेक प्रमुख लोगों के अलावा वर्तमान खाद्य मत्री श्री सूर्य बहादुर, माल पोत उपमत्री श्री देवमानजी प्रधान न्यायाधीश श्री अनिरुद्ध प्रसादजी आदि के साथ हुई मुलाकात तथा धर्म चर्चा भी खूब याद रहेगी।

अब यहां से जिस रास्ते से होकर आये थे, उसी रास्ते वापस भारत के लिए लौट जाना है। नेपाल-यात्रा बड़ी सुखद, अनुभव दायी, सर्व जनोपकारी एव संस्मरणीय रहेगी। ऐसे प्रदेशों में आने से ही वास्तविक दुनिया का ज्ञान होता है और नई नई बातें सीखने-समझने का अवसर मिलता है

रक्सोल

ता० ५–६–५७ :

नेपाल की दुर्गम दुरूह घाटिया लांघ कर अब हम पुन हिन्दुस्तान में प्रवेश कर रहे हैं। रक्सोल दोनों देशों के मध्य में पड़ने के कारण एक अच्छा सेंटर बन गया है। यहा से नेपाल और मुजफ्फरपुर के बीच के लिय एक सीधे राजमार्ग का निर्माण हो रहा है। यहा से सीतामढी, दरभगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर आदि के लिए रेलें जाती हैं। हम भी इसी रास्ते से आगे बढने वाले हैं। उत्तर-बिहार की पूरी परिक्रमा हो जाएगी उत्तर बिहार का भारत में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहा कई विशिष्ट एतिहासिक स्थान भी हैं और इस क्षेत्र के लोगों ने देश के विकास में अपना उल्लेखनीय योग दिया है। क्योंकि हमें चातुर्मास के लिए मुजफ्फरपुर पहुँचना है, इसलिए समय तो थोड़ा ही है, पर इस थोड़े समय का ठीक ठीक उपयोग करके उत्तर-बिहार का पूरा परिचय तो प्राप्त कर ही लेना है।

दरभंगा

ता २४–६–५७ :

हम दरभंगा में २० जून को पहुंचे। वहां के लोगों की भक्ति और आग्रह ने हमें ४ दिन रोक लिया। दरभंगा संस्कृत-प्रचार की दृष्टि से काशी के बाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। मिथिला-क्षेत्र का केन्द्र होने से दरभंगा का अनूठा ही महत्त्व हो गया है। हमने यहां चार व्याख्यान दिये। व्याख्यानों में शहर की आम जनता बड़ी संख्या में आती थी।

जिन विषयों पर व्याख्यान हुए, वे इस प्रकार हैं—

(१) आज के युग की समस्याएं कैसे हल हों?

(२) व्यावहारिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग –

(३) मानव के कर्तव्य

(४) मानवता के सिद्धांत

लोगों का आग्रह रहा कि अगला चातुर्मास यहां पर ही संपन्न किया जाय। इस तरह यहां आना बहुत सार्थक रहा। मारवाड़ी भाइयों के भी यहां पर दो सौ घर हैं। एक राजस्थान विद्यालय भी है। हमने राजस्थान विद्यालय का निरीक्षण किया। अच्छे ढंग से चल रहा है। विद्यार्थियों से दो शब्द कहते हुए मैंने बताया कि आप आज विद्यार्थी हैं लेकिन जब पढ़-लिखकर बड़े बनेंगे तब आपके कंधों पर देश के निर्माण तथा संचालन की जिम्मेदारी आयेगी। आप ही *लेखक, विचारक, डाक्टर, वकील प्रोफेसर उद्योगपति* व्यापारी आदि बनेंगे। अतः आपको अभी से अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए। यदि आप अभी कुसंगत व्यसन आलस्य

प्रमाद, उद्दण्डता, आदि दोषों के शिकार हो जायेंगे, तो आगे कैसे राष्ट्र की बागडोर सभाल सकेंगे ? यह विचार करने की बात है। इसलिए अभी से अपने जीवन में सयम, सदाचार आदि सद्गुणों को स्थान दीजिये। कोई भी आदमी आत्म-गुणों के आधार पर ही बड़ा बन सकता है। आज के विद्यार्थी अविनीत और उद्दड होते हैं, यह ठीक नहीं है। विद्या के साथ विनय तथा नम्रता आनी चाहिए।"

समस्तीपुर

ता० ३०–६–५७ :

यहा पर आने से स्थानीय जन-समाज में एक विशेष प्रकार का औत्सुक्य फैल गया। हमें देखने के लिए, चर्चा तथा वार्तालाप करने के लिए विविध प्रकार के लोग आने लगे। हम जब २८ तारीख को यहा आये, तो विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान देने के लिए आग्रह भी होने लगे। आखिर ३ व्याख्यान स्वीकार किये। पहला व्याख्यान मारवाड़ी, ठाकुरबाड़ी में 'विश्व की समस्याएं" विषय पर हुआ। इस व्याख्यान मे आम लोगों में विशेष रुचि देखी गई। दूसरा व्याख्यान जैन मारकेट में हुआ जिसका विषय था "दैनिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग।" तीसरा व्याख्यान नई धर्मशाला में "विकास के मूलभूत सिद्धात"के सबध में हुआ। समस्तीपुर में भी ३ दिन का दिलचस्प वातावरण रहा।

पूसारोड़ स्टेशन

ता० २–७–५७ :

पहले यहा पर भारत प्रसिद्ध कृषि महा विद्यालय था। जिसमें विभिन्न प्रकार की कृषि सबधी प्राविधिक शिक्षा दी जाती थी। अब वह महा विद्यालय नई दिल्ली में इसी नाम से चल रहा है।

यहाँ पर सभी गांधीवादी कार्यकर्ताओं के बहुत बड़े २ केन्द्र चलते हैं। एक कस्तूरबा महिला विद्यालय और दूसरा खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रम। दोनों में कुल मिलाकर सैकड़ों भाई-बहन काम करते हैं। कस्तूरबा विद्यालय महिलाओं के शिक्षण का और उन्हें ग्राम सेविका बनाकर गाँवों में भेजने का आदर्श कार्य कर रहा है। इस विद्यालय की बहनें प्रान्त भर में फैली हुई हैं और गाँवों में अशिक्षित महिलाओं को शिक्षा तथा ग्रामोद्योग सिखाना सिलाई सिखाना सफाई सिखाना उनके गंदे बच्चों को नहलाकर उन्हें तैयार करना उनमें भावना, गाना भी सिखाना, बीमारों की सेवा करना आदि करुणा मूलक काम करती हैं। इनका संचालन बिहार शाखा कस्तूरबा स्मारक निधि की ओर से होता है। यहाँ की संचालिका कु० श्री सुशीला अग्रवाल बहुत ऊँचे विचारों की और सेवा-त्यागमय जीवन बिताने वाली ब्रह्मचारिणी तपस्वी हैं। वे पहले किसी कालेज में प्रोफेसर थी। अब सब कुछ छोड़कर सेवा का काम करती हैं। एक यहाँ माताजी हैं जिन्हें लोग 'गाँवों की माताजी' के नाम से पुकारते हैं। वे भी बहुत उच्च कोटि की सेवा-भावी महिला हैं। और भी बहुत सी बहनें हैं। यह संस्था राष्ट्र के लिए आदर्श काम कर रही है।

यहाँ की दूसरी मुख्य प्रवृत्ति खादी ग्रामोद्योग की है। खादी का आरंभ से लेकर अंत तक समग्र दर्शन यहाँ होता है। कपास पैदा करना पुनना कातना कपड़ा बनाना इसी तरह चरखे तैयार करना आदि सब काम यहाँ होते हैं और सिखाए भी जाते हैं। यह संस्था एक गाँव की तरह बहुत बड़े पैमाने पर बसी हुई है। इस संस्था की ओर से आसपास के देहाती क्षेत्र में जो काम चल रहा है, वह भी दर्शनीय एवं प्रशंसनीय है। अगर चरखे द्वारा स्वावलम्बन करने और गरीबी मिटाने का एक सफल प्रयोग यहाँ पर

हो रहा है। दिनभर खेती करने के बाद रात को स्त्री-पुरुष-बच्चे सब अवर चर्खा चलाते है। उनकी यह मान्यता है कि यह मजदूरी का तो सबसे बड़ा साधन है ही, देश में जो बेकारी का भूत है, उसे भगाने के लिए यह अचूक प्रयोग है। गांधीजी ने ग्राम स्वावलम्बन का जो चित्र अपने मस्तिष्क में बनाया था, वह यहा पर साकार-जैसा होता दीख रहा है।

यदि हम इस यात्रा में पूसारोड न आते तो, एक कमी ही रह जाती। ये दोनों सस्थाए बहुत दर्शनीय है। राष्ट्र सेवा का यदि सरकार के अलावा कोई ठोस आर्थिक कार्यक्रम चल रहा है तो वह सर्वोदय वालों की ओर से चल रहा है ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

मुजफ्फरपुर
ता० ६–७–५७ :

पूसा से हम लोग बखरी, पीलखी तथा रोहुआ होकर आये हैं। इन तीनों गावों में रात्रि प्रवचन हुआ। लोगों ने बहुत उत्साह के साथ स्वागत किया। धर्म चर्चा की और व्याख्यान सुना। इस क्षेत्र में वैष्णव ब्राह्मणों की तादाद काफी है। ये सब शुद्ध शाकाहारी होते हैं।

चातुर्मास व्यतीत करने के लिए आज हम पुन मुजफ्फरपुर आगये हैं। चार महिने तक यहा रह कर हमें अपने आध्यात्मिक जीवन का विकास करते हुए जन मानस को आध्यात्मिक चिन्तन की ओर प्रवृत्त करने की कोशिश करनी है। क्योंकि आखिर साधु का कर्तव्य यही तो है। उसे अपने और समाज के आध्यात्मिक जीवन की ओर निरन्तर ध्यान रखना है। जो साधु अपने इस

पावन कर्तव्य से विमुख हो जाता है वह अपने ध्येय तक पहुँचने में सफल नहीं हो सकता।

यह नया क्षेत्र है इसे तैयार करना हमारा काम था अत हमने सम्प्रदाय के भेदभावों को जनता के सामने न रखते हुए हमने मानवता के सिद्धान्त ही जनता के सम्मुख रखे।

ता २-६-५७ :

इस चातुर्मास का सबसे मुख्य कार्यक्रम आज सानंद सम्पन्न हुआ है। यह कार्यक्रम सांस्कृतिक सप्ताह समारोह का था। ता २१-८-५० को सप्ताह आरम्भ हुआ और आज समाप्त हुआ। इन ७ दिनों में विविध विषयों के सम्बन्ध में विद्वान वक्ताओं ने जो विचार प्रस्तुत किये वे न केवल विद्वतापूर्ण थे बल्कि चिन्तनीय एवं मननीय भी थे।

कार्यक्रम इस प्रकार रहा—

ता० २४-८-५७ रविवार :—

सभापति—डा युगलदेवसिंह शर्मा M A. Ph., D.,
अध्यापक, दर्शन विभाग
लङ्गटसिंह कालेज मुजफ्फरपुर।
वक्ता—डा० हीरालाल जैन M. A., LL. B D Litt.,
निर्देशक प्राकृत जैन विद्यापीठ मुजफ्फरपुर।
विषय—भारतीय संस्कृति और उसको जैन धर्म की देन।

ता २६-८-५७ :

सभापति—डा एस के० दास M A ,P R.S Ph.D.,
अध्यक्ष दर्शन विभाग लङ्ग०सिंह कालेज।

वक्ता—श्री चन्द्रानन ठाकुर, लङ्गटसिंह कालेज।
विषय—वेदान्त दर्शन।

ता० २७–८–५७ :

सभापति—पं० रामनारायण शर्मा M A., वेदान्ततीर्थ, साहित्याचार्य, न्यायशास्त्री, साहित्यरत्नादि,
अध्यक्ष—संस्कृत विभाग, लगटसिंह कालेज।
वक्ता—प० सुरेश द्विवेदी, वेद व्याकरण, वेदान्ताचार्य, प्रिंसिपल, धर्मसमाज संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुर।
विषय—वैदिक सस्कृति।

ता० २८–८–५७ बुधवार:—

सभापति—डा० हीरालाल जैन, M A., L L B , D Litt.,
वक्ता—डा० वाई० मसीह, प्राध्यापक, दर्शन विभाग, लगटसिंह कालेज।
विषय—वर्तमान युग में धर्म का स्थान।

ता० २९–८–५७ बृहस्पतिवार:—

सभापति—प० रामेश्वर शर्मा
वक्ता—मुनि श्री लाभचन्द्रजी महाराज।
विषय—अहिंसा एवं विश्वमैत्री।

ता० ३०–८–५७ शुक्रवार:—

सभापति—प्रिंसिपल गया प्रसाद, रामदयालुसिंह कालेज, मुजफ्फरपुर।

वक्ता—श्री रामरक्षपालसिंह M A.
दर्शनविभाग लंगटसिंह कालेज।
विषय—वर्तमान युग में धर्म की आवश्यकता।

ता० ३१–८–५७ शनिवार—

सभापति—डा० भाई मसीह, M A Ph D (Edon) D. Litt
दर्शनविभाग लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—प्रिंसिपल एस घोष
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
विषय—ईसाई धर्म।

ता १–९–५७ रविवार—

सभापति—प्रिंसिपल एस घोष
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
वक्ता—श्रीमती रत्नकुमारी शर्मा अध्यक्षा हिन्दी विभाग
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
विषय—बौद्ध धर्म।

ता २–९–५७ सोमवार—

सभापति—श्री सीतारामसिंह, M. A
प्राध्यापक इतिहास विभाग लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—श्री राजकिशोर प्रसाद सिंह M A.,
अध्यक्ष इतिहास विभाग रामदयालुसिंह कालेज।
विषय—वैष्णव सम्प्रदाय।

इस कार्यक्रम में मुजफ्फरपुर की जनता ने आशातीत संख्या में भाग लिया। संस्कृति ही जीवन के विकास की सीढ़ी है। मानव-समाज प्रकृति की ओर बढे, यह परम आवश्यक है। आज तो चारों ओर विकृतियां दिखाई दे रही है। खान पान, रहन-सहन, वेष-भूषा बोल-चाल इत्यादि सब कामों में ऐयाशी, दिखाऊपन, आडम्बर, स्वार्थ और अवास्तविकता का समावेश हो रहा है। यह दिशा संस्कृति की नहीं, बल्कि विकृति की है। अत. जगह-जगह सांस्कृतिक सप्ताहों के द्वारा जनता को शिक्षित करने की जरूरत है और उसे सांस्कृतिक-जीवन अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए। मुजफ्फरपुर में सांस्कृतिक सप्ताह के इस आयोजन ने एक प्रकार की वैचारिक जागृति उत्पन्न की और लोगों को यह अनुभूति हुई कि उन्हें अपने जीवन में संयम, स्वाध्याय, आध्यात्मिकता आदि को प्रश्रय देना चाहिए और प्रत्येक प्रवृत्ति के पीछे एक निश्चित उद्देश्य होना चाहिए। इस सांस्कृतिक सप्ताह से यहां की जनता बहुत प्रभावित हुई एवं जैन-धर्म की विशालता एवं सर्व धर्म समन्वय करने की स्याद्वाद नीति की भूरि भूरि प्रशंसा की।

ता० ३–११–५७ :

मुजफ्फरपुर के इस चातुर्मास मे विभिन्न मुहल्लों और बाजारों में आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन होते रहे एवं जनता को सद्-प्रेरणा मिलती रही। इसके साथ ही महिला-जागृति की ओर भी विशेष ध्यान दिया। क्योंकि बिना दोनों चक्कों के समाज रूपी रथ आगे नहीं बढ सकता। पर आज भारतीय समाज में और विशेष रूप से उच्च एवं मध्यमवर्ग में महिलाओं की दशा अत्यंत शोचनीय है। उनमें शिक्षा का तथा अच्छे संस्कारों का अभाव है। उन्हें किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं है, अत वे हर क्षेत्र में बहुत पिछड़ी हुई हैं। इसलिए हमने इस पहलू की ओर विशेषरूप से ध्यान दिया।

पहला महिला सम्मेलन ता० १३-१०-५७ को गंगाप्रसाद पोद्दार स्मृति भवन में किया गया। दूसरा सम्मेलन ता० १८-१०-५७ का हुआ। तीसरा सम्मेलन ३१-१०-५७ को किया गया। चौथा सम्मेलन आज महिला मण्डल में हुआ। इन सम्मेलनों का स्वरूप काफी विराट था और कुल मिलाकर हजारों स्त्रियों ने भाग लिया।

इन सभी अवसरों में हमने नारी-जागृति के लिए विशेषरूप से प्रेरणा देते हुए कहा कि—

नारी ही समाज की रीढ़ है। माँ पत्नी और बहन के रूप में उस पर बहुत बड़े-बड़े सामाजिक उत्तरदायित्व हैं। किन्तु आज हर क्षेत्र में चाहे, शिक्षा का क्षेत्र हो चाहे सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र हो चाहे दूसरा कोई क्षेत्र हो पुरुष ने नारी को किनारे कर रखा है। यह स्थिति स्वस्थ नहीं है। नारी समाज को अपने उत्तरदायित्वों का भान करना चाहिए और उसे हर क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए।

आज नारी के पीछे रहने का बड़ा कारण उसकी रूढ़िवादिता एवं अशिक्षा है। यदि वह इन दो रोगों से मुक्त होकर जीवन-पथ में आगे बढ़े तो निश्चय ही अनेक क्षेत्रों में उसे पुरुषों से अधिक सफलता प्राप्त होगी।"

ता० ८-११-५७ :

ता० १-७-५७ को यहाँ चातुर्मास व्यतीत करने के लिए हम आये थे और आज यहाँ से आगे रवाना हो रहे हैं। संयोग के साथ ही वियोग जुड़ा है और आने के साथ ही जाना जुड़ा है। यही प्रकृति का नियम है और इसी नियम के सहारे पर संपूर्ण सृष्टि चल रही है।

डा० हीरालालजी तथा डा० नथमलजी टांटिया जैसे धुरंधर जैन विद्वानों का सहयोग सदा याद रहेगा। वे आज विदा के अवसर पर भी उपस्थित थे। इसी तरह इस अजैनों की वस्ती में अजैन भाइयों ने हमें जो सहयोग दिया, प्रचार कार्य में हमारा साथ दिया और आध्यात्मिक मार्ग को समझने का प्रयत्न किया, वह सब उल्लेखनीय है। विहार के समय पर गद्-गद् हृदय से विदाय देने के लिये हजारों भक्त मात्रण जलधर की तरह अपने नेत्रों में आसू धाराए वहाते हुए ३ मील तक चले। उस समय का दृश्य बड़ा करुणाप्रद था और चातुर्मास की महान् सफलता का यही एक बड़ा नमूना भी है।

आरा

ता०–१७–११–५७ :

आरा में दिगम्बर समाज के काफी घर है। कई विद्वान भी यहां पर है। दिगम्बर समाज की ओर से महिला-शिक्षण और महिला जागृति का यहाँ पर जो काम हो रहा है, वह बहुत ही उल्लेखनीय है। इस प्रकार के केन्द्र देश के कोने कोने में होने से ही स्त्री-शक्ति का जागरण संभाव्य है।

आरा का सरस्वती पुस्तकालय भी अपने आप में एक अनुपम संग्रह है। पुस्तकें मानवजाति की सबसे बड़ी निधि होती है। मनुष्य का ज्ञान-कोष पुस्तक में ही सचित रहता है। आदमी चला जाता है, पर पुस्तक में प्रतिष्ठापित उसका अनुभव और ज्ञान सदा अमर रहता है। अगर मानव समाज के पास पुस्तक न होती तो आज जो हजारों वर्षों पुराना वेद, पुराण, सूत्र, आगम, त्रिपिटक, कुरान,

बाइबिल रामायण महाभारत आदि इसमें उपलब्ध है या यहां से मिलता। इसीलिए ज्ञान भंडार, आगम भंडार पुस्तकालय आदि का बहुत महत्त्व होता है। यहां के सरस्वती पुस्तकालय में भी महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का समह काफी मात्रा में करीब १५०० हस्त लिखित पुस्तकों का ताड़पत्र पर है।

शांतिनाथ मन्दिर में दिगम्बर जैन मुनि श्री आदिसागरजी के साथ व्याख्यान देने का अवसर मिला। जनता पर इस प्रेम पूर्ण मिलन का अत्यंत अनुकूल प्रभाव पड़ा। हम सभी संप्रदायों के जैन मुनि अनेकान्तवादी भगवान महावीर के पुजारी हैं। पर आपस में प्रेम पूर्वक व्यवहार नहीं रखते। इससे जैन धर्म की स्थिति क्षीण होती जा रही है। मान्यताओं और सिद्धांतों में मतभेद होने के बावजूद आपसी प्रेम का व्यवहार नहीं तोड़ना चाहिए।

इसी प्रकार श्री धर्मसागरजी महाराज के साथ भी जो मिलाप हुआ वह सदा स्मरण रहेगा।

आज भगवान महावीर का पवित्र शासन दिगम्बर श्वेताम्बर स्थानकवासी मूर्तिपूजक, तेरापंथी आदि विभिन्न संप्रदायों में बंटगया है। एक संप्रदाय वाले दूसरी सम्प्रदायवालों को अपने में शामिल करने की धुन में रहते हैं। तथा एक दूसरे के विरुद्ध वातावरण तैयार करने में शक्ति लगाते हैं। इससे जैन धर्म का आगे विस्तार नहीं हो पाता। अत इस समस्या के बारे में जैन विद्वानों को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

सहसराम

ता २४-११-५७ :

सहसराम मुगल युग में एक महत्त्वपूर्ण नगर था। इसलिए आज इसका ऐतिहासिक महत्त्व माना जाता है। शेरशाह ने १५४२ में एक

सुन्दर जलागार यहां पर बनाया था, वह अभी भी इतिहास-जिज्ञासु पर्यटकों के लिए आकर्षण एवं दिलचस्पी का केन्द्र है। इसी पक्के जलागार के बीच में वह "रोज़ा" बना हुआ है, जिसे देखने के लिए दूर दूर के लोग आते हैं।

सहसराम एक केन्द्र-स्थान है। यहा से चारों ओर जाने के लिए पक्के राजमार्ग बने हुए हैं। पटना धनबाद, कलकत्ता,दिल्ली, आगरा, आदि की ओर सड़कें गई हैं।

सड़क पर ही घासीराम कालीचरण की जो धर्मशाला है, उसमें हम लोग ठहरे। यहा से हमें मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र होते हुए आन्ध्र-हैदराबाद की ओर आगे बढना है। लंबा रास्ता है।

वाराणसी

ता० १६-१२-५७ :

वाराणसी भारत का प्रसिद्ध तीर्थ ही नहीं है, बल्कि यह विद्या, संस्कृति और साहित्य का एक अनूठा केन्द्र भी है। एक ही शहर में २ विश्व विद्यालय, और वे भी अपने अपने ढग के अद्वितीय।

हमने हिन्दू विश्व विद्यालय और संस्कृत विश्व विद्यालय का निरीक्षण करके यह महसूस किया कि काशी नगरी सचमुच विद्या की नगरी है। हिन्दू विश्व विद्यालय तो अपने आप में एक सुन्दर नगर ही है। इसकी स्थापना पं० मदन मोहन मालवीय के सद्प्रयत्नों का परिणाम है उन्होंने दिन रात एक करके इस सस्थान को खड़ा किया। ४ फरवरी १९१६ में तत्कालीन वाइसराय लार्ड हार्डिंग ने इसका शिलान्यास किया। सन् १९२१ में ग्रेट ब्रिटेन के

राजकुमार मिस जोक मेम्स ने इसका उद्घाटन किया। पाँच सवा सौ बीघे की परिधि के अन्दर लगभग ११ एकड़ भूमि में बिरला विद्यालय बना हुआ है। छात्रालय महाविद्यालय, अध्यापकों के निवास पुस्तकालय चिकित्सालय आदि की सुन्दर इमारतें शिल्प कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नमूने की हैं। बिरला विद्यालय के मध्य में लाखों रुपये व्यय करके विश्वमाता का एक दर्शनीय मंदिर भी बनाया गया है। यहाँ पर जैन दर्शन के अध्ययन का भी विशेष प्रबन्ध है। पहले भारत विश्रुत जैन विचारक पं सुखलालजी जैन दर्शन के अध्यापक थे और आजकल उन्हीं के शिष्य तथा प्रकांड विद्वान प० दलसुख मालवणिया अध्यापक हैं।

बिरला विद्यालय से संबद्ध एक जैन संस्था भी है जो पंजाब की श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति की ओर से चलती है। इस संस्था का नाम है— श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम। हम यहाँ[1] पर भी आकर रहे। अधिष्ठाता पं कृष्णचन्द्राचार्य तथा मुनि भाईचन्दजी से मिलाप हुआ। यह संस्था जैन-समाज की उत्कृष्ट सेवा कर रही है। जैन-विषयों पर एम ए. आचार्य और पी एच डी के अध्ययन के लिए, छात्रवृत्ति निवास पुस्तकालय आदि की सुविधाएँ दी जाती हैं। एक उच्चस्तर का मासिक पत्र "श्रमण" भी यहाँ से निकलता है। काशी के घाट भी बहुत सुन्दर हैं, इसलिए बहुत प्रसिद्ध हैं। गंगा नदी काशी के चरणों को पखारती हुई आगे बढ़ती है।

न केवल हिन्दुओं के लिए बल्कि जैनों और बौद्धों के लिए भी काशी तीर्थ स्थान है। तीन जैन तीर्थंकरों के चरणों से काशी नगरी पवित्र हुई है। हम एक दिन भेलूपुर के श्री पार्श्वनाथ मन्दिर में भी रहे। इस ऐतिहासिक मन्दिर के दर्शनों के लिए हजारों जैन धर्मावलम्बी प्रतिवर्ष आते हैं।

बौद्धों का तीर्थ स्थान सारनाथ है। ऐसा बताया जाता है कि तपस्या करते समय महात्मा बुद्ध के पाच शिष्य उन्हें छोड़कर यहां आगये थे। उसके बाद बोद्धगया में बुद्ध को बोद्धि (आत्म ज्ञान) मिली। तब बुद्ध ने सोचा कि सबसे पहले मुझे अपने उन पाचों शिष्यों को ही उपदेश देना चाहिए। अत वे बोधगया से चलकर वाराणसी आये और सारनाथ में ठहरे हुए अपने पाचों शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया। यह प्रथम उपदेश ही धर्म चक्र प्रवर्तन के रूप में विख्यात हुआ। वही स्थान यह सारनाथ होने के कारण इसका बहुत महत्त्व माना जाता है।

हम बनारस मे ता० ३-१२ ५७ को ही आगये थे। यहा १५ दिन रहकर विभिन्न स्थानों का पर्यवेक्षण किया। यहा पर भूतपूर्व तेरापंथी मुनि श्री हस्तीमलजी 'साधक' से मिलाप हुआ। ये बहुत अच्छे विचारक और सर्वोदय कार्यकर्ता हैं। बनारस में सर्वोदय का साहित्य प्रकाशन मुख्य रूप से होता है। अखिल भारत सर्व सेवा सघ इस काम को करता है। विविध पहलुओं से विविध प्रकार का साहित्य यहा से निकाला गया है। इस प्रकार लगभग दो सप्ताह का वाराणसी प्रवास बहुत अच्छा रहा। यहा पर स्थानक वासी समाज के करीब ३० घर हैं। बाकी श्वेताम्बर तथा दिगंम्बर समाज के घर काफी सख्या में हैं। और सभी बिना भेद भाव के आपस में अच्छा व्यवहार रखते हैं।

पन्नी

ता० २८-१२-५७ :-

पैदल यात्रा में अनुकूल तथा प्रतिकूल अनेक परिस्थितियों मे से गुजरना पड़ता है। हम महगज से पन्नी पहुँचे। रास्ते में

आहारादि की सुविधा न मिली। हम "पाली" गाँव के श्रीमान राम राम के मकान पर पहुँचे। रामारामजी बाहर गए हुए थे। केवल महिलायें ही थी। सिर्फ तीन घर का छोटा गाँव। हमको भूख और प्यास लग रही थी अतः हमने छाछ की याचना की। बहनों ने कुछ छाछ बहराई और हम आगे चले। करीब १ मील की दूरी पर स्कूल में रात्री विश्राम किया।

श्री रामारामजी जब घर आये तो महिलायें उनसे बोली कि आप तो बाहर गए हुए थे और पीछे से यहां मुंह बांधकर दो बाई आये थे। मपन्न पर बगैरा लेकर गये हैं और स्कूल में हैं। यह सुनते ही श्री रामारामजी ने आस-पास के ३-४ व्यक्तियों को एकत्रित कर लाठियां भाले वगैरा ले जहां हम ठहरे हुए थे वहां आये। स्कूल में सर्व प्रथम श्री रामारामजी भाला लेकर आये और बोले तुम कौन हो? कहां रहते हो? कहां से आये हो? उनका विकराल रूप देखकर हम डरे नहीं और हंसते हुए कहा—हम जैन साधु हैं, और पैदल यात्रा करते हुए हम कानपुर की तरफ जा रहे हैं। हम पैसे वगैरा-वस्तु साथ नहीं रखते हैं। और पैदल यात्रा द्वारा संसार की सेवा करते हैं।

इस प्रकार निःस्वार्थ भाव के शब्द सुनकर वे रोने लगे और बोले—हमने आपका बहुत बड़ा अपराध किया। माफ करना। हम तो आपको डाकू समझते थे क्योंकि आप जैसे मुनियों का यह प्रथम दर्शन हमको हुआ है। सभी लोगों ने करीब दो घंटे तक सत्संग किया और बहुत प्रभावित हुए।

सतना

ता० ३-१-५८ :

नया वर्ष, नया प्रदेश, नया वातावरण, नया प्राण, नया आलोक! सब कुछ नया! नवीनता ही जीवन है।

"पदे पदे यन्नवता मुपैति, तदेव रूपं रमणीय ताया।"

यह कालचक्र घूमता ही रहता है, दिन बीतता है, सप्ताह जाता, महीना भी चला जाता है और वर्ष भी देखते देखते व्यतीत हो जाता है। इस प्रकार वर्ष और युगों के साथ ही मनुष्य की आयु भी बीत जाती है। इस काल-चक्र को कोई भी पकड़ कर नहीं रख सकता।

हम बंगाल से चले, बिहार में आये, नेपाल को निहारा, उत्तर प्रदेश का भ्रमण किया और अब मध्यप्रदेश में बढ़े चले जा रहे हैं। सतना मध्यप्रदेश का एक छोटा पर रमणीय नगर है। यहां से बनारस १८० मील है और जबलपुर ११८ मील। जबलपुर होते हुए हमें आगे बढ़ना है।

जबलपुर

ता० ३०-१-५८ :

आज महात्मा गांधी का निधन-दिवस है। महात्माजी को जो मृत्यु प्राप्त हुई वह एक शहीद की मृत्यु थी। वीर मृत्यु थी। कहना तो यों चाहिये कि उनका बलिदान था। उन्होंने अपने जीवन में अहिंसा, सत्य और स्वातन्त्र्य की उच्च साधना की। अंत में हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष को मिटाने की साध मन में लेकर वे चले गए।

२६ जनवरी को जबलपुर में जो गणतंत्र दिवस समारोह हुआ उसके संदर्भ में आज का दिन बड़ा भयानक सा मालूम देता है। क्योंकि जिस व्यक्तिकी तपस्या से भारत में गणतंत्र का उदय हुआ वही व्यक्ति एक भारतीय हिन्दू की गोली का शिकार हो गया।

हम १६ जनवरी को जबलपुर पहुँच और कल यहां से आगे विहार करना है। इस अरसे में जबलपुर के शहर और कैंट एरिया दोनों में रहे। दोनों ही क्षेत्रों में, कत्ल खाने बन्द हो इस आशय का प्रस्ताव भी पारित किया गया। एवं, उसी से गणतंत्र के रोज कत्ल खाने बन्द रहे।

जबलपुर मध्यप्रदेश का विशिष्ट नगर है। सारे मध्यप्रदेश की राजनैतिक सामाजिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का सचालन करने में इस नगर का प्रमुख योगदान है। नित्य प्रवचन और धर्म चर्चा होती रही।

नागपुर

ता २४-२-४८ ः

मध्यप्रदेश से महाराष्ट्र। शिवाजी का मराठा देश। भारत के इतिहास में महाराष्ट्र की अपनी विशिष्ट देन है। शिवाजी-जैसे देश भक्त राजाओं से लेकर तिलक एवं गोखले तक की कहानी भारतीय इतिहास में गौरव के साथ कही जाती रहेगी। न केवल राजनीतिज्ञों की दृष्टि से बल्कि संतों की दृष्टि से भी महाराष्ट्र उर्वर भूमि रही है ज्ञानदेव नामदेव तुकाराम स्वामी रामदास और भी ऐसे कितने ही संतों ने भारतीय संत परम्परा को प्रथम श्रेणी को सुशोभित किया और आज भी आचार्य विनोबा जैसे संत महाराष्ट्र ने दिये हैं।

गांधीजी ने भी महाराष्ट्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था और जमनालालजी बजाज जैसे साथी भी उन्हें महाराष्ट्र की भूमि से ही प्राप्त हुए थे। गांधीजी की तपोभूमि वर्धा और सेवाग्राम यहां से केवल ५० माइल है। जिन दिनों में आजादी का आन्दोलन चल रहा था, उन दिनों में सारे देश की नजरें वर्धा और सेवाग्राम पर रहती थी।

इस महाराष्ट्र भूमि से होकर जब हम गुजर रहे हैं, तो यहा की ये समस्त विशेषताएँ हमारे मन पर एक विशिष्ट प्रभाव डालती हैं।

नागपुर हिन्दुस्तान का शिखर है। कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और दिल्ली ये चारों यदि इस देश के मजबूत स्तंभ हैं और बाकी सारा देश इन स्तंभों पर खड़ा महल है तो नागपुर सारे देश के ठीक बीच में सुशोभित होने वाला शिखर है, ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं।

जैनशाला के विद्यार्थियों और शहर के नागरिकों ने हमारा भाव भरा स्वागत किया।

नागपुर में कुछ दिन रुककर आगे बढ़ेंगे। रास्ता लंबा तय करना है, नेपाल देश के उत्तरी सिरे पर है और मद्रास दक्षिणी सिरे पर है। हमें हैदराबाद होकर आगे मद्रास एवं दक्षिण भारत की ओर बढ़ना है।

हिंगन घाट

ता० १३-३-५८ :

हिंगनघाट एक छोटासा सुन्दर नगर है। यहा पर स्थानकवासी समाज के भी काफी घर हैं। मूर्तिपूजक समाज के लोग भी

अच्छी संख्या में हैं। स्थानक मन्दिर उपाश्रय सभी हैं। चातुर्मास के लायक गांव है। भाव भक्ति बहुत अच्छी है।

यहां पर कपड़े की मिलों के कारण आस-पास के मजदूरों का तथा व्यापार का अच्छा केन्द्र है। कुछ बाग बगीचे भी अच्छे हैं।

हम आये तो भाई बहनों ने अच्छा स्वागत किया। जैन-समाज के रूप में सभी लोग आये। वातावरण बहुत सुन्दर रहा। वास्तव में यही तो जैन-धर्म का सच्चा स्वरूप है। यदि जैन लोग आपस में ही छोटे छोटे मतभेदों को लेकर झगड़ते रहेंगे तो दुनिया को प्रेम मैत्री तथा अहिंसा का पाठ कैसे पढ़ा सकेंगे।

बोलारम

ता० १८-५-५८ :

यहां स्थानकवासी समाज के १० घर हैं। पहुंचने पर खूब स्वागत हुआ। प्रतिदिन प्रवचन होते रहे। सिकन्दराबाद से काफी संख्या में भावुकगण व्याख्यान सुनने आते थे।

मुनिवर श्री हीरालालजी महाराज एवं दीपचन्दजी महाराज से मिलाप हुआ। इस तरह के मिलन से सारी पूर्व-स्मृतियां जागृत हो उठती हैं और सात्विक- सौजन्य व भक्ति का सागर उमड़ पड़ता है। आज मुनिराजों से मिलन होने पर वैसा ही आनन्द हुआ जैसा किसी बिछुड़े के मिलने पर होता है। साधु तो आत्म साधना करने वाला मुक्त विहारी होता है पर गुरु परम्परा की डोर से वह बंधा हुआ भी है। यह डोर बहुत कोमल है और इस डोर में एक ही गुरु-परम्परा में विचरण करने वाले एक दूसरे से दूर होकर भी बंधे ही रहते हैं।

इस वर्ष का चातुर्मास सिकन्दराबाद करना है। अत यहां से सीधे सिकन्दराबाद के लिए ही विहार होगा।

सिकदराबाद

ता० २५-६-५८ :

चातुर्मास करने के लिए आज सिकन्दराबाद में प्रवेश करने पर समस्त सघ ने हार्दिक स्वागत किया। बालक-बालिकाओ ने एक भव्य जुलूस बनाकर सुन्दर दृश्य उपस्थित कर दिया था। मुनियों का चातुर्मास के लिए किसी भी नगर में आना उस नगरवासी जनता के लिए अत्यंत आनन्द और उल्लास की बात होती है। चार महीने तक लगातार धर्म प्रवचन, श्रवण का लाभ भी तो अपने आप मे एक महनीय लाभ है।

ता० १५ अगस्त ५८ :

'यह आजादी का दिन। १५ अगस्त १९४७ की अर्ध रात्रि में जब सारा ससार सो रहा था तब हिन्दुस्तान जाग रहा था और स्वातन्त्र्य की खुशियाँ मना रहा था। आज आजादी प्राप्त हुए ११ वर्ष हो गये। एक बहुत बड़ी क्राति हुई कि सदियों से राजनैतिक गुलामी की बेडियों में जकड़ा हुआ देश मुक्त हुआ पर वह क्राति अधूरी थी। क्राति की पूर्णता तो तभी होती जब इस देश के लोग आत्म-जागृति का और आन्तरिक स्वातन्त्र्य का पाठ सीखते। आजादी के इतने वर्ष बाद भी देश में दु:ख, दैन्य, पाप, भ्रष्टाचार, हिंसा, भेदभाव आदि दोष घटने के स्थान पर निरन्तर बढते ही जा रहे हैं। क्या आजादी का अर्थ उत्पथ खलता है। कभी नहीं। आजादी का अर्थ

अच्छी संख्या में हैं। स्थानक मन्दिर उपाश्रय सभी हैं। चातुर्मास के लायक गांव है। भाव भक्ति बहुत अच्छी है।

यहां पर कपड़े की मिलों के कारण आस-पास के मजदूरों का तथा व्यापार का अच्छा केन्द्र है। कुछ बाग बगीचे भी अच्छे हैं।

हम आये तो भाई बहनों ने अच्छा स्वागत किया। जैन-समाज के रूप में सभी लोग आये। वातावरण बहुत सुन्दर रहा। वास्तव में यही तो जैन-धर्म का सच्चा सत्य है। यदि जैन लोग आपस में ही छोटे मोटे मतभेदों को लेकर झगड़ते रहेंगे तो दुनिया को प्रेम मैत्री तथा अहिंसा का पाठ कैसे पढ़ा सकेंगे।

बोलारम

ता० १८-४-४८ :

यहां स्थानकवासी समाज के ३० घर हैं। पहुँचने पर खूब स्वागत हुआ। प्रतिदिन प्रवचन होते रहे। सिकन्दराबाद से काफी संख्या में आवकगण व्याख्यान सुनने आते थे।

मुनिवर श्री हीरालालजी महाराज एवं दीपचन्दजी महाराज से मिलाप हुआ। इस तरह के मिलन से सारी पूर्व-स्मृतियां जागृत हो उठती है और सात्विक- सौजन्य व भक्ति का सागर उमड़ पड़ता है। आज मुनिराजों से मिलन होने पर वैसा ही आनन्द हुआ जैसा किसी बिछुड़े के मिलने पर होता है। साधु तो आत्म साधना करने वाला मुक्त विहारी होता है पर गुरु परम्परा की डोर से बह बधा हुआ भी है। यह डोर बहुत कोमल है और इस डोर में पड़े ही गुरु-परम्परा में विहरण करने वाले एक दूसरे से दूर होकर भी बंधे ही रहते हैं।

आयोजन किया गया। हमने इस आयोजन में सहर्ष शामिल होना स्वीकार किया। दिगंबर पंडित, तेरापंथी साधु सागर मुनि, मूर्ति पूजक साधु प्रभावविजयजी आदि ने भी इस आयोजन में भाग लिया। इस तरह के आयोजनों से परस्पर प्रेम और मैत्रि बढ़ती है। विभिन्न संप्रदायों को मानने के बावजूद आखिर जड़ तो सबकी एक जैन धर्म ही है। आयोजन खूब सफल रहा।

पर्यूषण पर्व भी बहुत उत्साह और शान के साथ मनाया गया। त्याग, प्रत्याख्यान, तपस्या, पौषध, प्रतिक्रमण सभी कामों में स्थानीय समाज ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया। इस प्रकार हमारी सिकन्दराबाद तक की पैदल यात्रा सफल समाप्त हुई।

●●●●

संयमित स्वातन्त्र्य से है। पर देश में संयम के स्थान पर, अनुशासन के स्थान पर असंयम और उच्छृंखलता बढ़ रही है।

१५ अगस्त के अवसर पर आयोजित एक विशाल सार्वजनिक सभा में मैंने उपरोक्त विचार प्रस्तुत किये।

ता० ३१-८-५८ :

एस एस० जैन विद्यार्थी संघ ने एक विराट सभा का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता प्रमुख नागरिक श्री [illegible] मल्होत्रा ने की। विषय रखा गया "भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता" मैंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संस्कृति के टुकड़े नहीं किये जा सकते। सम्पूर्ण मानव संस्कृति अखण्ड है। अतः भारतीय और अभारतीय इस तरह के भेद संस्कृति में नहीं हो सकते। मानव-संस्कृति पर जब हम विचार करेंगे तब इतना ही कह सकते हैं कि मानव दो प्रकार के होते हैं सत् और असत्। अतः संस्कृति भी दो प्रकार की हो सकती है—सत् संस्कृति एवं असत् संस्कृति। ये दोनों तरह की संस्कृतियाँ हर जाति और हर देश में पाई जाती है। भारत में यदि महावीर हुए तो गोशालक भी हुए। राम हुए तो रावण भी हुए। कृष्ण हुए तो कंस भी हुए। इसी तरह भारत से बाहर भी मुहम्मद साहब तथा ईसा मसीह जैसे संत हुए हैं।

प्रत्येक मानव को सत् संस्कृति के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

ता० २१-९-५८ :

२१-९-५८ को क्षमापना पर्व मनाया गया प्रगति समाज की ओर से प्रायः सभी संस्थाओं के लोग मिलकर क्षमायाचना करें, ऐसा

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
५॥	बुदबुद	वदेश्वर महादेव मन्दिर	
६॥	पानागढ़	हजारीमल बनारसीदास	तीन मारवाड़ी भाई के घर हैं।
६॥	नरामोल	स्कूल	
८	फरीदपुर थाना	थाना का बरामदा	
३	मोहनपुर	डाक बंगला	
५	परजोड़ा	पेट्रोल पम्प	
५	रानीगंज	धर्मशाला	यहां गुजराती स्था० जैन के १० घर हैं
३	माइगाम कोलयारी	कोलयारी	
६	आसनसोल	स्कूल	
२	मिर्जापुर रोड	भीमसेनजी के यहां	
२	बर्दनपुर	बाम्बे स्टोर	यहां गुजराती भाईयों के तथा मारवाड़ी भाईयों के १० घर हैं।
६	न्यामतपुर	शांतिलाल एंड कंपनी	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
६	बराकर	मारवाड़ी विद्यालय	" " "
१३	बरवा	डाक बंगला	
८	गोविन्दपुर	मन्दिर	मारवाड़ी के ७ घर हैं।
७॥	धनबाद	महेता हाउस	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
४	झरिया	स्थानक	१५० घर हैं।

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
६॥	वुदवुद	पंचेश्वर महादेव मन्दिर	
६॥	पानागढ़	हजारीमल बनारसीदास	तीन मारवाड़ी भाई के घर हैं।
६॥	खरासोल	स्कूल	
८	फरीदपुर थाना	थाना का बरामदा	
३	मोहनपुर	डाक बंगला	
५	फरजोडा	पेट्रोल पम्प	
५	रानीगंज	धर्मशाला	यहां गुजराती स्था० जैन के १० घर हैं
४	सादग्राम कोल्यारी	कोल्यारी	
६	आसनसोल	स्कूल	
७	मिर्जापुर रोड़	भीमसेनजी के यहां	
२	बर्द्दनपुर	बाम्बे स्टोर	यहां गुजराती भाईयों के तथा मारवाड़ी भाईयों के १० घर हैं।
६	न्यामतपुर	शांतिलाल एंड कंपनी	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
६	बराकर	मारवाड़ी विद्यालय	” ” ”
१३	बरवा	डाक बंगला	
८	गोविन्दपुर	मन्दिर	मारवाड़ी के ७ घर हैं।
७॥	धनबाद	महेता हाउस	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
४	झरिया	स्थानक	१५० घर हैं।

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७	माडु	माध्यमिक विद्यालय	
६॥	मोरागी	स्कूल	
७॥	हजारी बाग	स्कूल	
७	भिन्दुर	दि० जैन धर्मशाला	
६।	सूरजपुरा गेट(पद्मा गेट)	स्कूल	
७	बरटि	गृहस्थ का मकान	
५	नयाग्राम	" " "	
६	झूमरीतिलैया	मारवाड़ी धर्मशाला	
४	कोडरमा	जैन पेट्रोलपप	
७	ताराघाटी	सरकारी मकान	
४	दिबौर	डाक बगला	
७	रजौली	उच्च विद्यालय	
५	आन्दरमोरी	महावीर महतो	
६	फरहा	प्राथमिक स्कूल	
४	गुणावा	धर्मशाला	
८।	गिरियट	गृहस्थ के यहा	
५	पावापुरी	जैन धर्मशाला	
८	बिहार सरिफ	" " "	
६॥	पेटना	स्कूल	
०	बाणना	स्टेशन	
१	बख्त्यारपुर	धर्मशाला	
६	बाढ़पुर	शंभु बाबू	
२	बफटपुर	शिवमन्दिर	
५	फतुहा	महन्तजी का आश्रम	
४	सबरपुर	शिवमन्दिर	

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	थुमा	संस्कृत विद्यालय	यहां महन्तजी अच्छे प्रेमी हैं
४	डुमरा	वसिष्ठ नारायणसिंह	ग्राम ठीक है
१	सीतामढ़ी	धर्मशाला	नन्दलाल जयप्रकाश अग्रवाल आदि के अनेकों घर हैं
११॥	सभाससोल	शिवमन्दिर	ब्राह्मणों के बहुत घर हैं भाविक हैं
४॥	ढेंग	बाबू सूर्यनारायणजी मोमियार	ग्राम अच्छा है
५	गोर	मारवाड़ी भाई के यहां	मारवाड़ियों के यहां ७ घर हैं नेपाल की सरहद शुरु होती है
४	वलुआ	खखनभगत	ग्राम ठीक है
५	होकहा	मठ	" " "
१०	चिमडाहा	रामचरितसिंहजी का मठ	" " "
५	बरीयारपुर	मठ	
६	फत्तियाबाजार	बगीचा	
४	बीरगंज	महावीर प्रसाद धर्मशाला	मारवाड़ी भाईयों के १८० घर हैं रामकुँवार सुन्दरमलजी आदि अच्छे हैं
८	जीतपुर	गौशाला	ग्राम साधारण
५	सीमरा	वेटिंगरूम	हवाईजहाज का अड्डा है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	वेरगनिया	महावीर प्रशाद मारवाड़ी	मारवाड़ी के ६० घर हैं
५	ढेंग	बाबू सूर्यनारायण भी जी	
४	सभा समोल	योगिन्द्र नाथजी त्रिपाठी	
६	रीगा	सुगर फैक्ट्री गेस्ट हाउस	मैनेजर सुरजकरण जीपारिख जोधपुर वाले तथा अन्य ५ घर जैन के हैं
६	सीतामढी		
६	भासर पकडी	जयकिशोर बाबू	ग्राम अच्छा है
४	वासपटी मधुबाजार	जसकीराम रामसुन्दर सु डा	४ घर मारवाड़ियों के हैं
८	जनकपुर रोड (पुपरी)	धर्मशाला	१० घर मारवाड़ियों के हैं
४	रामपुर पचासी	स्कूल	शितलजी शाहु आदि अच्छे हैं
८	कमतोल	शिव मन्दिर	सूर्यनारायणजी डिप्टी आदि अच्छे सज्जन हैं
७	अहमदपुर	शिवनारायण मारवाड़ी	
६	दरभगा	अमरचन्द बालचन्द लुणिया	मारवाड़ियों के १०० घर हैं
३	कटलीया सराय	अमरफीलाल महादेव	ग्राम अच्छा है
८	विशनपुर	रामचन्द्र गोखले	
५	जनार्दनपुर	महन्तजी के मठ में	
७	समस्तिपुर	जैन मारकेट	जैन के तथा मारवाड़ी के ८० घर हैं
७॥	ताजपुर	दुर्गामाता का मन्दिर	ग्राम अच्छा है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७	वखेरापुर	बैसिक सिनियर स्कूल	ग्राम अच्छा है
७	आरा	हरप्रशाद जैन धर्मशाला	जैन वस्ती अच्छी है
४॥	उदवन्त नगर	मठ	गाव ठीक है
८॥	गदहनि	मठ	गाव साधारण
६	सेमराव	मरयु विद्या मन्दिर	ग्राम अच्छा है कुछ दूरी पर है
६	पीरो	धर्मशाला	गाव अच्छा है
४॥।	सहजनि	देव नारायणसिंह	" " "
७।	विक्रमगंज	मढिया	" " "
५	मढिया	रामजगासियादवे	" " "
८॥	नोखा	शंकर राईस एन्ड मिल्स	मालिक अच्छा है
५	लद्मणटोल	टपरी बलदेव सिंह	ग्राम साधारण
७	सासाराम	धर्मशाला	मारवाड़ी के अच्छे घर हैं

सासाराम से ११० मील मिरजापुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७॥	शिवसागर	शिव मन्दिर	सहदेव साहु बड़े सज्जन हैं
२	टेकारी	बुनियादी विद्यालय	जगल में
६	कुदरा	नथमलजी जैन के गोले पर	सरावगियों के तीन घर हैं
५॥	पुसोली	काकराबाद मिडिल स्कूल	
७॥	मोहानिया	सत्यनारायण मील	मील मालिक सज्जन
७॥	दुर्गावति	श्री महावीरजी का स्थान	महन्तजी बड़े सज्जन
११	सय्यदराजा	चौथमल लद्मीनारायण धर्मशाला	चोथमलजी आदि लोग बड़े सज्जन हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
४	लालगंज	डाक बंगला	ग्राम अच्छा है
६	बराधा	प्राइमरी स्कूल	ग्राम ठीक है
७	महेषपुर	द्वारकादास बनिया	साधारण ग्राम
२	दरामगंज	संस्कृत महाविद्यालय	ग्राम साधारण है
४	जदुरियादर	सरकारी क्वाटर	" " "
६	हनमता	धर्मशाला	मारवाड़ी ५ घर हैं
८।	खटखरी	स्कूल	लालचन सेठ आदि लोग बड़े सज्जन हैं
८।	महुगंज	शिव मन्दिर	ग्राम साधारण है
४	पत्रि	स्कूल	ग्राम ठीक है
६॥	लेओर	स्कूल	आगे पालिया ग्राम अच्छा है।
७॥	पत्थरहा	सुभलायकसिंह	ग्राम ठीक है
१२	सुरमा	लोलाराम	ब्राह्मण बस्ती ठीक है
१३	रींवा	जैन धर्मशाला	दि. जैन के १२ घर हैं

रींवा से ३२७ मील नागपुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
८॥	वेला	तेजसिंह ठाकुर	ग्राम ठीक है
७	रामपुर	दच्छीराम की धर्मशाला	दच्छीराम हलवाई अच्छा सज्जन है
६	सज्जनपुर	हाई स्कूल	ग्राम अच्छा है
४	माधोगढ	हाई स्कूल	धरणेन्द्रप्रशाद तिवारी जी बड़े सज्जन हैं
६	सतना	जैनमन्दिर	श्वे जैन के २० एवं स्था. जैन के १२ घर हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
४॥	रमनपुर	धर्मशाला	जंगल
४।	बनजारी की घाटी	सरकारी मकान	गांव साधारण
६	घूमा	जैन के यहां	दि० के दो घर हैं
६	बनाई डोंगरी	स्कूल	गोपालों की अच्छी बस्ती है
७॥	लखनादोन	दि० जैन मन्दिर	दि० जैन के ४० घर हैं।
४	मडई	सरकारी मकान	
३॥	गणेशगंज	स्कूल	ग्राम अच्छा है।
६	घुणई	दशरथलाल जैन	ग्राम साधारण।
४॥	छपरा	जमनादास रतिलाल	दि० जैन के १०० घर हैं।
३	साधक शिवनी	स्कूल	ग्राम अच्छा है।
७॥	बडोल	त्रिलोकचन्द अग्रवाल	" " "
३	सोनाडोंगरी	ब्राह्मण के मकान पर	" " "
७	शिवनी	श्वे० जैन मन्दिर	जैन के १५ घर हैं
४॥	खिलादेही	बगीचा	
८	मोहोगांव	सेठ भागचंदजी	
४	रूकड	नाका	
५	कुरई	दवाखाना	
२	पिपरिया	नत्थु हवलदार	
६	खवासा	कस्तूरचन्द दि० जैन	
२	मनिग्राम	स्कूल	
८	देवलापार	सुन्दरलाल वनिया	
४॥	ग्रोनी	स्कूल	ग्राम साधारण

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६॥	पोहना	स्थानक	४ घर स्थानक वासी के हैं।
६	पिपलापुर	बुलाखीदासजी	३ घर स्थानकवासी
३	एकुर्ली	रतनलालजी डागा	१ घर स्था० जैन
११	करजी	स्कूल	ग्राम ठीक है
३	धारणा	हनुमानजी का मन्दिर	,, ,,
७	पोहर कवडा	स्थानक	१५ घर स्था. जैन के हैं
३॥	जुजालपुर	बगीचा	
६॥	पाटणबोरी	कच्छीभाई	३ घर मारवाड़ी २ घर कच्छी के हैं
६	पिपलवाड़ा	स्कूल	ग्राम साधारण
६	चान्दा	हनुमानजी का मन्दिर	ग्राम ठीक है
३	आदीलाबाद	मील	६ घर स्था० जैन के है
७॥	सीता गोंदी	बावडी	१ घर गुजराती का है
४॥	गडी हथनुर	शिव मन्दिर	ग्राम ठीक है
८॥	इन्डोचा	गोविन्दरावजी	ग्राम ठीक है
४	सातनम्बर	बनजारे का टाडा	
६॥	निरुणकुडा	दरजी	ग्राम ठीक है
२॥	रोड मामला	लकड़ी गोदाम	
४॥	पोकड़ी	थाना	
८	इलोची	एक सद्‌गृस्थ के यहां	
४	निरमल	महादेवजी सीताराम राइसमिल	८ घर मारवाड़ी के हैं
७॥	सोन	मठ	ब्राह्मण बस्ती अच्छी है
७॥	किसाननगर	किसान राईस मिल	ग्राम ठीक है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१२	अरणुल	शिवमन्दिर	ग्राम ठीक है
१२	रिच्चपली	रामजी मन्दिर	ग्राम ठीक है
११	कलवरास	डाकबंगला	ग्राम साधारण है
५॥	सदाशिवनगर	होटल	ग्राम साधारण है
७॥	कामारेड्डी	स्थानक	ग्राम ठीक है त्था १० घर हैं
६	बंगलपेली	शिव मन्दिर	" " "
६	भिकनु स्टेशन	भीमबोभाई कम्पनी	" ग्राम ठीक है
४	रामायण पेठ	गिरनी सड़क पर	ग्राम ठीक है
५॥	नारसींगी	शिवमन्दिर	ग्राम ठीक है
४	मनुर	सत्यनारायण मोदी	ग्राम साधारण
६	मासाइ पेठ	हनुमानजी का मन्दिर	ग्राम ठीक है
४	तुपराम	सत्यनारायण कम्पार	ग्राम ठीक है
७	मनुराबाद	म्युनरेड्डी	ग्राम ठीक है
४	कमलकंठी	हनुमानजी का मन्दिर	" "
६	मेड्चल	ग्राम पंचायत आफिस	" "
६	कोंपली	मद्रास के मकान पर	
५॥	बोलारम	स्थानक	
३	लाल बाजार	सरकमुलर इन्सपेक्टर	
३	सिकन्दराबाद	स्थानक	
६	हैदराबाद	बशीरपुरा स्थानक	

मद्रास प्रांत

१ सेठ मोहनमलजी चोरडिया C/० सेठ अगरचन्दजी मानमलजी चोरडिया ठी. मीन्टस्ट्रीट साहूकार पेठ न० १०२ मु० मद्रास १
२. एस.एस जैनस्थानक मीन्टस्ट्रीट साहूकार न० १११ मु० मद्रास १
३ सेठ मेघराजजी महेता C/० हिन्द बोतल स्टोर्स नं० ६२ नयनाप्पा नायकस्ट्रीट मु० मद्रास ३
४ सेठ जयवन्तमलजी मोहनलालजी चौरडिया न० ७ मेलापुर मु० मद्रास ४
५ सेठ शभूमलजी माणकचन्दजी चौरडिया नं० १५/१६ मेलापुर मु० मद्रास ४
६ सेठ अमोलकचन्दजी भंवरलालजी विनायकिया नं० १३६ माऊन्ठ रोड़ मु० मद्रास
७ सेठ हेमराजजी लालचन्दजी सिंघवी नं० ११ बाजार रोड़ रामपेठ मु० मद्रास १४
८ श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन बोर्डिङ्ग होम न० ८ माडलीय रोड़ ठी. नगर मु० मद्रास १७
९ ए किशनलाल नं० १४ एम एच रोड मु० पेरम्बूर मद्रास ११
१० सेठ गणेशमलजी राजमलजी मरलेचा मु० पो० रेडहिल्स (मद्रास)
११ सामी रिखबदासजी केसरवाडी C/० श्री आदिनाथ जैन टेम्पल मु० पो० पोलाल-रेडहिल्स व्हाया मद्रास
१२ सेठ बिरदीचन्दजी लालचन्दजी मरलेचा ठी रामपुरम् (मद्रास)
१३ सेठ मोहनलालजी C/० पी. एम जैन न० ८५ ताणा स्ट्रीट मु० मद्रास ७
१४ गेलड़ा बैंक न० २ परीयनपकारन स्ट्रीट, साहूकार पेठ मु० मद्रास १

१५. सेठ खीमराजजी चोरडिया नं० २१ सनरल मुधिया मुदालि स्ट्रीट साहूकार पेठ मु० मद्रास १

१६ सेठ मिसरीमलजी नेमीचन्दजी गोलेछा ठी० पो कम्मलम् कोतूरपाई रोड म १६ मद्रास १६

१७ सेठ सुगराजजी पारसमलजी बोहरा नं० २६ बाजार रोड मु० रोयापेठ मद्रास १४

१८. सेठ मूलचन्दजी माणकचन्दजी सावकर ४ कारस्ट्रीट रोयापेठ मद्रास १४

१९. सेठ विजयराजजी मुथा ४१० पी. पी. रोड़ मु० पो पसंदूर मद्रास १६

२०. सेठ गुलाबचन्दजी पीसुलालजी मरलेचा नं ४६ बाजार रोड मु० पो० पल्लावरम् जिला चंगलपेठ (मद्रास)

२१ सेठ देवीचन्दजी मनरूपालजी विनायकिया मु० पो० ताम्बरम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)

२२. सेठ धनराजजी मिश्रीमलजी सुराणा मु० पो० ताम्बरम् जिला- चंगल पेठ (मद्रास)

२३ सेठ सुमेरमलजी माणकचन्दजी बोहरा न ४४ बनरल पीठ रसरोड माण्डरोड मु० मद्रास १

२४ सेठ मस्तीमलजी धरमीचन्दजी सिंघेसरा ११२ मयल मुदाई स्ट्रीट मेहरू रोड मु० मद्रास १

२५. सेठ पीसुलालजी पारसमलजी सिंघवी मु चंगल पेठ (मद्रास)

२६ सेठ दीपचन्दजी पारसमलजी मरलेचा मु चंगल पेठ (मद्रास)

२७. सेठ मिश्रीमलजी पारसमलजी मरलेचा नं० ११४ बाजार रोड मु० पुनमल्ली कन्टोनमेन्ट (मद्रास)

२८ सेठ पृथ्वीराजजी दलीचन्दजी कवाड नं० १५० टरफरोड
मु० पुन्नमल्ली (मद्रास)

२९ सेठ किशनलालजी रूपचन्दजी लूणिया ठी गोडावन स्ट्रीट
मु० मद्रास

३० सेठ धीरजमलजी रेखचन्दजी राका मु०चिन्ताधारी पेठ (मद्रास)

३१ सेठ समरथमलजी जोगीदासजी पटाखी स्टोर नेहरू बाजार
मु० आवडी (मद्रास)

३२ सेठ मिश्रीमलजी प्रेमराजजी लूकड नं० ११४ बाजार रोड
मु० तीरु वल्लुर (मद्रास)

३३ सेठ जुगराजजी खींवराजजी बरमेचा ठी० गोडावन स्ट्रीट
मु० (मद्रास)

३४ सेठ गणेशमलजी जेवन्तराजजी मरलेचा मु० तिरकल्ली कुडम्
जिला-चगल पेठ (मद्रास)

३५ सेठ बक्तावरमलजी मिश्रीमलजी मरलेचा मु० तिरकल्ली कुडम्
जिला चंगल पेठ (मद्रास)

३६ सेठ शिवराजजी इन्दरचन्दजी लुणावत नं० ४ वेङ्कगेट रोड
सुलापटलम् मु० मद्रास १२

३७ सेठ जवानमलजी सजनराजजी मरलेचा मु० पो० करणगुडी
जिला चगल पेठ (मद्रास)

३८ सेठ सतोकचन्दजी जंवरीलालजी झामड़ मु० मधुरान्तकम्
नं० ४२ बाजार रोड जिला चगल पेठ (मद्रास)

३९ सेठ किशनलालजी चादमलजी झामड बाजार रोड
मु० मधुरान्तकम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)

५४ सेठ नथमलजी दुगड़ C/o श्री जैन स्टोर्स ठी० पाडीरोड़
मु० पल्लूपुरम् (मद्रास)

५५ सेठ देवराजजी मोहनलालजी चौधरी मु० तिरू कोईलूर

५६- सेठ चुन्नीलालजी धरमीचन्दजी नाहर मु० अरगडनलूर स्टेशन
तिरू कोइलूर

५७ सेठ ए छगनमल जैन ज्वेलर्स मु० तिरूवन्नामलै जिला एन ए

५८ सेठ तेजराजजी बाबूलालजी छाजेड मु० पोलूर जिला-एन ए

५९ सेठ भवरलालजी जवरीलालजी बाठिया मु० पोलूर जिला एन ए

६० सेठ बालचन्दजी बादरमलजी मुथा
मु० तिरूवन्नामलै जिला-एन ए

६१ सेठ सेसमलजी माणकचन्दजी सिंघवी मु० आरनी जिला-एन ए

६२ सेठ भवरलाल भडारी मु० चेतपेट जिला एन ए.

६३ सेठ हीराचन्दजी नेमीचन्दजी बाठिया
मु० ऑरकाट जिला-एन ए

६४ सेठ माणकचन्दजी सपतराजजी पोकरना ठी० बाजार स्ट्रीट
मु० ऑरकाट जिला एन ए

६५ सेठ बनेचन्दजी विजयराजजी भटेवरा न० ४२४ मेन बाजार
मु० वैल्लूर (मद्रास)

६६ जी० रघुनाथमलजी न० ४१९ मेन बाजार मु० वैल्लूर

६७ एन घेवरचन्दजी भटेवरा न० ४११ मेन बाजार मु० वैल्लूर

६८ सेठ नेमीचन्दजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा न० ७६ मेन बाजार
मु० वैल्लूर

६९ सेठ केवलचन्दजी मोहनलालजी भटेवरा नं० ७५ मेन बाजार
मु० वैल्लूर

७० सेठ तेजराजजी पीसूलालजी बोहरा मु० पो० विरंचीपुरम्

७१ सेठ लालचन्दजी मोहनलालजी मु० पो० विरंचीपुरम्

७२ सेठ सोहनराजजी धर्मीचन्दजी मु० पुसरी जिला-चंगलपेठ (मद्रास)

७३ सेठ पुखराजजी भंवरलालजी धूरड मु० रानी पेठ जिला-एन ए.

७४. सेठ केसरीमलजी मिसरीमलजी भाला
मु० वाला जाबाबाद जिला-एन ए.

७५ सेठ केसरीमलजी अमोलकचन्दजी भाला
मु० पीग कांचीपुरम् एस रेल्वे

७६ सेठ मिसरीमलजी भेवरचन्दजी संचेती
मु० छोटी कांजीवरम् जिला-चंगलपेठ

७७ सेठ अमराजजी माणकचन्दजी सिंघवी
मु० वन्दवासी जिला-एन ए.

७८. सेठ सेसमलजी संपतराजजी सकलेचा
मु० उत्तरमलुर जिला चंगलपेठ

७९ सेठ नेमीचन्दजी पारसमलजी भाला मु० चंगलपेठ (मद्रास)

८० सेठ सुपारसमलजी अमरूपमलजी चौरडिया
मु० नेलीकुप्पम् (एस ए.)

८१ सेठ लालमचन्दजी गोलेछा मु० मंजाकुप्पम् (एस ए.)

८२. सेठ पारसमलजी दुगड मु० परंगी पेठ (एस ए.)

८३ सेठ सुगनराजजी रतनचन्दजी मुथा मु० कादवाडी (एस ए.)

८४ सेठ समरथमलजी सुगनचन्दजी ललवानी मु० चंगम (एस ए.)

८५. सेठ अमृतलालजी संपतराजजी दुगड मु० गुडीयातम (एस. ए.)

८६ सेठ बसवंतराजजी चम्पालालजी सिंघवी मु० आम्बुर (एस ए.)

८७ सेठ मिसरीमलजी पारसमलजी मुथा मु० आम्बुर (एन ए.)

८८- सेठ पुकराजजी अनराजजी कटारिया मु० आरकोणम्

८६. सेठ गुलाबचन्दजी कन्हैयालालजी गादिया मु० आरकोणम्

६० सेठ सुजानमलजी बोहरा मु० सीयाली जिला-तन्जावर (मद्रास)

६१ सेठ भोपालसिंहजी पोखरना मु० चिदवरम् (एस. आर रेल्वे)

६२ सेठ मोहनलालजी सुराना न० ४५ बीग स्ट्रीट
मु० कुम्भ कोणम् जिला-तन्जावर

६३ सेठ मोतीलालजी श्री श्रीमाल ठी० बीग स्ट्रीट
मु० कुम्भ कोणम् जिला- तन्जावर

९४ सेठ बीसनलालजी मुकुनचन्दजी कानुगा
मु० पो० मायावरम् जिला- तन्जावर

६५ सेठ जेठमलजी वरडिया मु० मायावरम् जिला-तन्जावर
(एस आर.)

६६ सेठ ताराचन्दजी कोठारी ६/२ जाफरा शाह स्ट्रीट
मु० त्रिचनापल्ली (मद्रास)

६७ सेठ मोतीलालजी श्री श्रीमाल मु० कोलाडम बी (एस रेल्वे)

६८. सेठ गणेशमलजी त्रिलोकचन्दजी मु० कडलूर (एन टी)

६६ सेठ चपालालजी जैन मु० कडलूर (एन. टी)

१०० सेठ मूलचन्दजी पारख मु० तीरची (मद्रास)

१०१, सेठ सलराजजी मोतीलालजी राका न० ५८ एलीफेन्ट गेट
मु० मद्रास

१०२ सेठ जुगराजजी भवरलालजी लोढ़ा नेहरू बाजार मु० मद्रास

१०३ सेठ चम्पालालजी तालेडा धोबी बाजार मु० मद्रास

१०४ सेठ हीरालालजी रीडमचन्दजी पाटणी मु० सेलम्
१०५ सेठ पुखराजजी मंगलचन्दजी गुलेछा मु० तीरुपातुर (एन ए)
१०६ सेठ गम्भीरमलजी मुथा मु मुवनगीरी (वस वे)
१०७ सेठ दीपचन्दजी केशरचन्दजी चोरडिया
मु अलुन्दूर पेठ (वस वे)
१०८ सेठ चम्पालालजी बाबूलालजी लोढा ठी० बाजार रोड
मु० चीक बालापुर
१०९ सेठ कुन्दनमलजी किशनलालजी मु० पेरम्बतुर जिला चगल पेठ
११० सेठ शंकरलालजी भंवरलालजी कांकरिया मु पेरना पठ
(एन० ए०)
१११ सेठ मीकमचन्दजी सुराणा मु ... (एन० ए०)
११२. सेठ शंकरलालजी नाहलीचन्द मु केवि कुप्पम (एन० ए)
११३. एस० पुखराजजी साहूकार मु कुगुवा कुप्पम
जिला चगल पेठ
११४ सेठ हस्तीमलजी साहूकार मु अम्बेरी पाक्कम् (एन० ए०)
११५. सेठ पारसमलजी केवलचन्दजी मु० तिरुमास (जिला चंगल पेठ)
११६. सेठ अमोलकचन्दजी साहूकार मु वालसिरी वाक्कम् (जिला
चंगल पेठ)
११७ सेठ केवलचन्दजी सुराणा मु० श्रीमसी (जिला चंगल पेठ)
११८. सेठ मुगराजजी दुगड मु असवी केरा (मद्रास)
११९ सेठ दीपचन्दजी तिलोकचन्दजी मालू मु० बंगार पैठ
१२ सेठ माणक भंवरलालजी गोलेछा मु० तीरुपातुर (एन० ए)
१२१ सेठ जीवराजजी साहूकार मु० सोलींगर (एन० ए)

१२२ सेठ धनराजजी नगराजजी मु० वामनवाडी (एन० ए०)
१२३ सेठ मानमलजी वसन्तीलालजी मु० तीरूपती पुरम् (एन० ए०)
१२४ सेठ घेवरचन्दजी साहूकार मु० वीक्क ध्रवडो (एन ए)
१२५ सेठ फकीरचन्दजी लूकड़ मु० मनार गुडी, जिला तजावर
१२६ सेठ केसरीमलजी नथमलजी दुगड़ मु० सात बावड़ी (मद्रास)
१२७ सेठ फतेराजजी भवरलालजी नवलखा मु० कोलार
१२८ सेठ ताराचन्दजी कोठारी ६/२ जाफरा शाह स्ट्रीट
मु० त्रिचना पल्ली (मद्रास)
१२९ सेठ सूरजमलजी हीरालालजी बैंकर्स पो० ब० नं० ४
मु० रावर्टशन पेठ के० जी० एफ०
१३० सेठ केसरीमलजी लालचन्दजी वोहरा मार्केट रोड़
मु० रावर्टशन पेठ के० जी० एफ०
१३१ सेठ रघुनाथमलजी जेवन्तरायजी धाड़ीवाल न० १ क्रासरोड
मु० रावर्टशन पेठ के० जी० एफ०
१३२ सेठ जीवराजजी मीठालालजी रुनवाल मु० पलीकुडा
१३३ जे० एम० कोठारी शोभा स्टोर्स मु० अन्डरसन पेठ के जी एफ.

मैसूर प्रान्त

१३४ सेठ पुकराजजी उत्तमचन्दजी जैन कारगुडी मु० वैटफील्ड
(बेंगलोर)
१३५ सेठ माणकचन्दजी पुखराजजी छल्लाणी ठो० अशोकरोड़
मु० मैसुर
१३६ सेठ घोसुलालजी सोहनलालजी सेठिया ठो० अशोकरोड़
मु० मैसुर
१३७ सेठ मागीलालजी लुणावत किस्टाजी मोहल्ला भरमैया चौक
मु० मैसूर

१३८. सेठ मिलापचन्दजी बाहरा मु० मंडिया (मैसूर)

१३९. सेठ पुखराजजी कोठारी मु० रामनगर (मैसूर)

१४० सेठ पन्नालालजी जैन मु चिन्पटन (मैसूर)

१४१ सेठ किशनलालजी फूलचन्दजी सुरिया दीवान सुराप्पा लेन
मु० बैंगलोर सिटी २

१४२. सेठ किसुरचन्दजी कुन्दनमलजी सुराणा ठी० चीकपेठ
मु बैंगलोर सिटी २

१४३ सेठ मिश्रीलालजी पारसमलजी कातरेला ठी मामुल पठ
मु० बैंगलोर सिटी २

१४४ सेठ सिरेमलजी भंवरलालजी मुथा न ४५ रंग स्वामी टेम्पल
स्ट्रीट मु बैंगलोर सिटी २

१४५ सेठ चेतरचन्दजी बसराजजी गुलेच्छा रंगस्वामी टेम्पल स्ट्रीट
मु० बैंगलोर सिटी २

१४६ सेठ मगनलाल चेनराजजी सुरविया ठी० बोम्बे फैन्सी स्टोर्स
चीक पेठ मु० बैंगलोर सिटी २

१४७. सेठ रूपचन्दजी रायमलजी सुरिया ठी मोरचरी बाजार
मु बैंगलोर १

१४८ सेठ गणेशमलजी मानमलजी लोढा ठी धर्पिसरोड
मु० बैंगलोर १

१४९ सेठ मिश्रीमलजी भंवरलालजी बाहरा मारवाडी बाजार
मु० बैंगलोर १

१५० सेठ हीराचन्दजी फतहराजजी कटारिया ठी केवलारीरोड
मु बैंगलोर १

१५१ सेठ मीठालालजी सुराजचन्दजी डागेच सिमैकारोड बैंगलोर १

१५२ सेठ हिम्मतमलजी भवरलालजी बाठिया ६४ तिमैयारोड़
मु० बेंगलर १

१५३ सेठ मगलचन्दजी माडोत ठी० शिवाजी नगर मु० बेंगलोर १

१५४ सेठ छगनमलजी C/o सेठ शम्भूमलजी गगारामजी मुथा
४६ ब्रीगेट रोड़ १. बेंगलोर.

१५५. सेठ चन्दनमलजी सपतराजजी मरलेचा
C/o सेठ हजारीमलजी मुलतानमलजी मरलेचा नं० ३
पुलिया स्ट्रीट शूले बाजार मु० बेंगलोर १

१५६ सेठ हिम्मतराजजी माणकचन्दजी छाजेड़ ठी० अलसूर बाजार
मु० बेंगलोर ८

१५७ पी० जी० धरमराज जैन नं० २ मुदलियार स्ट्रीट अलसूर
बाजार मु० बेंगलोर ८

१५८ सेठ गुलाबचन्दजी भवरलालजी सकलेचा ठी० मलेश्वर
मु० बेंगलोर ३

१५९ सेठ गणेशमलजी मोतीलालजी काठेड़ न० ५ बी० टेनीरीरोड़
मु० बेंगलोर ५

१६० सेठ घीसुलालजी मोहनलालजी छाजेड़ ठी० यशवंतपुर
मु० बेंगलोर

१६१ सेठ हंसराजजी बैलमलजी कटलेरी वाला मु० हिन्दुपुर

१६२ सेठ पोन्नाजी लक्ष्मीचन्दजी मु० अणंतपुर

१६३ सेठ चुन्नीलालजी भूरमलजी मु० धर्मावरम्

१६४. सेठ हजारीमलजी मुलतानमलजी मरलेचा मु० कुप्पल

१६५. सेठ सेहूसमलजी पेमरचन्दजी बागमंत जिला मारवाड़
मु० गजेन्द्रगढ़

१६६ सेठ बदमगजी मुनिचंदजी मुथा कुड़ती जिला रायपुर

१६७ राजेन्द्र क्लोथ स्टोर्स मु गंगावती जिला रायचूर

१६८ सेठ गुलाबचन्दजी ममोहरचन्दजी बागमार
मु० गदक जिला–धारवाड़

१६९. सेठ हजारीमलजी हस्तीमलजी जैन मारकीट मु० बलारी

१७० सेठ मुलतानमलजी अमरचंदजी कानूगा मु गुडकल

१७१ सेठ हीरसमलजी बोथरा C/o सेठ गुलाबचन्दजी बगरालजी
मु० आयोनी

१७२. सेठ जोगमलजी मंगराजजी बोथरा मु सिरपुर
जिला–रायचूर

१७३. सेठ बादरमलजी सूरजमलजी बोथरा मु पावगिरी

१७४ सेठ चुनीलालजी पीरचन्दजी बोहरा मु० रायचूर

१७५ सेठ कस्तुरमजी हस्तीमलजी मूथा गांधी चौक मु० रायचूर

१७६ सेठ आसमचन्दजी मायकचन्दजी ६ राजेन्द्रगज मु रायचूर

आन्ध्र प्रांत

१७७ सेठ बगमलजी गुलाबचन्दजी सुराणा ठी बड़ा बाजार
मु बोलारम

१७८. सेठ समर्थमलजी मांगीलालचन्दजी रांका ठी० पोस्ट मारकीट
मु सिकन्दराबाद

१७९ सेठ लालचन्दजी मोहनलालजी डुंगरवाल ठी० भोईगुड़ा
मु० सिकन्दराबाद

१८० वरजीवन० पी० सेठ ठी० सुलतान बाजार इन्द्रबाग,मु हैदराबाद

१८१ सेठ जशराजजी नेमीचन्दजी लोढा ठी० नूरखा बाजार
मु० हैदराबाद

१८२ सेठ चादमलजी मोतीलालजी वंब ठी. शमशेर गज मु० हैदराबाद

१८३ सेठ मिश्रीमलजी कटारिया उपाश्रय के पास ठी० डबीरपुरा
मु० हैदराबाद

१८४ सेठ उम्मेदमलजी भीखुलालजी वाठिया मु० परभणी

१८५ सेठ मिश्रीमलजी मन्नालालजी हलवाई ठी० वजीराबाद
मु० नादेड़

१८६ सेठ मदनलालजी दवा वेचनेवाला मु० कामारेडी

१८७ सेठ बंशीलालजी भंडारी मु० परतुर तालुका परभणी

१८८ चौधरी सोभागमलजी C/o सेठ विनोदीराम वालचन्द
मु० पो० उमरी (सी० रेल्वे)

१८९ सेठ भनराजजी पन्नालालजी जागड़ा मुथा मु० जालना (सी रेल्वे)

१९० सेठ सहसमलजी जीवराजजी देवड़ा ठी० कसारा बाजार
मु० ओरंगाबाद

मैसुर प्रांत

१९१ सेठ हीराचन्दजी विनेचन्दजी एण्ड क० हीरेपेठ
मु० हुबली (मैसुर)